Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

॥ ओ३म् ॥

स्मारिका

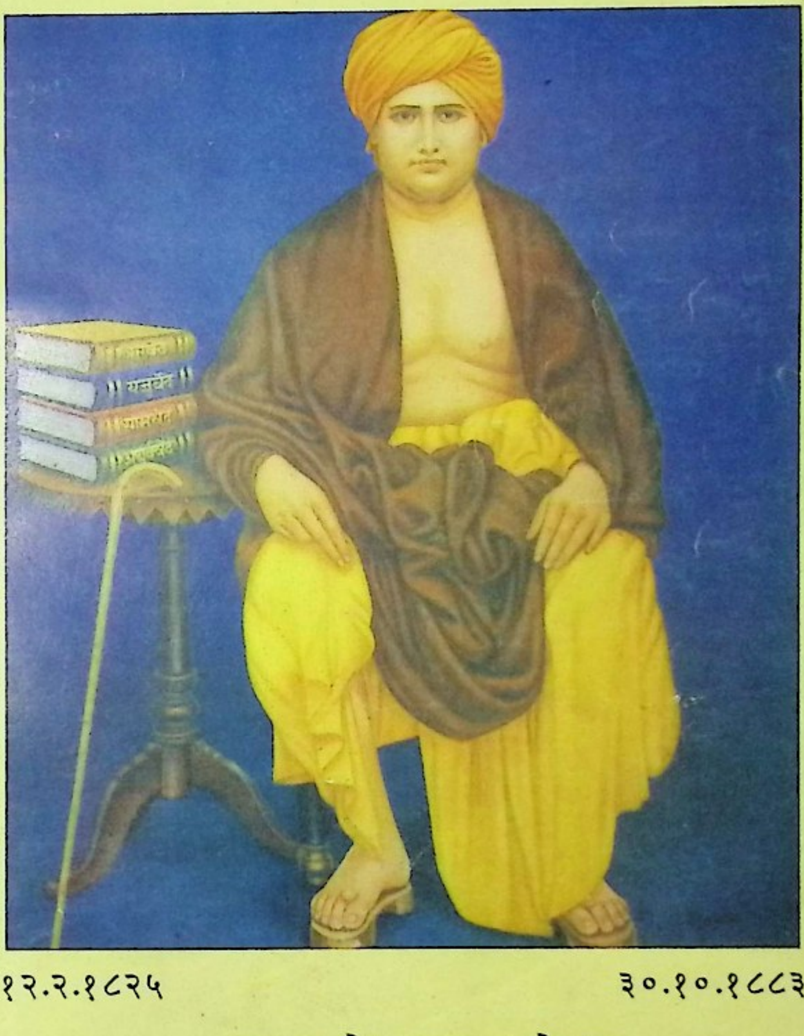

१२.२.१८२५ ३०.१०.१८८३

स्वतन्त्रता के प्रथम उद्घोषक

महर्षि दयानन्द सरस्वती

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

With

Best

Compliments

From

ADARSH MARBLE

Deals In :

MARBLE SLAB, GRANITE, POLISH TILES, KOTA RUFF & POLISH, SAND STONE ETC.

C-5, Sanjay Market, Mangolpur Kalan
Delhi-110085
(Near Jaipur Golden Hospital)

(O) : 7272828, 7275071
(R) : 7433042, 7224957, 7196416

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म्

स्मारिका

रजत-जयन्ती महोत्सव
(२६ अप्रैल ९८ से ३ मई ९८)

प्रधान सम्पादक
डॉ० शिवकुमार शास्त्री
सम्पादक
प्रतापसिंह गुप्त

आर्यसमाज पंखारोड, सी ब्लाक, जनकपुरी
नई दिल्ली-११००५८
दूरभाष : ५५४४४८६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विषय सूची

		पृष्ठ संख्या
१.	प्राक्कथन	३
२.	सन्देश	४
३.	आर्य समाज पंखारोड सी ब्लाक, जनकपुरी : एक परिचय—वैद्य महेन्द्रपाल सिंह आर्य	१६
४.	देशोत्थान के उपाय—पं० शिवकुमार जी शास्त्री	१७
५.	Be a 'Man'—Dr. Swami Satyam	२४
६.	दण्डी स्वामी विरजानन्द जी महाराज—सुश्री सुरभि	२७
७.	देशभक्त दयानन्द—श्री स्वामी विद्यानन्द सरस्वती	२८
८.	राष्ट्रीय एकता और दयानन्द—श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक	३३
९.	निराला ऋषि—डॉ० सत्यव्रत राजेश	३६
१०.	अमरहुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द—डॉ० शिवकुमार शास्त्री	३९
११.	महानता के स्तम्भ : महात्मा हंसराज—श्री अमर स्वामी सरस्वती	४१
१२.	रक्तसाक्षी पं० लेखराम—प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु	४३
१३.	आर्य समाज—श्री रामधारी सिंह दिनकर	४५
१४.	आर्य समाज का दायित्व—पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री	४८
१५.	राष्ट्र निर्माण में आर्य समाज का योगदान—डॉ० शशिप्रभा कुमार	५१
१६.	आर्य समाज की मान्यताएं	५५
१७.	आर्य समाज का महापुरुषों द्वारा मूल्यांकन	५८
१८.	सत्यार्थप्रकाश की प्रासांगिकता—डॉ० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार	६१
१९.	सत्यार्थप्रकाश ने जीवन बदल दिए—श्री अमर स्वामी सरस्वती	६५
२०.	दयानन्द, सिख और आर्य समाज—डॉ० प्रशान्त वेदालंकार	६७
२१.	सच्चे सिख की पहचान	७०
२२.	शिक्षा के दिशानायक दो महारथी—पं० क्षितीश वेदालंकार	७१
२३.	शिक्षा का महत्त्व—श्री स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती	७६
२४.	शराब आदमी को पीती है—सुश्री ममता	७८
२५.	मनु का पश्चात्ताप—डॉ० श्यामसिंह शशि	८०
२६.	वर्ण व्यवस्था, जातिप्रथा और आरक्षण—प्रो० बलराज मधोक	८४
२७.	आर्यों के सोलह संस्कार—श्री ज्ञानेश्वर आर्य	८७
२८.	प्रेरणा स्रोत महर्षि दयानन्द—डॉ० भारतभूषण पुरंग	८९
२९.	कर्मफल टारै नहीं टरै—आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री	९२
३०.	श्रेष्ठता के आठ लक्षण—डॉ० आनन्द सुमन	९४
३१.	भारत भारतीयों का है—श्री भानुप्रताप शुक्ल	९७
३२.	आर्य समाज और उसकी आवश्यकता—वैद्य महेन्द्रपाल सिंह आर्य	१००
३३.	Swami Dayanand Saraswati—B. D. Ukkhal	१०२
३४.	सदस्य सूची	१०४
३५.	एक सांस्कृतिक एवं सामाजिक आर्य संस्था 'संधान' : एक परिचय	११४

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्राक्कथन

विचार विचक्षण पाठकवृन्द! आर्य समाज पंखारोड, सी ब्लाक, जनकपुरी की रजत जयन्ती के अवसर पर आकर्षक एवं संग्रहणीय स्मारिका प्रस्तुत करते हुए मैं हर्ष का अनुभव कर रहा हूं।

मुझे इस बात का गर्व है कि मैं इस विश्वविख्यात आर्यसमाज का संस्थापक सदस्य हूं। इसी के माध्यम से मैं वेद प्रचार मण्डल पश्चिमी दिल्ली, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, विश्वविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी एवं आर्य समाज के विभिन्न संगठनों के गरिमामण्डित पदों पर रह कर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान देने में समर्थ हो सका।

इस स्मारिका को भव्य रूप देने में मेरे आदरणीय भ्राता श्री प्रताप सिंह गुप्त ने जो सहयोग दिया, तदर्थ वे धन्यवाद के पात्र हैं।

जिन लेखकों ने अपने लेख भेजकर, विज्ञापनदाताओं ने विज्ञापन देकर, राजनेताओं ने शुभकामनाएं प्रकट कर और अनुभवी लोगों ने सत्परामर्श द्वारा इस स्मारिका को जो बहुआयामी रूप देने में सहयोग दिया है, मैं उन सबके प्रति आभार व्यक्त करता हूं।

डॉ० शिवकुमार शास्त्री
प्रधान सम्पादक (स्मारिका)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सन्देश

यह हर्ष का विषय है कि आर्य समाज पंखारोड सी-३, जनकपुरी दिल्ली-५८ रजत जयन्ती समारोह की सज्ञा में प्रयत्नशील है। मेरा इस आर्य समाज से पुराना परिचय है। इसमें व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की उन्नति के लिए अनेक कार्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं। उनमें प्रमुख दैनिक, साप्ताहिक सत्संग, संस्कृत भाषा एवं वैदिक दर्शनों का अध्ययन-अध्यापन समय-समय पर चलता रहता है। निःशुल्क चिकित्सा, पुस्तकालय, वाचनालय का प्रबन्ध है। वैदिक विद्वानों की सेवा सम्मान और भोजन आवास का प्रबन्ध, गुरुकुल में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को आर्थिक सहयोग, वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में तन-मन-धन से सहायता, राष्ट्ररक्षा के लिए यथाशक्ति सहयोग देना और दिलाना इत्यादि है।

मेरी यह शुभकामना है कि सभी आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं का स्वास्थ्य उत्तम बना रहे व दीर्घायु हों। विद्या धर्म के क्षेत्र में अधिक समय लगावें, मन, वचन और कर्म से यमनियमों का पालन करें। निष्काम भावना से संसार का उपकार करें।

स्वामी सत्यपति परिव्राजक

श्री प्रतापसिंह गुप्त
सम्पादक (स्मारिका)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सूचना और प्रसारण मन्त्री
नई दिल्ली–११०००१
Minister of
Information & Broadcasting
New Delhi-110001

दिनांक : २१ अप्रैल १९९८

सन्देश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि आर्य समाज पंखा रोड 'सी' ब्लाक, जनकपुरी की रजत जयन्ती मनाई जा रही है। इस अवसर पर समाज की ओर से एक स्मारिका भी प्रकाशित की जा रही है। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी ने समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने का भरसक प्रयास किया। यह हर्ष की बात है कि आर्य समाज मानव जाति में जीवन के नैतिक मूल्यों का प्रचार-प्रसार कर रहा है। मैं इसकी सफलता की कामना करती हूं और मुझे विश्वास है कि स्मारिका जन-सामान्य के लिए सुरुचिपूर्ण और उपयोगी सिद्ध होगी।

सुषमा स्वराज

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

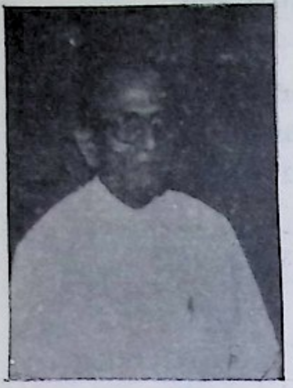

तार : सार्वदेशिक (Sarvadeshik)
फोन : ३२७४७७१, ३२६०९८५
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha
(International Aryan League)
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान
नई दिल्ली–११०००२

दिनांक : २१ अप्रैल १९९८

सन्देश

मान्यवर बन्धु श्री प्रतापसिंह जी,

नमस्ते।

आपका कृपा पत्र मिला, साथ ही यह सूचना भी मिली कि आप अपनी आर्यसमाज सी-३ पार्क जनकपुरी दिल्ली आर्यसमाज की रजत जयन्ती समारोह धूमधाम से मनाने जा रहे हैं।

इसी की शुभप्रेरणा देना चाहता हूँ कि उत्साह ही से ऋषि मिशन में तत्पर रहें और

सत्याः सन्तु यजमानानाम् कामाः

के अनुसार पत्रिका द्वारा समयानुसार शैली पर लेख जनता तक पहुँचेंगे।

आप सभी आर्य जन लगनशील हैं और इसी भावना से कार्य को आगे बढ़ा रहे हैं।

धन्यवाद।

आपका

सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री सभा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

साहिब सिंह
मुख्यमन्त्री

Sahib Singh
Chief Minister

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार
Govt. of National capital Territory of Delhi
पुराना सचिवालय, दिल्ली-११००५४
Old Secretariat, Delhi-110054
Tel. No. 2933161
D. O. No. C. M./98/2315

दिनांक : २० अप्रैल १९९८

सन्देश

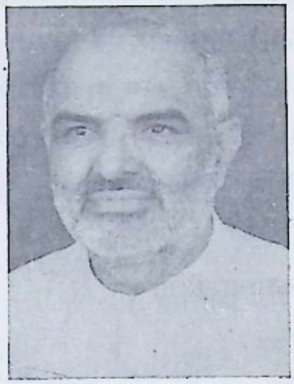

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि आर्य समाज पंखा रोड 'सी' ब्लाक, नई दिल्ली द्वारा रजत जयन्ती के अवसर पर एक स्मारिका प्रकाशित की जा रही है।

आर्य समाज हमारे समाज को स्वच्छ एवं सुन्दर बनाने में निरन्तर प्रयत्नशील रहा है और अनेक सामाजिक बुराइयों को दूर करने में सफल भी हुआ है। आशा है पत्रिका में संस्था की विभिन्न गतिविधियों के ब्यौरे सहित अनेक उपयोगी जानकारियां होंगी जिनसे पाठक निस्संदेह लाभान्वित होंगे।

मैं, इस अवसर पर समस्त आर्य समाज परिवार को अपनी शुभकामनायें प्रेषित करता हूं तथा स्मारिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूं।

साहिब सिंह

श्री प्रतापसिंह गुप्त
सम्पादक (स्मारिका)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रो० जगदीश मुखी
वित्त मन्त्री
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार

सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि आर्य समाज सी-ब्लाक, सी-३, जनकपुरी, नई दिल्ली अपना रजत जयन्ती समारोह एवं यज्ञशाला उद्घाटन २६ अप्रैल, १९९८ को मनाने जा रहा है साथ ही इस शुभ अवसर पर एक स्मारिका का भी प्रकाशन किया जा रहा है। स्मारिका आर्य समाज द्वारा किये सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यों को जन-जन तक पहुंचाने में सहायक होगी, ऐसी मेरी कामना है।

मैं स्मारिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूं।

प्रो० जगदीश मुखी

श्री प्रतापसिंह गुप्त
सम्पादक (स्मारिका)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

डॉ० हर्षवर्धन
Dr. Harshvardhan

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण और शिक्षा मन्त्री
Minister of Health & Family Welfare & Education
पुराना सचिवालय, दिल्ली-११००५४
Old Secretariat, Delhi-110054
Tel. No.
H. E. M./98/4357

दिनांक : २० अप्रैल १९९८

सन्देश

वड़ी प्रसन्नता की बात है कि आर्य समाज, पंखा रोड, जनकपुरी अपनी रजत जयन्ती के अवसर पर एक आकर्षक एवं संग्रहणीय स्मारिका प्रकाशित कर रहा है। आर्य समाज के संस्थापक स्वामी महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस समाज की नींव रखकर यह बहुत पहले सिद्ध कर दिया था कि समाज को सहज रूप से चलाने में हमें विभिन्न आडम्बरों में नहीं पड़ना चाहिए तथा सच्ची मानव सेवा ही परमपिता की प्राप्ति है। हम समाज में उनके द्वारा दिखाए मार्ग का अनुसरण करें तभी हम उनको सच्ची श्रद्धांजलि दे सकेंगे। समाज में सांस्कृतिक मूल्य और समृद्ध हों इसे देखते हुए हम एकजुट होकर कार्य करें तो इस समारोह की सार्थकता और अधिक सफल सिद्ध हो सकती है। मैं इस अवसर पर आर्य समाज के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूं।

डॉ० हर्षवर्धन

श्री प्रतापसिंह गुप्त
सम्पादक (स्मारिका)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

परिवहन मन्त्री
Transport Minister
दिल्ली सरकार
Govt. of Delhi

सन्देश

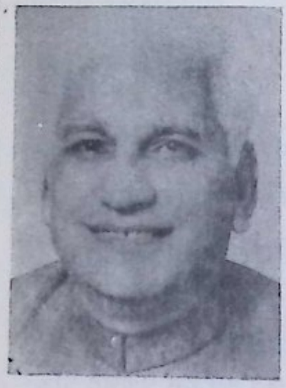

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि आर्य समाज सी ब्लाक, सी-३ पार्क, जनकपुरी, नई दिल्ली दिनांक २६ अप्रैल, १९९८ से ३ मई, १९९८ तक अपने समाज का रजत जयन्ती समारोह एवं यज्ञशाला उद्‌घाटन कार्यक्रम बड़े हर्षोल्लास एवं धूमधाम से मना रहा है तथा इस शुभावसर पर एक आकर्षक एवं संग्रहणीय स्मारिका का प्रकाशन भी कर रहा है। आशा है इस स्मारिका में रोचक, ज्ञानवर्द्धक एवं आर्य समाज के लोगों द्वारा देश को स्वतंत्रता प्राप्ति में किये गये योगदान के बारे में महत्त्वपूर्ण सामग्री प्रकाशित होगी जिससे युवावर्ग अवश्य लाभान्वित होगा।

मैं आर्यसमाज द्वारा किये गये कार्यों की सराहना करता हूं तथा समारोह के सफल आयोजन एवं पत्रिका के सुन्दर प्रकाशन की कामना करता हूं। इस कार्यक्रम से जुड़ा समस्त परिवार साधुवाद का पात्र है।

राजेन्द्र गुप्ता

श्री प्रतापसिंह गुप्त
सम्पादक (स्मारिका)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धार्मिक एवं सामाजिक महासंघ

दिल्ली प्रदेश

सन्देश

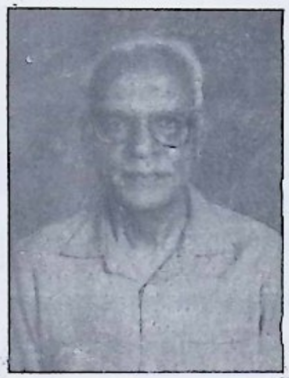

मान्यवर गुप्त जी,

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आर्य समाज सी ब्लाक जनकपुरी रजत जयन्ती पर एक आकर्षक स्मारिका प्रकाशित कर रही है।

गर्व का विषय है कि दिल्ली की धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों में आपकी समाज का महत्त्वपूर्ण योगदान है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि स्मारिका के माध्यम से आपकी उपलब्धियों का अधिक प्रचार-प्रसार होगा जिससे पूरा समाज लाभान्वित होगा।

इस शुभअवसर पर धार्मिक एवं सामाजिक महासंघ के समस्त सदस्यों की ओर से मैं आपको हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं भेंट करता हूं।

राधाकृष्ण ठाकुर
प्रधान

श्री प्रतापसिंह गुप्त
सम्पादक (स्मारिका)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

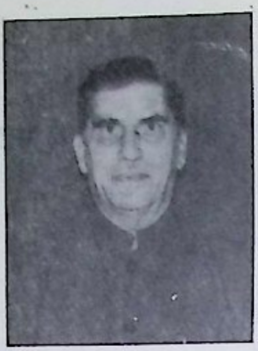

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं०)
१५, हनुमान् रोड
नई दिल्ली-११०००१
दूरभाष : ३३६०१५०, ३३६१२८०

दिनांक २०.४.१९९८

सन्देश

माननीय महोदय,

सादर नमस्ते।

प्रभु कृपा से आप सपरिवार स्वस्थ एवं सानन्द होंगे।

आपके पत्र दिनांक २.४.१९९८ के साथ आपकी आर्यसमाज के २६ अप्रैल १९९८ से ३ मई १९९८ तक आयोजित रजत जयन्ती समारोह एवं यज्ञशाला उद्घाटन समारोह का विस्तृत कार्यक्रम तथा निमन्त्रण प्राप्त हुआ। एतदर्थ हार्दिक धन्यवाद।

आपकी आर्यसमाज दिल्ली की एक समृद्ध तथा उच्च श्रेणी की आर्यसमाज है। आपकी आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता दिन-रात आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार तथा उन्नति में निरन्तर अग्रसर रहते हैं और प्रत्येक क्षेत्र में बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं। आप आर्यसमाज की रजत जयन्ती के अवसर पर एक भव्य आयोजन कर रहे हैं और एक आकर्षक एवं संग्रहणीय स्मारिका का प्रकाशन भी कर रहे हैं, जिसमें पाठकों को आर्यसमाज की गत वर्षों की उपलब्धियों के साथ-साथ लेख तथा रचनाएं पढ़ने को मिलेंगी।

मैं आपकी आर्यसमाज के उत्साही कार्यकर्ताओं को साधुवाद देता हूँ तथा स्मारिका के लिए तथा आयोजन के लिए आपको अपनी शुभकामनाएं देता हूँ।

धन्यवाद सहित

भवदीय

श्री प्रतापसिंह गुप्त
सम्पादक (स्मारिका)

सूर्यदेव
प्रधान

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कमला मल्होत्रा
सदस्य नगर निगम
बी-३/ए २२३, जनकपुरी
नई दिल्ली-११००५८
दूरभाष : ५५९७९५३

सन्देश

"हमारा वैचारिक स्रोत प्रवाहमान होकर कर्म के धरातल को अभिसंचित करता रहे।"

लक्ष्य को दृष्टि में रखते हुए सी ब्लाक आर्य समाज पंखा रोड, जनकपुरी ने अपनी रजत जयन्ती के उपलक्ष्य में एक स्मारिका प्रकाशित करने का निर्णय लिया है। यह जानकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई। आपलोगों के प्रयास से स्मारिका लोकप्रिय और अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सफल हो। प्रभु से मेरी यही प्रार्थना व हार्दिक शुभकामना है कि आप अपने लक्ष्य में आगे बढ़ें।

रजत जयन्ती समारोह पर मेरी हार्दिक शुभकामनायें।

आपकी बहन
कमला मल्होत्रा
निगम पार्षद

श्री प्रधान जी
आर्यसमाज पंखारोड
सी ब्लाक, जनकपुरी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

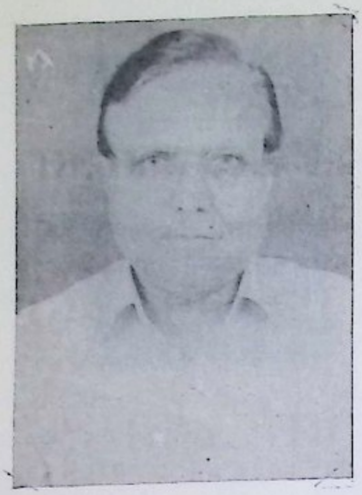

P. R. Sawhney
Councillor, Ward No. 17
Municipal Corporation of Delhi
C-3/337, Jankapuri
New Delhi-110058
Tel. : 5593865

सन्देश

प्रिय गुप्त जी,

यह जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ कि आर्य समाज पंखा रोड 'सी' ब्लाक की रजत जयन्ती पर आप स्मारिका प्रकाशित कर रहे हैं।

हिन्दू धर्म की संरचना में आर्य समाज का बहुत बड़ा योगदान रहा है। 'सी' ब्लाक आर्य समाज विभिन्न सामाजिक कार्यों में संलग्न है एवं धर्म प्रेमियों के लिए एक मंच का कार्य कर रहा है। रजत जयन्ती समारोह २६ अप्रैल से ३ मई तक बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। यह मेरे लिए प्रसन्नता का विषय है।

कार्यक्रम की सफलता एवं स्मारिका प्रकाशन हेतु मेरी शुभकामनाएं।

पृथ्वीराज साहनी
निगम पार्षद्

श्री प्रतापसिंह गुप्त
सम्पादक (स्मारिका)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

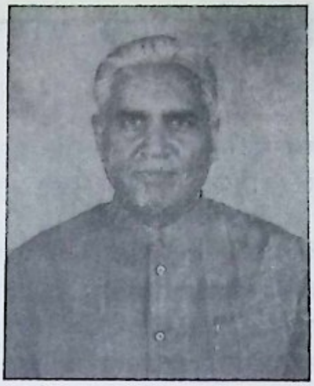

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं०)
१५, हनुमान् रोड
नई दिल्ली-११०००१
दूरभाष : ३३६०१५०, ३३६१२८०

दिनांक १९.४.१९९८

सन्देश

माननीय महोदय,

सादर सप्रेम नमस्ते।

प्रभु कृपा से आप सपरिवार स्वस्थ एवं सानन्द होंगे।

आपका पत्र दिनांक १२.४.९८ को प्राप्त हुआ। धन्यवाद।

आपकी आर्यसमाज का रजत जयन्ती समारोह २६ अप्रैल १९९८ से ३ मई १९९८ तक धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आप एक आकर्षक स्मारिका का प्रकाशन भी कर रहे हैं जिसके लिए मैं आपको तथा आपकी आर्यसमाज के उत्साही कार्यकर्ताओं को साधुवाद देता हूं। स्मारिका के लिए तथा समारोह के लिए अपनी शुभकामनाएं देता हूँ।

धन्यवाद सहित

भवदीय
वेदव्रत शर्मा
महामन्त्री

श्री प्रतापसिंह गुप्त
सम्पादक (स्मारिका)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य समाज पंखारोड, सी ब्लाक, जनकपुरी : एक परिचय

❑ वैद्य महेन्द्रपाल सिंह आर्य

युग प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने प्राणिमात्र के कल्याण के लिए सन् १८७५ में मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की थी। यद्यपि आर्य समाजों की स्थापना का वितान स्वामी जी महाराज के जीवनकाल में ही फैलना प्रारम्भ हो गया था, परन्तु दिल्ली में उस समय केवल मात्र एक ही आर्य समाज था। महर्षि दयानन्द जी महाराज पर सन् १८७६ से १८७८ के बीच तीन बार पधार थे। कालान्तर में दिल्ली आर्य समाज की गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र बन गई। इस समय दिल्ली प्रदेश में गुरुकुलों एवं डी० ए० वी० पब्लिक स्कूलों में स्थापित आर्य समाजों के अतिरिक्त लगभग २७० आर्य समाजें महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों को जन-जन तक पहुंचाने में सक्रिय हैं। उसी श्रृंखला में एक नाम है—**आर्य समाज पंखारोड सी ब्लाक जनकपुरी।**

इस आर्य समाज की स्थापना १९ जनवरी १९७३ को सी २ सी, पाकेट १२ के पार्क में आर्य विद्वान् पं० सत्यपाल शर्मा वेद शिरोमणी की अध्यक्षता में हुई। इसके प्रारम्भिक पदाधिकारी थे—

प्रधान—श्री हरगोविन्द कपूर

उपप्रधान—श्री शिवकुमार शास्त्री

मन्त्री—श्री महेन्द्रपाल सिंह आर्य

उपमन्त्री—श्री चन्द्रदत्त उक्खल

कोपाध्यक्ष—श्री जगदीश मित्र

प्रारम्भिक वर्षों में इस आर्य समाज के माध्यम से वेद प्रचार का कार्य पारिवारिक सत्संगों के रूप में चलता रहा। तत्पश्चात् दिल्ली विकास प्राधिकरण द्वारा भूमि आवंटित होने पर वर्तमान स्थान पर शैड्स का निर्माण कर आर्य समाज की गतिविधियों का प्रचार-प्रसार होता रहा।

कर्मठ कार्यकर्ताओं के अथक प्रयास से आज इस आर्य समाज का विशाल भव्य भवन एवं आकर्षक गगनचुम्बी यज्ञशाला है। रविवारीय सत्संग के अतिरिक्त स्त्री आर्य समाज का साप्ताहिक सत्संग प्रत्येक बुधवार को आयोजित किया जाता है। डॉ० बालकृष्ण अकिंचन की स्मृति में स्थापित यहां का वैदिक पुस्तकालय स्वाध्यायशील व्यक्तियों के लिए एक वरदान है। आयुर्वेदिक एवं होम्योपैथिक औषाधालय पिछले कई वर्षों से सर्वे सन्तु निरामया का दायित्व निभा रहे हैं। वैवाहिक सेवा के द्वारा अनेक सद्गृहस्थों का निर्माण हो चुका है। संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार में डॉ० भारतभूषण विद्यालंकार के निर्देशन में यह आर्य समाज अग्रगण्य है। पूज्य स्वामी सत्यपति जी के पथप्रदर्शन में दर्शनशास्त्र का अध्ययन-अध्यापन इस आर्य समाज की अपनी विशेषता है।

जन-जन में स्वाध्याय की प्रवृत्ति को जगाने के लिए यहां प्रतिवर्ष वेद प्रचार सप्ताह के अवसर पर वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर वितरित किया जाता है। पंजाबी एवं काश्मीरी विस्थापितों तथा गुरुकुलों के विद्यार्थियों को सहायता देने में इस आर्य समाज के उदारमना सदस्य सर्वदा अग्रणी रहते हैं।

हमें इस बात का गर्व है कि सदस्यों की संख्या की दृष्टि से यह आर्य समाज दिल्ली में ही नहीं पूरे विश्व के आर्य समाजों में अपना प्रमुख स्थान रखता है। इस आर्य समाज के सदस्य आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के गरिमामण्डित पदों पर आसीन हैं। हमारे विद्वान् धर्माचार्य, डाक्टर प्रणव शास्त्री एम. ए., पी.एच.डी. लब्धप्रतिष्ठित विद्वान् हैं।

गत पच्चीस वर्षों में इस आर्य समाज ने जो ख्याति अर्जित की है वह यहां के कर्मठ अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं की योग्यता का ज्वलन्त उदाहरण है। रजत जयन्ती के शुभअवसर पर इस आर्य समाज की नींव के पत्थर दिवंगत आत्माओं के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए मैं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि हमें इतनी योग्यता और क्षमता प्रदान करें जिससे हम देव दयानन्द के स्वप्नों को सार्थक सिद्ध करने में समर्थ हो सकें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देशोत्थान के उपाय

□ श्री शिवकुमार शास्त्री

श्रमेण तपसा सृष्टा ब्रह्मणा वित्त ऋते श्रिताः॥

अथर्व० १२/५/१

इस मन्त्र में किसी भी देश के मानव-समाज की वास्तविक उन्नति तथा सुख-शान्ति की प्राप्ति का महत्त्वपूर्ण उपदेश दिया गया है। मन्त्र में पहली बात कही गई है कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति को परिश्रमी होना चाहिए। जिस देश के लोग उद्यम और परिश्रम से कतराएं, वह देश सदा दरिद्र और पिछड़ा रहेगा। दुर्भाग्य से हमारे देश में भी यह दुर्गुण वास्तविक शिक्षा के अभाव से तथा लम्बी दासता के कारण समाज में घर कर गया है। प्रायः प्रत्येक व्यक्ति काम से बचना चाहता है। पढ़ाई-लिखाई का उद्देश्य भी यही समझा जाता है कि इसके सहारे, बिना परिश्रम के अथवा कम श्रम करके अधिक धन कमाया जा सकता है और उस धन से विपुल उपभोग की सामग्री जुटाई जा सकती है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् होना यह चाहिए था कि राष्ट्र का प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता और शक्ति के अनुसार राष्ट्र-निर्माण में जुट जाता, किन्तु यहां स्वतन्त्रता का अर्थ यह लिया गया कि अब हमें कुछ करने-धरने की आवश्यकता नहीं। अब तो सर्वत्र केवल अधिकार-प्राप्ति की धुन है। जितने छोटे और बड़े सरकारी उद्योग-धन्धे हैं, सब-के-सब करोड़ों के घाटे में हैं। पहले तो श्रमिक-वर्ग काम नहीं करता, फिर ऊपर के अफसर उस उत्पादन से भी हेराफेरी करके जेबें भरते हैं। कोई यह विचार करने को उद्यत नहीं है कि अन्ततः इस राष्ट्र का बनेगा क्या?

प्रत्येक वर्ग वेतन और भत्ता बढ़ाने की मांग किये जा रहा है, जबकि देश में करोड़ों व्यक्ति ऐसे हैं जिन्हें दो समय का भरपेट भोजन भी उपलब्ध नहीं है।

हमें इस मनोवृत्ति को बदलना होगा। आज प्रत्येक राष्ट्रवासी को सोचना चाहिये कि अपनी आवश्यकता पूर्ति के बदले में देश को मैं यदि कुछ देता नहीं हूं तो देश पर भार हूं और बिना कुछ प्रत्युपकार किये मुझे रोटी खाने और कपड़े पहनने का भी कोई अधिकार नहीं है।

भगवान् ने मनुष्य को बुद्धि दी है, ताकि वह अपनी कठिनाइयों को समझकर उन्हें दूर करने का उपाय सोचे। उसे हाथ और समर्थ शरीर इसलिए दिया है कि विचारी हुई बात को परिश्रम करके सफल बनाये। इस सम्बन्ध में वेद की महत्त्वपूर्ण शिक्षा है। यजुर्वेद के ४०वें अध्याय के दूसरे मन्त्र में परामर्श है कि **"कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतꣳसमाः"** अर्थात् 'मनुष्य कर्म करता हुआ ही सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करे।' अथर्ववेद में उपदेश है—**"कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः"** यदि पुरुषार्थ मेरे दाएं हाथ में है तो सफलता मेरे बाएं हाथ का खेल है।

यो जागार तमृचः कामयन्ते यो जागार तमु सामानि यन्ति।
यो जागार तमयं सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः॥

ऋ० ५/४४/१४

'जो जागते रहते हैं अर्थात् परिश्रम करते हैं, उन्हें ही ऋचाएं चाहती हैं। जो परिश्रम करते हैं, उन्हीं के पास साम पहुंचते हैं अर्थात् उनका ही सामवेद पढ़ना सार्थक है। जो उद्योगपरायण हैं, प्रभु उन्हीं का मित्र है।' ऋग्वेद ४/३३/११ में कहा है **"न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवाः"** —जो श्रम से थककर चूर नहीं हो जाते, देव उनके मित्र नहीं बनते। ऐतरेय ब्राह्मण ७/१५ में बहुत सुन्दर विवेचन किया गया है—

नाना श्रान्ताय श्रीरस्ति, पापो नृषद्वरो जनः।
इन्द्र इच्चरतः सखा। चरैवेति चरैवेति॥

जो पूरी शक्ति से परिश्रम नहीं करते, उन्हें लक्ष्मी नहीं मिलती। आलसी मनुष्य पापी होता है, भगवान् श्रम करने वालों का मित्र बनता है। इसलिए श्रम करो, श्रम करो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पुष्पिण्यौ चरतो जङ्घे, भूष्णुरात्मा फले ग्रहिः।
शरंते अस्य पाप्मानः श्रमेण प्रपथे हताः॥
चरैवेति ....

चलने वालों की जंघाएं सशक्त होती हैं। जो सफलता मिलने तक काम में जुटे रहते हैं, उनकी आत्मा प्रतिभा-सम्पन्न होती है। परिश्रमी मनुष्य की समस्त त्रुटियां मार्ग में स्वतः समाप्त हो जाती हैं। इसलिए श्रम करो, श्रम करो।

आस्ते भग आसीनस्योर्ध्वस्तिष्ठति तिष्ठतः।
शेते निपद्यमानस्य चरति चरतो भगः॥
चरैवेति ....

बैठने वाले का भाग्य भी बैठ जाता है, और जो खड़ा हो जाता है उसका भाग्य भी खड़ा हो जाता है। जो सो जाते हैं उनका भाग्य भी सो जाता है, और जो चलने लगते हैं उनका भाग्य भी चलने लगता है। इसलिए सदा परिश्रम करते रहो।

कलिः शयानो भवति, संजिहानस्तु द्वापरः।
उत्तिष्ठंस्त्रेता भवति कृतं सम्पद्यते चरन्॥
चरैवेति ...

सोने वालों के लिए सदा ही कलियुग है। जिन्होंने श्रम करने का विचार कर लिया, उनके लिए द्वापर प्रारम्भ हो गया। जो करने के लिए खड़े हो गए उनके लिए त्रेता आ गया और जिन्होंने काम करना प्रारम्भ कर दिया उनके लिए सतयुग आ गया। अतः श्रम करो, श्रम करो।

चरन् वै मधु विन्दति चरन् स्वादुमुदम्वरम्
सूर्यस्य पश्य श्रेमाणं यो न तन्द्रयते चरन्॥
चरैवेति ...

श्रम से ही मधु प्राप्त होता है। परिश्रम से ही मधुर फल मिलते हैं। जो कभी चलने में आलस्य नहीं करता, उस सूर्य के तेज को देखो। अर्थात् सूर्य की गरिमा (तेजस्विता) उनकी निरन्तर गति के कारण ही है। इसलिए श्रम करो, श्रम करो।

आश्चर्य होता है जिस समाज में पुरुषार्थ के इतनी प्रेरणाप्रद विचार-सम्पत्ति हो, उसमें ये कर्महीन के जघन्य विचार कैसे उत्पन्न हो गए? यहां अन्धकार एक ऐसा समय आया जब समाज का बहुत बड़ा दैव और भाग्य को ही सब कुछ मानने लगा। ऐसे म और सन्त हुए जो समाज को निष्क्रियता का उप करते रहे—

अजगर करै न चाकरी, पंछी करै न काम।
दास मलूका कह गये, सबके दाता राम।
अनहोनी होनी नहीं, होनी होय सो होय॥

इन विचारों ने देश की बहुत बड़ी हानि समाज में भाग्यवाद इतना प्रबल हो गया कि परिश्रम और पुरुषार्थ की ओर से उदासीन हो गए **"भाग्यं फलति सर्वत्र न विद्या न च पौरुषम्"**—वि और पुरुषार्थ बेकार हैं, जो भाग्य में लिखा है वही हो है।

शास्त्रीय दृष्टि से विवेचन किया जाय तो स्थि यह है कि कर्म तीन प्रकार के होते हैं—**क्रियमाण, सञ्चि और प्रारब्ध।** वर्तमान में जो काम किया जा रहा है, व 'क्रियमाण' कर्म हुआ, जैसे किसान खेत में बीज बो है। बुवाई समाप्त होने के साथ क्रियमाण की अवधि समाप्त हो गई। आगे बोया हुआ बीज अंकुरित हो फल पकने तक जिस स्थिति में रहता है, उस सब नाम 'सञ्चित' है। सञ्चित का शब्दार्थ है—जमा। कर्म किया था, वह अभी जमा है, परिणाम देने स्थिति में नहीं आया। इसके पश्चात् की अवस्था, किसान पकी हुई फसल काटकर दाने निकालकर घर आता है, उसका नाम है 'प्रारब्ध'। प्रारब्ध का शब्दार्थ जो कर्म किया था उसका फल मिलना प्रारम्भ हो गया अर्थात् किया हुआ कर्म जब फल देने की स्थिति पहुंचता है, उसी का नाम प्रारब्ध, दैव या भाग्य है। स्पष्ट है कि हम जैसा कर्म करेंगे, वैसा भाग्य बनेगा यदि कुछ नहीं करेंगे तो कुछ नहीं बनेगा। अतः वेद पुरुषार्थ को ही मुख्यता दी है।

वर्तमान युग के महान् विचारक महर्षि दयान

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपनी मान्यताओं के दर्पण 'सत्यार्थप्रकाश' के 'स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश' के २५वें नम्बर पर पुरुषार्थ की महत्ता निम्न शब्दों में व्यक्त की है—

"पुरुषार्थ प्रारब्ध से बड़ा इसलिए है कि जिससे संचित प्रारब्ध बनते हैं, जिसके सुधरने से सब सुधरते और जिसके बिगड़ने से सब बिगड़ते हैं, इसी से प्रारब्ध की अपेक्षा पुरुषार्थ बड़ा है।"

गोस्वामी तुलसीदास ने लंका पर आक्रमण के समय जब राम समुद्र को देखकर दैव और भाग्य की बात करने लगे तो लक्ष्मण द्वारा पुरुषार्थ के विषय में प्रेरक शब्द कहलवाए हैं। लक्ष्मण ने कहा—

मारहु बाण सिन्धु करि सोषा।
नाथ दैव करि कौन भरोसा।
दैव दैव आलसी पुकारा।
पुरुषारथ कर्त्तव्य हमारा॥

प्रारब्ध की अविचारित मान्यता के कारण ही फलित ज्योतिष का चक्र घूमा। इस भ्रान्ति ने भारत को बहुत बड़ी हानि पहुंचाई है। बख्तियार खिलजी केवल ७० पठानों को लेकर बिहार प्रान्त का शासक बनकर बैठ गया। शत्रु के आक्रमण के समय भी जीत और हार के लिए मुहूर्त्त दिखवाते फिरना कितनी बड़ी मूर्खता का द्योतक है। राजनीति के महान् विद्वान् आचार्य चाणक्य ने कौटिलीय अर्थशास्त्र में लिखा है—

नक्षत्रमति पृच्छन्तं बालमर्थोऽति वर्तते।
अर्थो ह्यर्थस्य नक्षत्रं किं करिष्यन्ति तारकाः॥

'काम के समय नक्षत्र और मुहूर्त छंटवाने वाले बालक हैं, ऐसे अबोधों को सफलता नहीं मिलती। जो काम जिन उपायों से बन सकता है, उनका अवलम्बन करना चाहिए। उस काम में ये आकाश के तारे क्या बनाएंगे तथा बिगाड़ेंगे? किसी शायर ने भी अच्छा कहा है—

अहले-हिम्मते मंजिले मकसूद तक आ ही गए।
बन्द-ए-तकदीर किस्मत का गिला करते रहे॥

इसके अतिरिक्त उपयुक्त शिक्षा के अभाव में समाज की दूषित रूढ़ियों ने भी श्रम की भावना को बड़ी हानि पहुंचाई है। हमारे सामाजिक ढर्रे में कुछ काम छोटे और अपमानजनक समझे जाते हैं और कुछ काम गौरवास्पद। प्रायः लकड़ी या चमड़े की दस्तकारी, कपड़े की बुनाई, सिलाई और धुलाई एवं स्थापत्यकला के काम, ये सभी समाज में हीन दृष्टि से देखे जाते हैं। परिणाम यह है कि चार अक्षर पढ़ने के बाद एक युवक अपनी परम्परा से चले आ रहे इन उद्योग-धन्धों में रुचि न लेकर छोटी-मोटी नौकरी खोजता फिरता है। इससे दुहरी राष्ट्रीय क्षति हो रही है। एक तो राष्ट्र के उत्पादन में कमी आती है, दूसरे राष्ट्र में बेकारों की संख्या बढ़ती चली जाती है।

अतः आवश्यक है कि सामाजिक वायुमण्डल और शिक्षा के माध्यम से भी इस प्रकार के विचार उभारे जायें कि श्रम का कोई काम छोटा और हीन नहीं है। हीनता का काम तो धोखा और छलछिद्र से पैसा कमाना है, या निकम्मे रहकर राष्ट्र पर बोझ बनना है। श्रमिक व्यक्तियों का समाज में आदर और सम्मान बढ़ाना चाहिए ताकि उस ओर प्रवृत्त होने के लिए युवकों में उत्साह हो।

अतः राष्ट्र को सुखी और समृद्ध बनाने के लिए वेद का पहला परामर्श है कि राष्ट्र में श्रम की प्रतिष्ठा होनी चाहिए।

मन्त्र की दूसरी बात है—राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति को तपस्वी होना चाहिए। 'तप' शब्द भी हमारे साहित्य और व्यावहारिक जीवन में अति प्रचलित है। शास्त्रों में भिन्न-भिन्न स्थानों पर तप की भिन्न-भिन्न परिभाषाएं भी की गई हैं। किन्तु तप का मूलगत भाव है—**'द्वन्द्वसहिष्णुत्व'** सुख-दुःख, भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी, हानि-लाभ, अनुकूलता-प्रतिकूलता आदि इस प्रकार के जितने भी 'द्वन्द्व' अर्थात् जोड़े बनते हैं, उनमें विचलित न होकर कर्त्तव्य कर्म करते चले जाना तप है। इस तप का आध्यात्मिक और लौकिक दोनों प्रकार से महत्त्व है। आध्यात्मिक क्षेत्र में इस द्वन्द्व सहन से मन की शुद्धि होती है और व्यावहारिक जगत् में इस तप से कर्मठता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की भावना बद्धमूल होकर लोक कल्याण का प्रसाधन बनती है। अतः शास्त्रवर्णित उन अनेक तप के भावों में से मैं अपने प्रतिपाद्य विषय के अनुकूल तप के दो भावों को चुनता हूं —प्रथम महाभारत में युधिष्ठिर के द्वारा दिये गए यक्ष के उत्तर को; और द्वितीय आचार्य चाणक्य द्वारा अपने सूत्र में वर्णित परिभाषा को।

महाभारत के कथानक में यक्ष और युधिष्ठिर संवाद अति प्रसिद्ध है। यक्ष ने एक लम्बी प्रश्नावलि युधिष्ठिर से पूछी है और युधिष्ठिर ने उसके उत्तर दिये हैं। यक्ष के उन प्रश्नों में एक प्रश्न है—"**तपः किं लक्षणं प्रोक्तम्**"—तप का क्या लक्षण है? युधिष्ठिर ने इसका उत्तर दिया है—**तपः स्वकर्म-वर्तित्वम्**' अपने कर्त्तव्य का पालन करना ही तप है। किन्तु इस लक्षण की पूर्ति अथवा पुष्टि तबतक नहीं हो सकती, जबतक कि आचार्य चाणक्य का सूत्र इसके साथ न जुड़े। आचार्य चाणक्य ने लिखा है—'**तपः सार इन्द्रियनिग्रहः**' तपस्या का सार जितेन्द्रियता है। जो जितेन्द्रिय नहीं है, वह सिर और धड़ की बाजी लगाकर कर्त्तव्य-पथ पर अग्रसर नहीं हो सकता। उसे संसार के भोगों के प्रलोभन कर्त्तव्य-विमुख कर देंगे और इसी प्रकार मार्ग में आया हुआ संकट भी उसे पथभ्रष्ट कर देगा। बात का धनी तो मर्यादा पुरुषोत्तम राम की तरह कोई तपस्वी ही बेखटके उत्तर दे सकता है। राम ने कहा था—

लक्ष्मीश्चन्द्रादपेयाद्वा हिमवान् वा हिमं त्यजेत्।
अतीयात् सागरो वेलान्न प्रतिज्ञामहं पितुः॥

'चाहे चांदनी चन्द्रमा से पृथक् हो जाय, चाहे हिमालय हिम का परित्याग कर दे, चाहे समुद्र अपने किनारों को लांघ जावे, किन्तु मैं अपने पिता की प्रतिज्ञा से विमुख नहीं हो सकता।' पण्डितराज जगन्नाथ की अन्योक्ति में मूसल की मार की परवाह किये बिना धानों के समान हंसकर कोई जितेन्द्रिय ही उत्तर दे सकता है। मूसलों की चोट खाकर हंसते हुए धानों ने कहा—

अस्मानवेहि कलमानलमाहतानां
येषां प्रचण्डमुसलैरवदातवैव।
स्नेहं विमुच्य सहसा खलताम्प्रयान्ति
ये स्वल्पपीडनवशान्न वयं तिलास्ते॥

'हमपर जितने प्रहार होते जावेंगे, हमारी स
उतनी ही निखरती जाएगी। जो थोड़े से पीड़ने से
स्नेह (तेल) छोड़कर खल (दुष्ट) बन जावें, वे तिल
नहीं हैं।' यहां स्नेह और खल शब्दों में श्लेष हैं। स्नेह
अर्थ प्रेम और तेल दोनों होते हैं। तिल थोड़े से पी
पर तेल छोड़कर खली बन जाते हैं और दुष्टजन (ख
प्रेम छोड़कर दुष्टता (खलता) पर उतारू हो जाते है

जिस राष्ट्र के नागरिक बड़ी से बड़ी विपत्ति अ
पर कर्त्तव्यविमुख न हों, राष्ट्रीय उन्नति के आधार वे
माने जाएंगे। विवेकी और विचारशील व्यक्ति की य
पहचान नीति निपुण विदुर जी ने बताई है—

यस्य कार्यन्न विघ्नन्ति शीतमुष्णं भयं रतिः।
समृद्धिरसमृद्धिर्वा स वै पण्डित उच्यते॥

'सर्दी-गर्मी, डर और प्रेम तथा सधनता अ
निर्धनता जिस कर्मयोगी के मार्ग में बाधा उपस्थित न
करते, वही पण्डित और विवेकी है।'

टाड के लिखे राजस्थान के इतिहास में आप
दर्जनों ऐसे उदाहरण मिल जाएंगे, जिनमें यह वर्णित
कि अनेक वीर मातृभूमि पर शत्रु का आक्रमण होने
विवाह की वेदी से उठकर सीधे रणभूमि में जा धम
ठीक इसी प्रकार की सरदार चूड़ावत और हाड़ी रा
की घटना तो प्रसिद्ध ही है।

छोटी सी रियासत रूपनगर के शासक
बादशाह औरंगजेब का फर्मान मिला कि अमुक ति
तक अपनी बेटी को दिल्ली के शाही महल में बेगमों
सेवा के लिए भेज दो, नहीं तो मैं आक्रमण करके रिया
को धूल में मिला दूंगा। राजा इस हुक्म से घबरा ग
और अपनी पुत्री को दिल्ली जाने की प्रेरणा करने लग
क्षत्रियकुमारी यह सुनकर आग बबूला हो उठी। अप
पिता की भर्त्सना करते हुए उसने कहा कि वहां जाने
अपेक्षा उसे मरना स्वीकार है।

पिता को यह उत्तर देकर, चंचलकुमारी
महाराणा राजसिंह को यह लिखा—"आपकी वीरता औ
धर्मपरायणता को देखकर मैंने हृदय में आपको पति
रूप में वरा है। मेरे स्वाभिमान को कुचलने के लि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बादशाह औरंगजेब ने मेरे पिता को हुक्म दिया है कि मेरा डोला अमुक दिन तक शाही महल में पहुंचा दो, अन्यथा रूपनगर पर आक्रमण करके रियासत को नष्ट-भ्रष्ट कर देगा और मुझे दिल्ली ले जावेगा। मेरे पिता भयभीत हैं, मुझे उनसे यह आशा नहीं कि वे मेरी रक्षा के लिए अपने विनाश की चुनौती स्वीकार करेंगे। अतः मेरी रक्षा का दायित्व अब आपके ऊपर है। आप जैसे भी हो, नियत दिन से पूर्व रूपनगर आकर मेरे साथ विवाह करके मुझे मेवाड़ ले जाइये, नहीं तो मैं बादशाह के चंगुल से बच न सकूंगी। यदि ऐसा हुआ तो रूपनगर के राजा की बेटी नहीं, महाराणा राजसिंह की पत्नी दिल्ली जाएगी।" यह पत्र अपने विश्वस्त पुरोहित के हाथ महाराणा को भेज दिया।

पुरोहित पत्र लेकर ऐसे समय पहुंचा जब महाराणा का दरबार लगा हुआ था। पुरोहित राणा का अभिवादन करके और पत्र को आगे रखकर एक ओर बैठ गया। महाराणा ने पत्र खोलकर पढ़ा तो चिन्तामग्न होकर चुप बैठ गए। महाराणा के राजपुरोहित ने यह स्थिति देखकर राणा से पूछा—"पत्र में क्या है जिसने आपको चिन्तिंत बना दिया है?" राणा ने पत्र को पुरोहितजी को देते हुए कहा कि आप पढ़कर दरबार को सुना दीजिये।

पुरोहितजी ने पत्र पढ़कर दरबार को सुनाया और आवेशपूर्ण मुद्रा में राणा की ओर देखते हुए कहा—"इसमें सोचने की कौन सी बात है? क्या अपनी पत्नी की रक्षा का साहस भी महाराणा में नहीं रहा?" पुरोहित की फटकार सुनकर झेंप मिटाते हुए महाराणा ने उत्तर दिया—"नहीं, रक्षा तो अवश्य की जाएगी, सोचने की बात केवल अल्प समय में कार्य सम्पादन की है। कैसे इतनी शीघ्रता हो, यही बात विचारणीय है।" यह कहकर महाराणा ने पान का एक बीड़ा और तलवार दरबार के बीच में रखवाकर अपने सामन्तों को सम्बोधित करते हुए कहा—"जिस वीर में यह साहस हो कि वह दिल्ली से रूपनगर पर आक्रमण करने वाले शाही लश्कर को मार्ग में तब तक रोके रखेगा, जब तक कि मैं राजकुमारी से विवाह करके चित्तौड़ न पहुंच जाऊं, वह इस बीड़े को उठा ले।"

दरबार में सन्नाटा छा गया और सभी वीर एक-दूसरे का मुंह ताकने लगे। थोड़ी देर राणा ने इस स्थिति को देखकर वीरशिरोमणि नवयुवक सरदार चूड़ावत की ओर देखा और कहा—"सरदार चूड़ावत! इस कठिन काम को पूरा करने की आशा तुमसे की जा सकती है।" चूड़ावत ने यह सुनते ही उठकर बीड़ा चबा लिया और तलवार को हाथ में लकर चूम लिया। दरबार सरदार के जयघोष से गूंज उठा। महाराणा का अभिवादन करके और फौज को कूच के लिए तैयारी का आदेश देकर चूड़ावत अपने महल में अपनी नवोढ़ा पत्नी से विदाई लेने गया। महल में पत्नी को देखते ही नवयुवक सरदार को भविष्य की चिन्ता ने घेर लिया। विवाह के बाद अभी सरदार के हाथ का कंगन भी नहीं खुला था। रानी हाड़ी के हाथ में विवाह के अवसर पर लगाई गई हल्दी का पीलापन भी अभी विद्यमान था। सरदार के मन में पत्नी के भावी जीवन की चिन्ता बिजली की तरह कौंध गई। विचार आया कि इस मोर्चे से मेरा वापस आना कठिन है... फिर यह किशोरी जिसने संसार का कुछ भी नहीं देखा, मेरे पश्चात् कैसे अपना जीवन काटेगी? चिन्ता की अग्नि से सरदार का चेहरा मुर्झा गया।

रानी हाड़ी पति के स्वागत के लिए खड़ी हुई, किन्तु पति की इस अवस्था को देखकर व्याकुलता से पूछने लगी, "आप बाहर से प्रसन्नवदन आ रहे थे, मुझे देखकर उदास क्यों हो गए?" रानी की बात सुनकर सरदार ने दरबार की सारी घटना और युद्धभूमि के लिए अपने प्रस्थान की बात बताई।

हाड़ी सब सुनकर और प्रसन्न होकर बोली—"वीरों की भूमि मेवाड़ में मैं अपने पति की वीरता की इस धाक को जानकर कृतकृत्य हो गई कि इस कठिन मोर्चे को फतह करने के लिए सबकी आशाओं के केन्द्र मेरे पतिदेव हैं। मगर मैं आपकी उदासी का कारण नहीं समझ पाई?" इसे सुनकर सरदार ने अपनी चिन्ता का कारण बताया। रानी ने सरदार को उत्साहित करते हुए कहा कि "आप मेरी ओर से निश्चिन्त होकर जाइये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आप अपने कर्त्तव्य को जानते हैं तो आपकी अर्धाङ्गिनी भी अपने कर्त्तव्य से अनभिज्ञ नहीं है। मैं किसी भी प्रकार से आपके नाम पर बट्टा न लगने दूंगी।"

सरदार को रानी ने सांत्वना देकर प्रसन्नता से विदा किया। सरदार की सेना जब प्रस्थान करने लगी तो मन में रानी हाड़ी का ध्यान पुनः उभरकर क्षुब्ध करने लगा। इसी हड़बड़ी में सरदार ने एक सैनिक को अपने महल में हाड़ी के पास सन्देश देकर भेजा—मैं जा रहा हूं, मुझे विश्वास है कि दिये हुए वचनों पर तुम अडिग रहोगी।"

इस सन्देश से रानी को ठेस लगी और सोचने लगी कि मेरी चिन्ता के कारण मेरे पति पूरे मनोयोग से अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं कर सकेंगे, अतः मुझे उनको अपनी ओर से निश्चिन्त कर देना चाहिए। वह सैनिक को ठहरने के लिए कहकर अन्दर से एक थाल और रूमाल ले आई और सैनिक से कहा—"मैं अपना शीश पति को भेंट कर रही हूं। तुम इसे थाल में रूमाल से ढककर ले जाना और मेरी ओर से कहना कि आपको अपनी चिन्ता से मुक्त करने के लिए मैं प्रथम अपने कर्त्तव्य का पालन कर रही हूं, ताकि महाराणा द्वारा सौंपे गये अपने दायित्व को आप भली प्रकार निभा सकें।"

सैनिक इस दृश्य से स्तब्ध रह गया। उसने रानी का शिर थाल में रखकर सरदार को देते हुए हाड़ी रानी के वचन सुना दिये।

सरदार ने रानी के कटे हुए शीश के लम्बे बालों को दो भागों में बांटकर गांठ लगाके अपने गले में डाल लिया और रणमत्त होकर शत्रु की सेना पर टूट पड़ा। लड़ते-लड़ते जब एक बार औरंगजेब पर चढ़ बैठा तो बादशाह ने प्राणों की भिक्षा मांगकर जान बचाई किन्तु उसी समय शत्रु सैनिक के वार से चूड़ावत का सिर कट गया, पर रुण्ड (गला) कटने पर भी सरदार का कबन्ध घंटों तलवार चलाकर शत्रु सेना का संहार करता रहा।

क्या संसार के विषय-भोगों में लिप्त व्यक्तियों से इस प्रकार के कठोर कर्त्तव्य को निभाने की बात सोची भी जा सकती है?

अतः राष्ट्रीय समृद्धि और स्वातन्त्र्य की रक्षा के लिए दूसरे नम्बर पर तप की आवश्यकता है।

तीसरे नम्बर पर मन्त्र में है 'ब्रह्मणा'। ब्रह्मणा के अनेक अर्थों में से यहां मुझे अभिप्रेत है आस्तिकता। राष्ट्र की उन्नति के लिए उसके नागरिकों को आस्तिक और धार्मिक होना चाहिए। इस भावना के बिना उनका आचार शुद्ध रहना कठिन ही नहीं, असम्भव है। जब मनुष्य के हृदय में ये विचार बद्धमूल हों कि इस विश्व को नियन्त्रण में रखने वाली ऐसी शक्ति है जो प्रत्येक अच्छे और बुरे कर्म को देखती है, तथा अच्छे का अच्छा और बुरे का बुरा फल अवश्य मिलता है तो वह बुराई से बचेगा। ऐसा व्यक्ति कभी कालाबाजारी नहीं कर सकता, रिश्वत नहीं ले सकता। हमारे देश की उन्नति में ये दोनों दुर्गुण भी बहुत बाधक हैं। यहां सब बुराइयों की जड़ यह दूसरे नम्बर का पैसा है। यह बड़े-बड़े पद पर आसीन व्यक्तियों को भ्रष्ट करके कर्त्तव्यविमुख बना रहा है। यहां रिश्वत को ७५ प्रतिशत सरकारी कर्मचारी अपना अधिकार समझते हैं। स्थिति यहां तक विकृत हो गई है कि रिश्वत न लेने वाले का विभाग में जीना दूभर हो गया है। यह भारत वह भारत देश है, जिसके एक शासक अश्वपति ने यह दावा किया था कि—

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः।
नानाहिताग्निर्ना विद्वान्न स्वैरी स्वैरिणी कुतः॥

अर्थात् मेरे राज्य में कोई चोर नहीं है, कोई कंजूस और शराबी नहीं है, कोई यज्ञ न करने वाला नहीं है, कोई मूर्ख नहीं है और जब कोई पुरुष दुराचारी नहीं है तो दुराचारिणी स्त्री तो हो ही नहीं सकती।

आज बड़े कहलाने वाले राष्ट्रों की क्या स्थिति है?

अमेरिका के फैडरल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टीगेटर के डायरेक्टर श्री जे० एडगर हूवर द्वारा प्रकाशित सन् १९५३ की पहली छमाही में अमरीका के अपराधों की सूची से विदित होता है कि इन छः महीनों में अमरीका में ८०,४७,२९० (अस्सी लाख, सैंतालीस हजार, दो सौ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नब्बे) बड़े अपराध हुए। प्रत्येक ४०.३ प्रति मिनट पर एक हत्या, प्रत्येक २९.४ मिनट पर एक बलात्कार, प्रत्येक ८.८ मिनट पर एक डाका, प्रत्येक ५.७१ मिनट पर एक चोरी, इसी प्रकार १४.९ सैकेण्ड पर एक बड़ा अपराध हुआ है।

इससे सर्वथा स्पष्ट है कि राष्ट्र की शान्ति और उन्नति के लिए आस्तिकता और धार्मिकता अत्यन्त आवश्यक है।

इसके आगे मन्त्र की चौथी बात है—'वित्त ऋते श्रिताः'—भोगने योग्य समस्त धनादि पदार्थों को न्यायपूर्वक कमावें और न्यायपूर्वक ही उनका उपभोग करें।' जहां नागरिकों में यह भावना होगी, वहां अनावश्यक असन्तुलन नहीं होगा। एक ओर उपभोग की असीम सामग्री और दूसरी ओर पेट भरने को रोटी नहीं, तन ढकने को वस्त्र नहीं, सिर छुपाने को झोंपड़ी नहीं— ऐसे राष्ट्र में शान्ति हो ही नहीं सकती।

अतः राष्ट्रोन्नति का यही वेदोक्त मार्ग है, अन्य नहीं।

हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयं प्रभा समुज्ज्वला स्वतन्त्रता पुकारती
अमर्त्य वीरपुत्र हो दृढ़प्रतिज्ञ सोच लो
प्रशस्त पुण्य पंथ है बढ़े चलो बढ़े चलो।
असंख्य कीर्त्ति रश्मियां विकीर्ण दिव्य दाह सी
सपूत मातृभूमि के रुको न शूर साहसी
अराति सैन्य सिन्धु में सुवाऽवाग्नि से जलो
प्रवीर हो जयी बनो बढ़े चलो बढ़े चलो॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Be a 'Man'

❑ Dr. Swami Satyam

Om, Tantum Tanvan Rajaso Bhanumanvihi Jyotishmatah Patho Raksha Dhiyakritan, Anulvanam Vayata Joguvamapo Manurbhava Janaya Deivyam Janam.

Rig. 10-5-3-6

In this Mantra God, thefather, has advised His children only one thing, i.e., "Be a 'Man'. He does not want His children to follow this or that sect, but asks them to come up as 'men'. A 'Man' is he who possesses 'Humanity.' Humanity is Dharma of a 'Man', because it sustains the entity of human beings. The children are called - Santan' in Sanskrit, because they are expected to spread the name and fame of their parents and families with their good character, conduct and behaviour. The souls are the children of God and they are expected to spread the Name and Message of God with their conduct. A person who calls himself or herself a devotee should be very careful in his/her dealings, because he/she is watched by other people very closely. It is his/her conduct and dealings that will bring good or bad name to God. An intelligent child never brings a bad name either to his/her parents or family. He/she is well disciplined and obeys his/her parents. A real devotee is a person who obeys God, works for Him and spreads His Message. Mere worshiping Him or singing the praises does not make one a devotee. A devotee should set an example so that the world admires him/her and says, 'see, what a great devotee and good soul he/she is. He/she is the real child of God."

This kind of a person is called a 'Man.' And, what is 'Humanity'? Selflessness, unconditional love, respect for others, generousity, kindness, sympathy, sweetness, humbleness, a desire to sacrifice once own pleasures for the sake of others, helping all without expecting anything in return, all these benevolent things constitute 'Humanity' and it is called Dharma. So, Vedic Dharma is nothing but Religion of Humanity. The human beings, who are 'children of God' never think of increasing the number of 'Sheep' by converting others through various temptations, because temptations make a person inhuman. They always aim at bringing happiness and peace among the children of God by improving their life-style in such a way that they are devoid of all short comings and impurities and elevate their own selves to come up as 'Perfect Children.'

God is father and Mother. Just like a father or mother loves his/her noble children, God, too loves His good children.

Lord Krishna in Bhagavadgita says.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'He/she who never bothers others and is never bothered by others, is beyond all kinds of pleasures, anger, fear, confusion and restlessness is always loved by God."

When a soul bears a human body, it is its main responsibility to see that that valuable abode is never taken away from it. The human body is the only place in which a soul has an opportunity to do better deeds and move further on the path that leads it towards God. Having put up all kinds of Good deeds, when a soul keeps achieving successes one after another in every human birth, it succeeds in earning God's love. If, by chance, it misses the human body even for once it has to start the journey again from the very beginning. That is why God says in this Mantra, "Beware, you should never miss a human body. How can one do that? God shows the way," keep working and weaving shining clothes for the soul through bright Karmas (actions). As per Gita every great man achieves perfection only through Karmas. The threads that a soul produces are of many kinds-red, black, white as well as of mixed colours. But if it remains alert it will produce only white yarns the clothes of which are ever white and are the best garment for the soul. These kinds of yarns the soul is able to produce only when it gives preference to God and His works over worldly enjoyments and pleasures. God says "While moving on the path of life, keep facing the Sun, never turn your back to Him. When a person goes towards the Sun his shadow follows him. Similarly, when a soul proceeds towards God, the world follows him. He can never catch the head of his shadow when he goes opposite to the sun.

Secondly, the paths created by the ancestors through their knowledge and actions are very wise ones. Do not discard them, but follow them with all earnestness & faith. Protect them by moving on them and guide your children practically.

Thirdly, do only such deeds that bring your fame, that are faultless, sinless and full of brightness.

In the end, God says, "Once you succeed in following the path explained above and come up as a good person, your children will follow your ways and come up still more better, brighter and more successful than you have been." This is the only way to have good, noble and disciplined children and a good family.

QUESTION-ANSWER SECTION

Do you have any questions, too? Please do not hesitate and write to us. We shall be pleased to send you a convincing answer.

Q.1 What is 'Dharma'? Is it diferent from Religion?

Ans. Yes, Religions is not Dharma. Religions are mostly concerned with rituals and they are many, while Dharma is concerned with conduct and day to day life. It is one.

Q.2 Are the souls born from God like we are from our parents?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Ans. No, the souls are never born. They do not die, too. They are eternal. God is their protector, Gaurdian and Guide. He is the Eternal Shelter. He loves souls as the parents do their children. Like good and intelligent parents. He wants to see them coming up in their lives.

Q.3 How can we know that God is loving us?

Ans. When we are loved by Him we keep succeeding in our fields of work; we are never angry, jealous or egotists, do not have any tensions and worries, face obstacles & conquer them without any difficulty, we are sweet to everyone and enjoy even sufferings.

Q.4 Why is a soul given a body?

Ans. The world is gross and has a form. The formless soul must have a gross instrument to deal with it and so, God, who is kind, gives us these bodies.

Q.5 Why should we try to achieve God?

Ans. For attaining the Eternal Bliss. The pleasures we enjoy in the world are transitory and are mixed with miseries. If we want that we should never undergo sufferings, we must be O with God, because HE is the BLIS

Q.6 Are we not given a human body on we miss it?

Ans. Why not? God is just and never f gives sins. He never violates His o Rules. We miss the human body wh we commit sins more than virtu However, once we have enjoyed punishment for those sins, we given again a human body so that may try again to go on a right pat

Q.7 How can we 'dress' our soul?

Ans. The bodies are like looms. The sou are the weavers. The souls are n gifted with these bodies for enjoyi the world and waste the energy. Th should use these looms for prepari clothes for themselves. They are ma with warps of "Jnaanam" (knowled and wooves of "Karma" (action "Bhakti" (devotion, faith and intere addes colour and shining. The sou that, due to ignorance, fail to prep these clothes in their life time a present themselves naked before G (after death) fail in earning Symp thy, Love and Grace of God.

दर्दे दिल पासे वफ़ा जज़बाए इमां होना।
आदमियत है यही, यही इंसां होना॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दण्डी स्वामी विरजानन्द जी महाराज

□ सुरभि

सर्वतोमुखी क्रान्ति के अग्रदूत, महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के विद्यागुरु दण्डी स्वामी विरजानन्द जी महाराज का जन्म पंजाब प्रान्त के अन्तर्गत जालन्धर जिले के कर्तारपुर कस्बे के निकट गंगापुर गांव में पं० नारायण दत्त सारस्वत के घर सन् १७७९ ईस्वी में हुआ था। शैशवास्था में ही शीतला के प्रकोप के कारण वे दृष्टिविहीन हो गए। माता-पिता की छत्रछाया भी नहीं रही। भाई-भाभी के कठोर एवं रुक्ष व्यवहार के कारण आपने किशोरावस्था में ही घर छोड़ दिया। सन् १७७९ ईस्वी में श्री स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से संन्यास की दीक्षा ली।

अलवर, सोरों, हाथरस आदि स्थानों पर कुछ काल तक निवास करने के पश्चात् दण्डी जी ने मथुरा को अपना कार्यक्षेत्र बनाया। विरजानन्द जी जहां व्याकरण के प्रकाण्ड पण्डित थे, वहां वे साम्प्रतिक सम्प्रदायों, समाज तथा राजनीति के भी विद्वान् थे।

दृष्टिहीन परन्तु प्रज्ञाचक्षु, संन्यासी विरजानन्द जी को दयानन्द के रूप में एक ऐसा सत्तपात्र छात्र मिल गया जिसको उन्होंने योग्यतम विद्वान् बनाकर समाज में व्याप्त अन्धविश्वासों एवं राजनीतिक पराधीनता की श्रृंखलाओं को छिन्न-भिन्न करने के लिए कार्यक्षेत्र में उतारा।

गुरुदक्षिणा के समय दण्डीजी ने अपने प्रिय शिष्य, स्वामी दयानन्द से कहा था—"वत्स! क्या तुम इन तुच्छ लौंगों को देकर ही गुरु के महत् ऋण से उऋण होना चाहते हो? मैं तुम्हारा जीवन चाहता हूं। दयानन्द! साम्प्रदायिक पाखण्डों का उन्मूलन करने के लिए कटिबद्ध हो जाओ, आर्यज्ञान की दिव्य आभा को पुनः प्रकाशित करो, यही मेरी गुरुदक्षिणा है।"

जिस गुरु ने महर्षि दयानन्द जैसे अलौकिक व्यक्तित्व का निर्माण किया उस जगद्गुरु दण्डी स्वामी विरजानन्द जी महाराज को शत-शत वन्दन।

सफलता कोई पका-पकाया भोजन नहीं जो ग्रास में रखा और खाने लगे, जी तोड़ कार्य करना होता है। काम करने की शक्ति और बुद्धि ईश्वर ने दी है तो अपना सारा दिन आलस्य में पड़े हुए क्यों काटते हो? हाथ-पैर चलाइये, काम कीजिए। ज्ञान की बहती हुई सम्पत्ति में वृद्धि करके अपने आपको सफल बनाइये।

केवल कर्महीन ही ऐसे हैं जो भाग्य को कोसते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देशभक्त महर्षि दयानन्द

❑ श्री स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

जिस प्रकार स्वामी दयानन्द ने गोरक्षा और हिन्दी के लिए सार्वजनिक आन्दोलन का नेतृत्व किया, उस प्रकार उन्होंने न तो देश की स्वाधीनता के लिए किसी आन्दोलन का नेतृत्व किया और न ऐसे किसी आन्दोलन में कोई सक्रिय भाग लिया, किन्तु अपने चिन्तन, लेखनी और वाणी द्वारा इसमें सहयोग करने में वे पीछे नहीं रहे। भारतीयों को भ्रमित करने के विचार से आर्य द्रविड़ जातियों के सिद्धान्त की कल्पना लण्डन की रॉयल एशियाटिक सोसायटी के बन्द कमरे में ९ अप्रैल, १८६६ की सभा में की गई। रॉयल एशियाटिक सोसायटी जर्नल, लंदन, नयी मलिका ५, पृष्ठ ४२० की टिप्पणी के अनुसार यह सभा राइट ऑनरेबल वाइकाउंट स्ट्रांगफील्ड (Viscount Strongfield) की अध्यक्षता में हुई थी। मिस्टर एडवर्ड टॉमस ने चौथे शीर्षकके अन्तर्गत चर्चा का आरम्भ करते हुए कहा कि टॉक्सस नदी से आर्यन आक्रामकों की लहरें अरिमतिया प्रान्त और हिन्दुकुश के मार्ग से भारत में प्रविष्ट हुई। तदनुसार प्राइमरी से लेकर यूनिवर्सिटी स्तर तक की पुस्तकों में पढ़ाया जाने लगा कि आर्यों ने भारत पर आक्रमण किया और यहां के आदिवासियों को परास्त कर इस देश पर बलात् अधिकार करके यहां बस गये। इसी आधार पर आज मांग की जा रही है कि अन्य विदेशियों (मुसलमानों और ईसाइयों) की भांति, आर्यों (हिन्दुओं) को भी देश को आदिवासियों को सौंपकर जाना होगा, 'दोज ह्यू केम् फर्स्ट मस्ट् लीव फर्स्ट'। इसी आधार पर ४ सितम्बर, १९७७ को संसद में राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत सदस्य फ्रेंक एन्थोनी ने मांग की "Sanskrit should be deleted from the eight shedule of the constitution because it is a foreign language brought to this country by foreign invaders, the Aryans." (Indian Express', New Delhi, 5-9-77) अर्थात् 'संस्कृत को संविधान के आठवें परिशिष्ट से हटा देना चाहिये, क्योंकि वह विदेशी भाषा है, जिसे विदेशी आक्रमणकारी, इस देश में लाये।' यदि सचमुच हम भी विदे आक्रमणकारी हैं तो हमें स्वतन्त्रता मांगने का अधिकार है?

भारत के स्वाधीनता संग्राम में लोकमान्य गंगाधर तिलक का शीर्षस्थान है, और उसका एक कारण है, आन्दोलन को उनका दिया 'स्वराज्य हम जन्मसिद्ध अधिकार है' यह उद्घोष, परन्तु यह उद् इस देश के आदिवासी या मूल निवासी ही कर सकते अन्य नहीं। जैसे किसी के घर पर लाठियों से हम करके और उसमें रहने वालों को मार-पीट कर देने और उस पर अधिकार कर लेने वाला उस घर अपना जन्मसिद्ध अधिकार नहीं जता सकता, वैसे इस देश में पहले से रह रहे लोगों को मारकर उस अधिकार जमाने वाले विदेशी आक्रमणकारी आर्य अपना जन्मसिद्ध अधिकार नहीं जता सकते। लोकम तिलक भी यही मानते थे कि आर्य लोग विदे आक्रमणकारी हैं, जिन्होंने यहां के आदिवासियों से देश को छीनकर इस पर बलात् अधिकार कर लिया। इसलिए बात ठीक होते हुए भी लोकमान्य तिलक उनके मतानुयायी यह नारा नहीं लगा सकते।

आर्य लोग इस देश के मूल निवासी हैं, न बाहर से आये और न उनसे पहले दूसरा कोई बसता था, इसलिए यह देश 'आर्यावर्त्त' है और उन इस देश पर जन्मसिद्ध अधिकार होने से स्वराज्य उनका जन्मसिद्ध अधिकार है। इस प्रकार इस देश स्वाधीनता की मांग को वैधानिक अधिकार देने वा सबसे पहला व्यक्ति दयानन्द था। यदि हम दयानन्द इस बात को स्वीकार नहीं करते तो विदेशी होने कारण अंग्रेजों की तरह एक न एक दिन हमें भी यहां भागना होगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वस्तुतः उस व्यक्ति, दल या संगठन को इस देश पर शासन करने का कोई अधिकार नहीं है, जो अपने आपको विदेशी या विदेशी मूल का स्वीकार करता है।

स्वामी दयानन्द पहला व्यक्ति था जिसने देश की स्वाधीनता के विरोधी इस विचार पर कुठाराघात करते हुए कहा, 'किसी संस्कृत ग्रंथ वा इतिहास में नहीं लिखा कि आर्य लोग ईरान से आये और यहां के जंगलियों से लड़कर, जय पाके, निकालके इस देश के राजा हुए, पुनः विदेशियों का लेख कैसे माननीय हो सकता है?'

पुनः सन् १८५७ की क्रान्ति के विफल हो जाने पर १ नवम्बर, १८५८ को महारानी विक्टोरिया ने अपनी इच्छा घोषित करते हुए यहां के लोगों को विश्वास दिलाया था कि 'हमारी अपनी मान्यताओं के कारण किसी के प्रति किसी प्रकार का पक्षपात नहीं किया जाएगा और किसी के साथ ज्यादती नहीं की जाएगी। इसके विपरीत सबको समान रूप से कानूनी संरक्षण प्राप्त होगा और अपने अधीन समस्त कर्मचारियों को हम सावधान करते हैं कि यदि किसी ने हमारी प्रजा के धार्मिक विश्वास और पूजाविधि में दखल दिया तो उसे हमारे कोप का शिकार होना होगा।'

जहां इण्डियन नेशनल कांग्रेस ने महारानी विक्टोरिया की इस घोषणा का स्वागत किया वहां दयानन्द ने इसे ठुकराते हुए स्पष्ट कह दिया 'कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत-मतान्तर के आग्रहरहित, अपने और पराये का पक्षपातशून्य, प्रजा का माता-पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ भी विदेशियों का राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं है।'

दयानन्द के इन शब्दों में महारानी विक्टोरिया की घोषणा का तुर्की-ब-तुकी जवाब है। दिल्ली में सन् १९४४ (२० से २२ फरवरी) को सम्पन्न आर्य महासम्मेलन के अध्यक्ष डॉ० श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने दयानन्द के इस जवाब पर टिप्पणी करते हुए अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा था, "Could there be a bolder declaration of a country's declaration of war against foreign domination?" अर्थात् 'विदेशी हुकूमत के विरुद्ध किसी देश द्वारा युद्ध घोषणा का क्या इससे बढ़कर ऐलान हो सकता था?'

सन् १९११ की जनसंख्या के अध्यक्ष (सेंसस् कमिश्नर) मिस्टर ब्लण्ट ने आर्यसमाज की समीक्षा करते हुए लिखा था, "The Arya Samajic doctrine has a patriotic side. The Arya doctrine and Arya education alike sing the glories of ancient India and by so doing arouse a feeling a national pride in its disciples who are made to feel that their country's history is not a tale of humiliation. Patriotism and politics are not synonymous, but the arousing of an interest in national affairs is a natural result of arojusing national pride." (Census Report of 1911, Vol. XV, Part I, Chap. IV, P. 135) अर्थात् आर्य समाज के सिद्धान्तों में स्वदेश प्रेम की प्रेरणा है। आर्य सिद्धान्त और आर्य शिक्षा समान रूप से भारत के प्राचीन गौरव के गीत गाते हैं और ऐसा करके अपने अनुयायियों में राष्ट्र के प्रति गौरव की भावना को जागरित करते हैं। इस शिक्षा के फलस्वरूप वे समझते हैं कि हमारे देश का इतिहास पराभव की कहानी नहीं है। देशभक्ति और राजनीति एकार्थवाची नहीं है, किन्तु राष्ट्रीय कार्यों में रुचि या प्रवृत्ति राष्ट्रीय भावना का स्वाभाविक परिणाम है।'

मिस्टर ब्लण्ट के कथन की यथार्थता को जानने के लिए दयानन्द के 'सत्यार्थप्रकाश' के ११वें समुल्लास में उल्लिखित इन शब्दों पर ध्यान देना पर्याप्त होगा, 'यह आर्यावर्त्त ऐसादेश है जिसके सदृश भूगोल में दूसरा देश नहीं है। इसीलिए इस भूमि का नाम स्वर्णभूमि है, क्योंकि यह स्वर्ण आदि रत्नों को उत्पन्न करती है। .... जितने भूगोल में देश हैं वे सब इस देश की प्रशंसा करते हैं और आशा रखते हैं कि पारसमणि पत्थर सुना जाता है। यह बात तो झूठी है, परन्तु आर्यावर्त्त देश ही ऐसा है जिसको लोहे रूपी विदेशी छूते ही स्वर्ण, अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं। सृष्टि के आदि से लेकर पांच सहस्र वर्षों से पूर्व पर्यन्त आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती, अर्थात् भूगोल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में सर्वोपरि राज्य था। अन्य देश माण्डलिक, अर्थात् छोटे-छोटे राजा रहते थे।'

ब्लण्ट के अनुसार स्वदेश के प्रति जागरित इस गौरवगान का यह परिणाम हुआ कि लोगों में अपने खोये गौरव को फिर से पाने की लालसा का बल मिला। किसी भी मामले में विदेशियों के सामने सिर झुकाना दयानन्द को सह्य नहीं था। वे लिखते हैं, 'जब अपने देश में सब सत्य विद्या, सत्य धर्म और परम योग की सब बातें थीं और अब भी हैं, तब विचारिए कि थियोसोफिस्टों को स्वदेशवासियों के मत में मिलना चाहिये या आर्यावर्त्तियों को थियोसोफिस्ट बनना चाहिये?

ब्रह्मसमाज के खण्डन के प्रकरण में यह बात और भी अधिक स्पष्टता से उभरकर आती है, 'इन लोगों में स्वदेशभक्ति बहुत कम है। ईसाइयों के बहुत से आचरण लिये हैं। अपने देश की प्रशंसा और पूर्वजों की बड़ाई करना तो दूर रहा, उनके स्थान में भरपेट निन्दा करते हैं। ब्रह्मादि ऋषियों का नाम भी नहीं लेते, प्रत्युत ऐसा कहते हैं कि बिना अंग्रेजों के सृष्टि में आज पर्यन्त कोई विद्वान् ही नहीं हुआ; आर्यावर्त्तीय सदा से मूर्ख चले आये है; उनकी उन्नति कभी नहीं हुई। ... भला जब आर्यावत्त में उत्पन्न हुए हैं और इसी का अन्न जल खाया पिया अब भी खाते पीते हैं, तब अपने माता-पिता, पितामह आदि के मार्ग को छोड़कर दूसरे विदेशी मतों पर झुक जाना ब्रह्मसमाजी और प्रार्थनासमाजियों का एतद्देशस्थ संस्कृत विद्या से रहित अपने को विद्वान् प्रकाशित करना, इंग्लिश पढ़ के पण्डिताभिमानी होकर एक नया मत चलाने में प्रवृत्त होना मनुष्यों का वृद्धिकारक काम क्योंकर हो सकता है?'

कितना स्वदेशाभिमानी था दयानन्द! सन् १९०१ जनसंख्या के अध्यक्ष (सेंसस् कमिश्नर) मिस्टर बर्न थे। उन्होंने अपनी रिपोर्ट में लिखा था— "Dayananda feared Islama and Christianity because he considered that the adoption and adaptation of any foreign creed would endanger the national feelings he wished to foster." अर्थात् 'दयानन्द इस्लाम तथा ईसाइयत के प्रति इसलिए शंकित थे, क्योंकि वे समझते थे कि विदेशी मतों के अपनाने से देशवासियों की राष्ट्रीयता की भावनाओं को क्षति पहुंचेगी, जिन्हें वे पुष्ट करना चाहते थे।'

इसमें सन्देह नहीं कि हमारी दासता की बेड़ियों को सुदृढ़ करने में ईसाइयों ने अंग्रेजों के कन्धे से कन्धा मिलाकर काम किया है। जब तक किसी देश के लोगों में स्वाभिमान की भावना रहती है तब तक विदेशी शासन के स्थायित्व पर प्रश्नचिह्न लगा रहता है। इसी भावना को नष्ट करने के लिए ईसाइयत ने हिन्दुस्तानियों को असभ्य ओर जंगली बताकर उनमें हीनता की भावना को उभारने का यत्न किया। इसका सबसे बड़ा प्रमाण और क्या होगा कि जब १८७६ में प्रिंस ऑफ वेल्स भारत में आये तो बम्बई गवर्नर लार्ड री ने ईसाई मिशनरियों के शिष्टमण्डल को उनके सामने प्रस्तुत करते हुए कहा था— "They are doing in India more than all thoses civilians, solders, judges and governors your Highness has met." अर्थात् 'जितना काम आपके सिपाही, जज और गवर्नर कर रहे हैं, उससे कहीं अधिक वे मिशनरी कर रहे हैं।'

इतना ही नहीं, स्वाधीनता के प्रथम युद्ध की समाप्ति के दो वर्ष बाद इंग्लैंड के तत्कालीन प्रधानमंत्री लार्ड पामर्स्टन ने घोषणा की थी, "It is not only our duty but in our own interest to promote the diffusion of Christianity as far as possible throughout the length and breadth of India." (Christianity and Government of India, by Mathew, Page 194), अर्थात् 'यह हमारा कर्त्तव्य ही नहीं अपितु हमारा हित इसी में है कि समूचे भारत में ईसाइयत का प्रचार प्रसार हो।' स्मरण रहे कि इंग्लैंड के प्रधानमन्त्री ने यह घोषणा अपनी महारानी की पूर्वोक्त घोषणा के एक वर्ष बाद की थी।

इस्लाम के इतिहास से सभी भली-भांति परिचित हैं। यह ठीक है कि भारत में रहने वाले प्रायः सभी मुसलमान मूलतः इसी देश के वासी है, किन्तु आठ सौ वर्ष से इस धरती के अन्न जल से पोषण पाकर भी वे इस देश के नहीं बन सके। भारत के मुसलमानों ने कभी इस

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देश पर शासन नहीं किया। शासन करने वाले मुगल, पठान, खिलजी, लोदी, गोरी आदि सभी आक्रमणकारी विदेशी मुसलमान थे, परन्तु जितना गर्व उन्हें इन विदेशी आक्रमणकारियों और इस देश के लोगों पर अत्याचार करने वालों पर है, उतना इस देश में पैदा हुए राम, कृष्ण और ऋषि-मुनियों पर अथवा इस देश के लिए मर मिटने वाले राणा प्रताप, शिवाजी आदि पर नहीं है।

मिस्टर ब्लण्ट ने ही एक बात और लिखी है, "Dayananda was not merely a religious reformer, he was a great patrior. It would be fair to say that with him religious reform was a mere means to national reform." अर्थात् 'दयानन्द मात्र धार्मिक सुधारक नहीं था। वह एक महान् देशभक्त था। यह कहना ठीक होगा कि उसके लिए धार्मिक सुधार राष्ट्रीय सुधार का एक उपाय था।' ब्लण्ट ने बड़े पते की बात कही है। इसमें सन्देह नहीं कि दयानन्द ने पाखण्डों ओर परस्पर विरोधी मतों का खण्डन इसलिए किया कि इनके रहते, दयानन्द के अपने शब्दों में 'परस्पर एकता, मेल-मिलाप या सद्भाव न रहकर ईर्ष्या, द्वेष, विरोध और लड़ाई-झगड़ा ही होगा। यदि ऐसे पाखण्ड न चलते तो आर्यावर्त्त की दुर्दशा क्यों होती? दयानन्द ने सबसे अधिक खण्डन मूर्तिपूजा का किया है। इस प्रकरण में उन्होंने मूर्तिपूजा से होने वाली १६ हानियों का उल्लेख किया है जिनमें से अधिकतर का सम्बन्ध उनके कारण देश को होने वाली हानियों से है। वे लिखते हैं, 'नाना प्रकार की विरुद्धस्वरूपनाम चरित्र युक्त मूर्तियों के पुजारियों का ऐक्य मत नष्ट होके विरुद्ध मत में चलकर आपस में फूट बढ़ा के देश का नाश करते हैं। जो मूर्ति के भरोसे शत्रु का पराजय और अपना विजय मान के बैठे रहते हैं उनका पराजय होकर राज्य, स्वातन्त्र्य और सुख उनके शत्रुओं के अधीन हो जाता है। क्यों पत्थर पूजकर सत्यानाश को प्राप्त हुए। देखो, जितनी मूर्तियां पूजी हैं उनके स्थान पर शूर वीरों की पूजा करते तो कितनी रक्षा होती?'

राष्ट्रोत्थान के लिए एकता आवश्यक है। दयानन्द ने 'सत्यार्थप्रकाश' में अनेकत्र इस बात पर बल दिया है। उनका कहना है, 'जब तब एक मन, एक हानि-लाभ, एक सुख-दुःख न मानें, तब तक उन्नति होना बहुत कठिन है।' जब भूगोल में एक मत था, उसी में सबकी निष्ठा थी और एक-दूसरे का सुख-दुःख, हानि-लाभ आपस में समान समझते थे, तभी तक सुख था, परन्तु दयानन्द के अनुसार 'भिन्न-भिन्न भाषा, पृथक्-पृथक् शिक्षा, अलग व्यवहार का, विरोध का छूटना अतिदुष्कर है। बिना इसके छूटे परस्पर का उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना कठिन है।' एकता सम्मेलन समझौते का आधार बन सकते हैं, एकता का नहीं, समझौतों से सामयिक समस्या का समाधान भले ही हो जाए, उसमें स्थायित्व नहीं आ सकता। ऐसे उपायों से रोग दब सकता है, किन्तु नष्ट नहीं हो सकता। इतना ही नहीं, कालान्तर में वह और भी उग्र रूप धारण कर सकता है।

एक दिन श्री मोहनलाल विष्णुलाल पाण्डया ने स्वामी दयानन्द से पूछा, भगवन्! भारत का पूर्ण हित कब होगा? यहां जातीय उन्नति कब होगी? स्वामीजी ने उत्तर दिया, 'एक धर्म, एक भाषा और एक लक्ष्य बनाये बिना भारत का पूर्ण हित और जातीय उन्नति होना कठिन है। सब उन्नतियों का केन्द्रस्थान ऐक्य है। जहां भाषा, भाव और भावना में एकता आ जाए वहां सागर में नदियों की भांति सारे सुख एक-एक करके प्रवेश करने लगते हैं। मैं चाहता हूं कि देश के राजे-महाराजे अपने शासन में सुधार और संशोधन करें। अपने राज्य में धर्म, भाषा और भावों में एकता करें। फिर भारत भर में आप ही आप सुधार हो जाएगा।'

आज से लगभग ७० वर्ष पूर्व महात्मा गांधी ने स्वदेशी के लिए आन्दोलन किया था। उनका वह आन्दोलन स्वदेशी वस्त्रों या खादी तक सीमित था। वर्तमान में एक बार फिर इस प्रकार के आन्दोलन का सूत्रपात हुआ है जिसका लक्ष्य भारत में विदेशी या अर्धविदेशी कम्पनियों द्वारा निर्मित वस्तुओं का बहिष्कार करना बताया जाता है।

दयानन्द ने अपने समय में देश की आर्थिक समस्याओं पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया। विचार ही नहीं किया अपितु निश्चित योजना भी बनाई और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तदर्थ विदेशों से पत्र व्यवहार भी किया। दैवगति से उन्हें अपनी योजनाओं को कार्यान्वित करने का अवसर नहीं मिला। स्वामीजी इस बात को बड़ी पीड़ा के साथ अनुभव करते थे कि विदेशी माल की खपत से कितनी हानि हो रही है। उन्होंने 'सत्यार्थप्रकाश' में लिखा, 'जब परदेशी हमारे देश में व्यापार करें तो दारिद्रय और दुःख के बिना दूसरा कुछ भी नहीं हो सकता।' देश की आर्थिक स्थिति को सुधारने के उद्देश्य से विदेशी वस्तुओं और रहन-सहन का बहिष्कार करने और स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने की प्रेरणा करते हुए उन्होंने बड़े मर्मभेदी शब्दों में कहा, 'इतने से ही समझ लो कि अंग्रेज अपने देश के जूते का भी जितना मान करते हैं उतना भी अन्य देशस्थ मनुष्यों का नहीं करते। देखो, सौ वर्ष से ऊपर इस देश में आये यूरोपियनों को हो गये और आज तक ये वैसे ही मोटे कपड़े आदि पहनते हैं, जैसे कि स्वदेश में पहनते थे, परन्तु उन्होंने अपने देश का चलन नहीं छोड़ा। तुममें से बहुत से लोगों ने उनकी नकल कर ली। अनुकरण करना बुद्धिमानों का काम नहीं। इससे तुम निर्बुद्धि और वे बुद्धिमान् ठहरते हैं। वे अपने देश वालों को व्यापार में सहायता देते हैं, इत्यादि गुणों और अच्छे कर्मों से उनकी उन्नति है।'

'अन्य देशस्थ मनुष्यों का भी उतना मान नहीं करते जितना देश के जूते का' लिखने वाले के मन में कितनी पीड़ा रही होगी अपने देश की दीन-हीन दशा देखकर कितनी तीव्र घृणा होगी उनके हृदय में विदेशी शासन और विदेशी वस्तुओं के प्रयोग के प्रति। छावली निवासी ठाकुर ऊधोसिंह को विदेशी वेशभूषा में देखकर उन्होंने मार्मिक शब्दों में कहा, 'क्या तुम विदेशी कपड़े से बने इस नये वेश से विभूषित होकर अपने पिताजी से अधिक सुसंस्कृत हो गये हो?' (श्रीमद्दयानन्द प्रकाश)

स्वामी जी से प्रेरणा पाकर बड़ी संख्या में आर्यसमाजी स्वदेशी वस्त्रों का प्रयोग करने लगे थे। लाहौर की आर्यसमाज के सभासदों द्वारा अंग्रेजी वस्त्रों का प्रयोग न करने और विदेशी वस्त्रों का ही प्रयोग करने के निर्णय का समाचार 'स्टेट्समैन' के १४ अगस्त, १८७९ के अंक में इस प्रकार प्रकाशित हुआ था "The present condition of India is one of rapidly increasing improverishment. In this condition of the country, there is not public question of such high importance and abosorbing interest as the question of the revival of our trades and industries. The action of the members of Lahore Arya Samaj, founded by the learned Pandit Dayananda Saraswati should, therefore, be hailed with satisfaction by those who have the interest and welfare of this country at heart. They resolved at a meeting held at the premises of the Arya Samaj building to abstain from the use of English clothes. Hence foreward they will stick to the clothes manufactured solely in India. If they can fulfil their promises and others follow their example, a great object will be gained. This is the only way by which the influence of Manchaster can be conteracted in the Indian market." अर्थात् 'भारत की वर्तमान अवस्था तेजी से बढ़ती हुई दरिद्रता की है। देश की इस अवस्था में अपने धन्धों और उद्योगों की पुनः बहाली का प्रश्न जितना महत्त्वपूर्ण और अतीव रोचक है उतना अन्य कोई सामाजिक प्रश्न नहीं, अतः विद्वान् मनीषी दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित लाहौर आर्यसमाज के सदस्यों के कदम का सन्तोष के साथ अभिनन्दन उन सब लोगों को करना चाहिए जिनके हृदय में देश का हित है। आर्य समाज भवन के परिसर में हुई बैठक में उन्होंने अंग्रेजी कपड़ों के उपयोग से विरत होने का निश्चय किया है। आगे से वे केवल भारत में बने कपड़ों का ही प्रयोग करेंगे। यदि वे अपने वचनों को क्रियान्वित कर सके और अन्य लोग उनके उदाहरण का अनुकरण कर पाये तो एक महान् लक्ष्य पूरा हो जाएगा। भारतीय बाजार में मैंचेस्टर के प्रभाव का जबाव देने का यह एक उपाय है।'

अन्त में स्वामी दयानन्द के समकालीन 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की यह पंक्ति आपको स्मरण कराता हूं—

जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं नरपशु निरा है और मृतक समान है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राष्ट्रीय एकता और ऋषि दयानन्द

❑ स्वामी वेदमुनि परिव्राजक

बात सन् १९६१ के जनवरी मास की है जबकि मुझे अधिकतर महर्षि दयानन्द की शिक्षा स्थली मथुरा नगरी के विरजानन्द वैदिक साधन आश्रम में रहने का सुयोग प्राप्त हुआ। आश्रम से एक मील की दूरी पर मथुरा-वृन्दावन मार्ग पर भारत के सुप्रसिद्ध उद्योगपति बिरला परिवार द्वारा निर्मित "आर्य (हिन्दू धर्म सेवा संघ" के संरक्षण में एक विशाल गीता मन्दिर है। सायंकाल भ्रमणार्थ जब जाना होता तो इसी मन्दिर में लगभग एक घंटा बिताया करता। इस मन्दिर का जो मुख्य भाग है और जिसमें योगीराज श्रीकृष्णचन्द्र की मूर्ति स्थापना की गई है, उसके पीछे की ओर पांच महापुरुषों के चित्र बने हैं, जिनमें एक चित्र महर्षि दयानन्द का भी है। चित्र पर लिखा है—"जागृति और एकता" इसका तात्पर्य यह कि आपने जागृति और एकता के लिए कार्य किया।

चित्र के साथ एकता शब्द को पढ़ते ही ऋषि के एकता के लिए किए गए कार्य मस्तिष्क में क्रमशः एक के बाद एक आने लगे और एक बार महर्षि के प्रमुख ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास का वह प्रकरण नेत्रों के सम्मुख आकर स्थिर हो गया जिसमें राष्ट्रीय गठन के लिए ग्राम सभाओं से लेकर महाराज सभा तक का वर्णन किया गया है। प्रकरण क्या है? किसी राष्ट्र की एकता को सुदृढ़ तथा चिरस्थायी बनाने का वास्तविक सूत्र है।

महर्षि लिखते हैं कि एक-एक ग्राम में एक-एक प्रधान पुरुष को रखें, उन्हीं दस ग्रामों के ऊपर दूसरा उन्हीं बीस ग्रामों के ऊपर तीसरा, उन्हीं सौ ग्रामों के ऊपर चौथा और उन्हीं सहस्र ग्रामों के ऊपर पांचवां पुरुष रखें।"

इस प्रकार के संगठनों को जिनके अध्यक्ष यह प्रधान पुरुष होंगे, महर्षि ने "राज सभा" की संज्ञा प्रदान की है। अर्थात् यह ग्राम सभा वह हुई जो ग्राम पर राज्य करे, ग्राम का शासन चलाये। किन्तु इन ग्राम सभाओं की सत्ता को सर्वतन्त्र स्वतंत्र नहीं रखा अपितु दश ग्रामों के ऊपर भी एक प्रधान पुरुष का विधान किया जो उन दसों ग्रामों के प्रतिनिधियों की बनी "राज सभा" का अध्यक्ष होगा। उससे आगे इसी प्रकार बीस ग्रामों की, सौ ग्रामों की तथा सहस्र, दस सहस्र, लक्ष ग्रामों आदि की राज-सभाओं का भी वर्णन किया है तथा सबसे अन्त में वर्णन किया है महाराज सभा का।

राष्ट्र की छोटी से छोटी इकाई अर्थात् प्रत्येक ग्राम से लेकर ऊपर तक सबको एक सूत्र में बांधने का इतना सुन्दर विधान है कि जिसमें प्रत्येक ग्राम को अपनी-अपनी परिस्थिति के अनुसार स्व-शासन चलाते हुए भी ऊपर के संगठनों के अन्तर्गत रहने से राष्ट्रीय हित में किसी भी प्रकार की बाधा पहुंचने की सम्भावना नहीं रहती।

इन सारी राज सभाओं की जो शिरोमणि अर्थात् सबसे ऊपर की सभा होगी, वह वही होगी, जिसे हम वर्तमान में "लोकसभा" कहते हैं और उसका प्रधान पुरुष होगा "लोकसभाध्यक्ष" "लोकसभा" और "लोक सभाध्यक्ष तक" ही महर्षि ने विचार किया हो सो बात भी नहीं वह तो आगे तक गये और इससे आगे उन्होंने जैसा कि हम ऊपर वर्णन कर आये हैं, "महाराज सभा" का भी निर्देश किया है, जिसे आजकल की परिभाषा में "राज्यसभा" कहा जाता है और जिसका कार्य लोकसभा द्वारा पारित विधेयकों पर विचार करना होता है। इस "महाराज सभा" में विचार के पश्चात् ही विधेयक राष्ट्रपति की स्वीकृति के लिए जाते हैं। इस सभा का अध्यक्ष उपराष्ट्रपति होता है।

अन्तिम राज्यसभा अर्थात् लोकसभा तथा महाराज सभा तो वर्तमान काल में भी है, जैसा कि महर्षि मनु और महर्षि दयानन्द ने विचार प्रस्तुत किए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हैं किन्तु इनसे नीचे की स्थिति सर्वथा विपरीत है। आजकल राष्ट्र की सार्वभौम सत्ता के पश्चात् जो इकाइयां हैं, उन्हें राज्य नाम दिया गया है, जिसका परिणाम हमारे सामने राज्य स्तर पर होने वाले झगड़ों के रूप में आने लगा है। और ये झगड़े हैं अधिकतर सीमा सम्बन्धी बिहार और बंगाल, बिहार और उत्तर प्रदेश तथा मैसूर और महाराष्ट्र आदि के। पंजाब को पंजाबी भाषी प्रदेश कहकर खालिस्तान अथवा सिखीस्तान बनाने के लिए तथा बंगाल में गोरखालैंड बनाने के आन्दोलन भी इसी के परिणामस्वरूप प्रारम्भ हुए हैं। कारण पर यदि गम्भीरता पूर्वक निष्पक्षरूपेण विचार करें तो इसी परिणाम पर पहुंचेंगे कि वह अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण दिन था, जब भारत के प्रान्तों को राज्य तथा भारत को भारतीय संघ नाम दिया गया।

उपरोक्त नामकरण यह स्पष्ट करने को पर्याप्त है कि भारत एक राष्ट्र नहीं अपितु अनेक राज्यों का मिलकर बनाया हुआ संगठन है जिसे "संयुक्त राज्य" भी कहा जा सकता है। दुर्भाग्य से जिन लोगों के हाथों में राष्ट्र की बागडोर है, उन्होंने इस विषय में अमेरिका का अन्धानुकरण किया है। अन्धानुकरण हम इसलिए कहते हैं कि यदि थोड़ा भी बुद्धि का उपयोग किया जाता तो बात बड़ी स्पष्ट है कि अमेरिका कोई स्वतन्त्र राष्ट्र नहीं अपितु अनेक राष्ट्रों का समूह है इसलिए उनका नाम 'अमेरिकन यूनियन' ठीक ही है। भारत अनेक राष्ट्रों का समूह नहीं अपितु एक राष्ट्र है। उत्तर प्रदेश, बिहार आदि उनके प्रबन्ध और व्यवस्था की दृष्टि से बनाये गये प्रान्त हैं, राज्य नहीं, जब राज्य नाम दिये अधिक समय नहीं व्यतीत हुआ था तभी सीमा सम्बन्धी झगड़े आरम्भ हो गये थे। जिन-जिन प्रान्तों में यह झगड़े हो रहे हैं उनमें से प्रत्येक प्रान्त की जनता दूसरे प्रान्त को विदेश तथा वहां के निवासियों को विदेशी समझने लगी हैं। अधिक समय बीतने पर जो परिणाम हो सकते हैं उपर्युक्त झगड़ों को दृष्टिगत रखते हुए उनका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। यह असम्भव नहीं कि कुछ समय पश्चात् यह प्रश्न उग्र हो उठे कि प्रत्येक राज्य की स्वतंत्र सत्ता है, परिस्थितियोंवश उस समय एक संघ के रूप में एकत्र हुए थे किन्तु अब पृथक् होना चाहते हैं। पह... सीमायी झगड़े थे और अब विघटन की प्रवृत्ति प्र... चुकी है, जिसका प्रमाण खालिस्तान की मांग और ... लिए विद्रोह है।

इस प्रान्तीयता के नाम पर होने वाले ... तथा उनसे होने वाली भयंकर हानियों से बचा... भावी विघटन की विनाशकारी प्रवृत्ति को रोक... एकमात्र उपाय है स्वामी दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट ... अनुसरण और वह यह कि समस्त प्रान्तों को जिन्हें ... का नाम दे रखा है समाप्त कर दिया जाये। इससे ... लाभ तो यह होगा कि प्रत्येक प्रान्तीय सरकार प... वाला व्यय बच जायेगा तथा दूसरा यह कि प्रान्ती... की भावना सिमटकर केवल मात्र एक भावना राष्ट्री... की रह जायेगी।

इस समय कोई बिहारी है तो कोई बंगाली, ... पंजाबी है तो कोई मद्रासी और कोई महाराष्ट्रीय ... कोई गुजराती। भारतीय कोई दृष्टिगोचर नहीं है ... इन प्रान्तों के समाप्त होने पर न कोई बिहारी हो... बंगाली, न पंजाबी होगा, न मद्रासी, न महारा... होगा न गुजराती अपितु केवल भारतीय होंगे। ... संघीयता का वास्तविक रूप होगा, संघ नाम ... नहीं। नाम के मूल में तो विघटन की प्रवृत्ति को प्रोत्... देने वाला मन्त्र निहित है।

आवश्यकता इस बात की है कि भारत का पुन... किया जाये जिलों और उनसे निचले स्तर के गठ... तो छुआ न जाए अर्थात् उन्हें तो ज्यों का त्यों ... जाए। जिलों से ऊपर प्रति दस जिलों को मिलाकर ... क्षेत्र या कमिश्नरी बनाई जाए, जिसका अधि... क्षेत्राधिकारी या कमिश्नर रहे। सारे भारत को ... भागों में व्यवस्था की दृष्टि से विभक्त किया जाये ... इन भागों के नाम भाषा तथा जातीयता नहीं ... दिशाओं के नाम पर उत्तरी भारत, दक्षिणी भारत, ... भारत, पश्चिमी भारत तथा मध्य भारत रखे ... इनमें से प्रत्येक भाग का अधिकारी प्रधान क्षेत्राधि... अथवा चीफ कमिश्नर हो। इन सभी चीफ कमिश्नरों ... सीधा सम्बन्ध राष्ट्रीय सरकार से हो। इस प्रकार ...

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राष्ट्र व्यवस्थित रूपेण एक सूत्र में, एक ही राष्ट्रीय सरकार द्वारा शासित होगा।

दूसरा सूत्र राष्ट्रीय एकता के लिए ऋषि दयानन्द का जो हमें प्राप्त हुआ है, वह भाषायी। भारत मां के उस सच्चे सपूत ने एक शताब्दी पूर्व ही यह जान लिया था कि किसी राष्ट्र की एकता को सुदृढ़ करने के लिए भाषायी एकता परमावश्यक है। यही कारण है कि जन्म के गुजराती तथा संस्कृत के महान् पंडित होते हुए भी उन्होंने अपने भाषणों का माध्यम हिन्दी भाषा को बनाया तथा अपने समस्त ग्रंथ भी वेदांग प्रकाश (संस्कृत व्याकरण) को छोड़कर देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी भाषा में लिखे। यदि वह चाहते तो भाषण के माध्यम स्वरूप संस्कृत का प्रयोग कर सकते थे तथा लेखन के लिए संस्कृत वा गुजराती भाषा का। परन्तु महर्षि यह भली-भांति जानते थे कि एक तो हिन्दी भारत में सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली तथा लिखी जाती है। दूसरे हिन्दी की लिपि तथा वर्णमाला पूर्ण तथा वैज्ञानिक है।

यद्यपि भारत के संविधान में भारत की चौदह भाषाएं स्वीकृत हैं तथापि भारत का हित इसी में है कि संविधान द्वारा स्वीकृत इन सभी भाषाओं की एक लिपि देवनागरी हो। इसमें भाषायी उन्माद का मूलोच्छेदन होगा, भारत के प्रत्येक क्षेत्र की जनता एक-दूसरे को समझेगी तथा पारस्परिक निकटता की स्थापना हो सकेगी।

आर्यसमाज का— जो सदैव से राष्ट्रहित के कार्यों में अग्रणी रहा है— अनिवार्य कर्त्तव्य हो जाता है कि वह एतद्विषयक प्रचार में पूरी शक्ति के साथ जुट जाये, जिससे जनमत जागृत हो। एक समय था जब विदेशी साम्राज्य भारत पर छाया था, तब आर्य समाज ने निःस्वार्थ भाव से राष्ट्रीय जागरण के कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लिया। यदि यह कह दिया जाए तो अतिशयोक्ति न होगी कि आर्य समाज की सारी शक्ति स्वाधीनता के मन्त्र का प्रचार करने में लगी हुई थी। यह एक ऐसा सत्य है कि जिसे भारतीय नेताओं ने ही नहीं अपितु भारत से बाहर के विदेशी विद्वानों तथा स्वयं ब्रिटिश साम्राज्य ने भी स्वीकार किया।

अच्छा हो कि स्वामी दयानन्द के इन दोनों सूत्रों के प्रचार में आर्यजन दृढ़तापूर्वक जुट जाएं तथा सच्चे ऋषिभक्त होने का परिचय दें।

जिसने विधर्मियों की धज्जियां उड़ाई और
जिसने स्वधर्म की कुरीतियां हैं बन्द कीं।
वेद को उबारा, जाति-नींव को सुधारा, ध्रुव-
धैर्य से 'अनूप' धर्मध्वजा है बुलन्द की॥
बाल ब्रह्मचारी, महापण्डित पुनीत ज्ञानी,
धर्मधीरता भी दुनिया में है उचर की।
सन्तत रहेगी फहराती भूमि भारत में
विजय-पताका धर्मवीर दयानन्द की॥

□ श्री अनूप शर्मा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

निराला ऋषि

❑ डॉ० सत्यव्रत राजेश

अनन्वय अलंकार के उदाहरण से महर्षि दयानन्द वस्तुतः निराले थे। वैराग्यवानों में निराले, ब्रह्मचारियों में निराले, योगियों में निराले, सन्तों में निराले, मरने वालों में निराले, जीने वालों में निराले, यहां तक कि समस्त संसार के महापुरुषों में निराले। मैं यह सब श्रद्धावश ही नहीं कह रहा अपितु यह वास्तविकता है। आओ आज उस देव को जो निराला था, श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हुए उसके निरालेपन से कुछ शिक्षा ले लें।

पहले उसके वैराग्य को देखें। वैराग्य भाग्यशाली लोगों को होता है। अर्थ और काम के पंक से अछूता बच जाना स्वयं में ही निरालापन है। वैराग्य भर्तृहरि को भी हुआ था, बुद्ध को भी, शंकर को भी। हम उन सभी को नमन करते हैं, किन्तु भर्तृहरि **"यां चिन्तयामि सततं मयि सा विरक्ता"** आदि कहकर पूर्व भोगों का ध्यान कर लेते हैं। अथवा **स्वर्गद्वारस्य विघ्नं नरकपुरमुखं सर्वमाया करण्डम्** कहकर नारी की भरपेट निन्दा कर लेते हैं। कुछ भी हो उन्हें भोगों का ध्यान आ ही जाता है। यद्यपि उन्हें भी वैराग्य है। गौतम बुद्ध को कौन नहीं जानता? राजपुत्र होते हुए भी वैरागी होना साधारण बात नहीं। उन्होंने भी घर छोड़ा था, किन्तु चलते समय कुछ देर खड़े होकर राहुल या यशोधरा का मुख देखते रहे तथा बुद्ध बनने के बाद भी कोई शक्ति उन्हें फिर अपने नगर की ओर खींच लायी। विद्वत्समुदाय शंकर का ऋणी है। वैदिक धर्म संस्थापन की उनकी कामना यद्यपि पूर्ण नहीं हुई तो भी उन्होंने नास्तिक सम्प्रदायों को भारत से बाहर धकेल दिया। उनका वैराग्य भी प्रशंसनीय है, किन्तु यह निराला ऋषि जिस दिन से घर से निकला था उसके बाद पिता आदि के प्रयत्न करने पर भी उसने घर की ओर मुंह न किया। बुद्ध गृहस्थ के झंझट में फंसा, किन्तु यह वैरागी तो जब घर में शहनाई बजने वाली थी, तब घर को छोड़कर ऐसे चल दिया था, जैसे पुराना नीड़ छोड़कर शकुन्त चल देते हैं। इसकी किसी से क्या तुलना! यह तो यही था।

हमारा देश सदा ब्रह्मचारियों का देश रहा हनुमान, भीष्म आदि ब्रह्मचारी क्या भुलाने के योग्य किन्तु हनुमान का ब्रह्मचर्य अपने स्वामी राम के लि लगा, भीष्म ने पिता की इच्छापूर्ति के लिए अपना ब्रह्मचर्य को अर्पित कर दिया, किन्तु इस निराले ब्रह्म ने स्वतः ब्रह्मचर्य का पालन किया, किसी के कहने दबाव के कारण नहीं और वह भी प्राणिमात्र के को अपने ऊपर ओढ़कर उन्हें समस्त कष्टों से मुक्त के लिए। है न यह ब्रह्मचारियों में भी निराला!

आर्यावर्त्त योगियों का देश है। आज भी पर्वत कन्दराओं में योगियों के दर्शन सम्भव हैं। ये से दूर रहकर निज साधना में लीन हैं, उन्हें संसा कोई वास्ता नहीं कोई मरे या जीए, सुखी हो या देश स्वतंत्रत हो या परतन्त्र, वे इन सब द्वन्द्वों में आत्म साधना में संलग्न रहते हैं। आत्मा ही संसार है, वे इससे बाहर सोचते ही नहीं, किन्तु योगी निराला था। संसार का उपकार इसके ध्येय बनकर खड़ा रहता था। इसके लिए स्व से अधिक था। प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तु रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी समझनी चाहिए, यह उनका मूल मन्त्र था। पराई में जलना न जाने इसे किसने सिखा दिया था। कैसा वह निराला योगी, जो पराये दुःखों में रोता है अपने दुःखों में हंसता है। इसे हमने योगियों में निराला पाया।

यह सन्तों में भी निराला था। कबीर, ना दादू आदि अनेक सन्तों ने भारत भूमि को अपने जन्म पवित्र किया हम उनका भी सम्मान करते हैं, किन्तु के पीछे मत के झमेले मिलते हैं। कबीर पन्थी, नानक एवं दादूपन्थी आज अनेक स्थानों पर मिलेंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सन्त उतने पन्थ, किन्तु यह सन्त यहां पर भी निराला निकला। इसने भी लोककल्याण के लिए एक संस्था बनाई, पन्थ नहीं, और उसका नाम रखा आर्यसमाज, दयानन्दसमाज नहीं। जहां भी देखें नक्षत्रों में चन्द्रमा की भांति यह निराला ही मिलेगा।

यह त्यागी भी निराला था। भारतभूमि में रत्न-रूप अनेक महर्षि हुए हैं। आज भी इस धरती को उनपर गर्व है। कण्व, जमदग्नि आदि उच्चकोटि के त्यागी हुए हैं, किन्तु इसके त्याग को देखकर दांतों तले अंगुली दबानी पड़ती है। उनके कई आश्रम थे जहां वे रहकर जप, ध्यान तथा ज्ञान का वितरण करते थे, किन्तु निराले दयानन्द! विश्वभर में तेरी तो एक कुटी भी नहीं जिसे हम दयानन्द कुटी कह दें। विश्वभर में सूई के अग्रभाग भूमि पर भी तूने अधिकार नहीं बताया। सुनते हैं कुछ समय तो तू केवल एक कौपीन मात्र अपने पास रखता था। वह भी लाज ढकने के लिए। कौन बराबरी कर सकता है तेरे त्याग की। यहां भी तू निराला निकला। तू वैदिक संस्कृति के भव्य भवन की नींव बनने का प्रयास करता था, कंगूरे बनने का नहीं। सारे भवन का भार थामे नींव अदृश्य रहती है। भवन दीखा करता है नींव नहीं।

तू विश्व के महापुरुषों में भी निराला था। राम, श्याम इस संस्कृति की निधि हैं। लोग ईसा, मुहम्मद को भी महापुरुष बतलाते हैं। राम के आंसू पत्नी वियोग में बहे, कृष्ण भी पारिवारिक कलह तथा विनाश से दुःखी हुए। सूली पर चढ़े ईसा को भी रोते देखा। मुहम्मद को भी मरते समय आयशा की याद सताती रही तथा उनके आंसू बहते रहे। कष्ट वस्तुतः भयंकर होता है। ताप लोहे को भी पिघला देता है। मैं उनके रोने या दुःखी होने की आलोचना नहीं करता। अपने दुःख में दुःखी होना मानव स्वभाव है किन्तु यह महापुरुष यहां भी निराला निकला। कौन सा कष्ट इसे नहीं दिया लोगों ने। गालियां दी, अपमान किया, ईंट-पत्थर मारे, धूल डाली, तलवार निकाली तथा विष दिया। किन्तु पुष्प की भांति इसकी मुस्कराहट को वे न छीन पाये। गाली प्रदान करने वालों को कहता था कि इनके पास है ही यही तो बेचारे और क्या दें। ईंट-पत्थर तथा धूल की पुष्पवृष्टि कहता था। विष को अमृत समझकर पी लेता था किन्तु अपने दुःख में उद्विग्न होते इसे किसी ने नहीं देखा। इसके मुखचन्द्र पर ग्लान रेखा कभी आती ही नहीं थी। तब क्या यह कभी रोया ही नहीं? रोया, यह भी रोया और खूब रोया किन्तु अपने दुःख में नहीं। ध्यान से देखिए यह गंगा किनारे समाधि में लीन हैं ब्रह्मानन्द का रस पान कर रहा है। वह रस जिसके आगे विश्वब्रह्माण्ड के रस फीके हैं। इधर एक अबला आंचल में कुछ छिपाये रोती आ रही है इसका रुदन सामान्य नहीं है अपितु हृदय की गहराई से निकला रुदन है। इसकी आंखें ही नहीं होतीं अपितु हृदय भी रोता है न जाने किस विपत्ति की मारी है बेचारी। इसका करुणक्रन्दन इस देव के कानों से जा टकराया। समाधि खुल गई मानो जगत् कल्याण के लिए शिव ने समाधि खोली हो। इस विरक्त ने देखा कि वह अबला आंचल की वस्तु गंगा में बहाकर रोती हुई वापस लौट रही है। उसी कपड़े को धोकर सर रखे हुए। दयानन्द दया के अवतार थे कोई रोये और दयानन्द को पीड़ा न हो असम्भव। गौ, विधवा, अनाथ, पशु-पक्षी, प्राणिमात्र का दर्द संजोये था वह अपने हृदय में—

कांटा लगे किसी के, तड़पते हैं हम अमीर।
सारे जहां का दर्द, हमारे जिगर में है॥

शायद दयानन्द इससे भी आगे हो। वह उस स्त्री से रोने, उस वस्तु को बहाने तथा कपड़ा धोकर वापस ले जाने का रहस्य जानना चाहता है। उस स्त्री ने आंसू भरी आंखों से जैसे-तैसे बताया कि वह विधवा है। उसके पति की यही एक निशानी थी। रोग में उपचार कराने के लिए उसके पास पैसे न होने से बच्चा बिना औषध के दम तोड़ गया। मेरे पास इसके कफन के लिए पैसा न था, अतः विवश होकर साड़ी का पल्ला फाड़कर उसे गंगा में बहाने लाई थी। मेरे पुत्र की लाश को तो गंगा अपने आंचल में ढक लेगी, किन्तु मैं इस वस्त्र के टुकड़े के अभाव में लाज न ढक पाती अतः कफन को धोकर ले जा रही हूं। जिसे सी कर मैं अपनी लाज ढक सकूंगी। उन संन्यासी को अपने दुःख में अन्दर तक दुःखों का भार डालकर कुछ आश्वस्त सी होकर अपना दुःख

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बांट कर चल दी, किन्तु इस देव की आंखों से सावन-भादों की झड़ी बह चली। यह इतना रोया जितना शायद चेतक के मरने पर प्रताप रोया होगा या माता सीता का वियोगी राम। हिमालय पिघल गया और बह चली गंगा-यमुना। वह नारी तो शायद रात्रि में सो गई होगी किन्तु यह सारी रात न सो पाया। देश की निर्धनता का ऐसा नग्न चित्र शायद इसने पहली बार ही देखा हो। और आश्चर्य देखो कि उस नारी का यह दुःख दयानन्द को वन-पर्वत की कन्दराओं तथा नदियों के तट से खींचकर पुनः संसार के बीच ले आया, जन-जन के दुःख मिटाने को। इस निरालेपन पर बिलहारी।

ये तो वेद भाष्यकार भी निराले थे, किन्तु वह तो एक स्वतन्त्र लेख या पुस्तक का विषय है। यहां तो केवल इतना ही कहना चाहूंगा कि यदि किसी को वेद की दृष्टि से वेद को देखना हो तो उसे दयानन्द का पल्ला पकड़ना ही पड़ेगा। अन्यथा वेदोदधि से खारा पानी ही हाथ आएगा, मोती नहीं।

यहां सुधारक भी अनेक हुए। कबीर तथा नरसी भगत ने मूर्ति पूजन आदि का विरोध किया। चारवाक ने मृतक श्राद्ध युक्ति एवं तर्कपूर्वक अयुक्त बताया, राजा राममोहन राय ने सती प्रथा को समाप्त कराया। किन्तु जब विद्वानों के सामने उनका कार्य लाया जाता था, तब ये हंसकर कह दिया करते थे कि ये लोग तो मूर्ख हैं। जब वेद में इन सब बातों का विधान है तो इनके भूंकने को कौन सुने? किन्तु इस निराले सुधारक का प्रश्न था कि ये बातें वेद में कहां हैं दिखाओ तो? और यह वेद के मन्त्रों से ही उन-उन कुरीतियों का खण्डन दिखाता था। यह सामर्थ्य महाभारत के पश्चात् किसी भी सुधारक में नहीं मिलता। यह निरालापन तो प्रभु ने इन्हें ही दिया था।

दयानन्द के निराले गुणों की एक लम्बी माला है। जितना गाओ, उतना ही अन्तरिक्ष की भांति आगे और आगे की ध्वनि मिलती जाती है। गगन के नक्षत्रों की भांति उसके गुणों की भी सीमा हमें दृष्टिगोचर नहीं होती। हमने न भारत की स्वतंत्रा में उसके योगदान की चर्चा की और न देश के उत्थान में उसके योगदान की लोटे में सागर समाता भी तो नहीं। फिर भी एका और निरालेपन की ओर ध्यान दिलाकर लेख को पू करेंगे सम्पादकों का ध्यान भी तो रखना है।

निराले दयानन्द तेरा जीना भी निराला था औ तेरा मरना भी निराला। योगाभ्यास करना, वेदभा करना, शास्त्रार्थ करना, शंका-समाधान और भाषण देन कितना थक जाता होगा मस्तिष्क। आजकल तो इत काम को सुनकर ही रक्तचाप बढ़ जाए। दिन में कार्याल आदि में आठ घंटे काम करके झुंझला जाता है व्यक्ति पर तू जीना जानता था। कला थी तेरे पास जीवन की एक साधु ने जब एक व्यक्ति को वेदभाष्य के लिए तु रुपये देते देखा तो क्रोध में कहा आपको संन्यासी होक धातु को स्पर्श करते लज्जा नहीं आती? उस साधु क मुंडा सर देखकर आपने कहा था आप तो यह सि शायद जूतों से मुंडवाकर आये हो और वह निरुत्त होकर चला गया था। इतनी व्यवस्तता में भी इतन ज़िन्दादिली। मृत्यु का समय आया। क्षौर कराया, व बदले, जाना है ना युद्ध में विजय प्राप्त करके मां पास। सबको द्वार खोलने तथा अपने पीछे खड़े होने क आदेश दिया। मातृ मिलन में कोई बाधक क्यों बने औ मृत्यु का समय चुना दक्षिणायन तथा कृष्णपक्ष। आजीव अज्ञान से लड़ने वाला योद्धा क्या इस अज्ञान को बिन हटाये ही मर जाए कि उत्तरायण तथा शुक्ल पक्ष क मृत्यु मुक्तिदाता है तथा तद्विपरीत नरकदायक। मुक्ति को दयानन्द की आवश्यकता थी दयानन्द को नहीं। मृत् भिक्षुक की भांति शरीररूपी वस्त्र मांगने को खड़ी है इसे वस्त्र से क्या लगाव। जैसे बालक मां को साम खड़ी देखकर खिलौने छोड़कर माता की गोद की ओ दौड़ता है तथा असीम आनन्द से भर उठता है वह अवस्था आज दयानन्द की है। मुख पर प्रसन्नता क साम्राज्य। लीलाधर की लीला की प्रशंसा करता या हंसत हुआ चल दिया है जगन्माता की गोद में। शोक न खेद महर्षि तेरी मृत्यु भी निराली। बोलो निराले महर्षि दयानन्द की जय।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द

❑ डॉ० शिवकुमार शास्त्री

विशाल शरीर में विशाल आत्मा, स्वामी श्रद्धानन्द इस सत्य के मूर्तिमान स्वरूप थे। गांधी जी ने मतभेद के वावजूद अपने उद्गार प्रकट करते हुए कहा था—

"भय के सामने उन्होंने कभी सिर नहीं झुकाया। उनसे बढ़कर बहादुर मैंने संसार में दूसरा नहीं देखा। मरने का डर उन्हें नहीं था, क्योंकि वे सच्चे आस्तिक, ईश्वरवादी आदमी थे। मैं साक्षी हूं कि देश के लिए अपना शरीर कुर्बान करने की उन्होंने प्रतिज्ञा ली थी। वे अनाथ-बन्धु थे। अछूतों के लिए जितना उन्होंने किया, उससे अधिक हिन्दुस्तान में दूसरे किसी ने नहीं किया। वे कर्मवीर थे, वाक्शूर नहीं। वे वीर के समान जीए और वीर के समान मरे।"

पं० जवाहर लाल नेहरू अनेक व्यक्तियों के तीव्र आलोचक रहे हैं, परन्तु स्वामी जी के लिए उन्होंने लिखा— "स्वामी श्रद्धानन्द में निडरता की मात्रा आश्चर्यजनक थी। लम्बा कद, भव्य मूर्ति, संन्यासी वेश, बहुत उम्र हो जाने पर भी बिल्कुल सीधी चमकती हुई आंखें और चेहरे पर कभी-कभी दूसरों की कमजोरियों पर आने वाली चिड़चिड़ाहट या गुस्से की छया का गुजरना—मैं इस सजीव तस्वीर को कैसे भूल सकता हूं। अक्सर वह मेरी आंखों के सामने आ जाती है।"

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का सारा जीवन मानों इस मूल्यांकन की सही व्याख्या है। सामन्ती युग में उनके पिता पुलिस अधिकारी थे। अतः प्रारम्भिक जीवन में उन्हें वे सारी भोग्य सामग्री प्राप्त थीं, जो किसी राजा और रईस को होती हैं। मांस, मदिरा और नारी उनसे कुछ भी नहीं छूटा। वे अपने को कट्टर नास्तिक भी मानने लगे थे, परन्तु बरेली में स्वामी दयानन्द जी महाराज के साक्षात्कार एवं तर्कशक्ति ने उनकी काया पलट दी। लाहौर आर्य समाज का सदस्य बनने पर उनके जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन आया। महर्षि द्वारा स्थापित आर्य समाज को पुष्पित और पल्लवित करने में स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का सबसे अधिक योगदान रहा। उन्होंने 'स्वाहा, इदन्न मम' को मूर्त्तरूप देकर गुरुकुल की स्थापना की और सबसे पहले अपने जिगर के टुकड़ों—हरीश और इन्द्र को प्रविष्ट किया।

विदेशी शासन से आर्थिक सहायता लिए बिना और सरकार से अपनी परीक्षाओं को मान्यता दिलाये बिना मातृभाषा द्वारा शिक्षित-दीक्षित गुरुकुल कांगड़ी ने जिन स्नातकों को जीवन क्षेत्र में उतारा वे सर्वत्र सफल रहे। तत्कालीन कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग के प्रधान श्री सैडलर ने स्वीकार किया—

"मातृभाषा द्वारा ऊंची शिक्षा देने के परीक्षण में गुरुकुल को अभूतपूर्व सफलता प्राप्त हुई है।"

१८ वर्ष तक गुरुकुल के आचार्य पद पर सुशोभित रह कर जहां एक ओर उन्होंने ब्रह्मचर्य प्रधान राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली का पुनरुद्धार किया, वहां अनेक विदेशियों को भी आकर्षित किया। बहुत से व्यक्ति वहां हिन्दी पढ़ने आये तो बहुत से यह जानने के लिए भी आये कि यहां विदेशी शासन को उखाड़ने का कौन सा षड्यंत्र चल रहा है।

महात्मा गांधी ने जिस समय असहयोग आन्दोलन का सूत्रपात किया, उस समय स्वामी जी उनके साथ आ गये। ३० मार्च, १९१९ को दिल्ली में पूर्ण हड़ताल रही। इस जुलूस का नेतृत्व करते हुए स्वामी जी ने सिपाहियों की संगीनों के समक्ष छाती तानकर कहा था—"लो मैं खड़ा हूं, गोली मारो।"

४ अप्रैल १९१९ को उन्होंने दिल्ली की जामा मस्जिद से विशाल जनसमूह को सच्ची साम्प्रदायिकता का उपदेश देते हुए देश की स्वतंत्रता के लिए सर्वस्व बलिदान कर देने की प्रेरणा दी थी। उस उपदेश का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रारम्भ उन्होंने—

ओ३म् त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो वभूविथ। अधाते सुम्नमीमहे ॥

इस वेदमन्त्र से किया था और समाप्ति 'ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्ति' से की थी।

स्वामी श्रद्धानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होंने १९१९ में अमृतसर कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष के रूप में राष्ट्रीय महासभा मंच पर हिन्दी में भाषण दिया। महात्मा गांधी ने उनके भाषण के सम्बन्ध में लिखा था—

"स्वागत समिति के अध्यक्ष, स्वामी श्रद्धानन्द जी का भाषण उच्चता, पवित्रता गम्भीरता और सच्चाई का नमूना था। वक्ता के व्यक्तित्व की छाप उसमें आदि से अन्त तक लगी हुई थी। मनुष्यमात्र के प्रति उसमें सद्भावना प्रकट की गई थी।"

२३ दिसम्बर १९२६, को मध्याह्न जब प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति स्वामी जी के दर्शनार्थ गये तो उन्होंने देखा कि सब कमरे खुले पड़े हैं और सभी गाढ़ निद्रा में निमग्न हैं। स्वामी जी की निद्रा में बाधा डालना अनुचित समझ और सायंकाल दर्शन का विचार कर प्रो० इन्द्र जी वापस चले गये।

लगभग ढाई बजे डॉ० सुखदेव जी, कन्या गुरुकुल देहरादून की आचार्य विद्यावती जी एवं भक्त जमनादास आदि दर्शनार्थ आए। पौने चार बजे स्वामी जी ने सबको विदा किया।

सेवक धर्मसिंह ने कमोड ला दिया और स्वामी जी नित्यकर्मों से निवृत्त हो मसनद के सहारे बैठ गये। कमोड उठाकर बाहर रखा ही था कि सीढ़ियों से एक युवक आता दिखाई दिया। धर्मसिंह ने उसे रोकने का प्रयास किया परन्तु उसने स्वामी जी के दर्शनों का आग्रह किया। स्वामी जी ने आवाज सुनकर कहा—"कौन है? अन्दर आने दो।" अब्दुल रशीद नामक उस धर्मान्ध मुसलमान ने आते ही कहा—"स्वामी जी! मैं आपसे इस्लाम के सम्बन्ध में कुछ वार्तालाप करना चाहता हूं।" स्वामी जी ने कहा—"भाई मैं बीमार हूं। तुम्हारी दुआ से राज़ी हो जाऊंगा तो बातचीत करूंगा। इतने में उसने पानी मांगा। स्वामी जी के आदेश पर सेवक ने उसे पानी पिला दिया। पानी पीकर भीतर आते ही उस नराधम ने मसनद के सहारे बैठे हुए स्वामी जी पर पिस्तौल से गोली चला दी। पलकों के झपकते ही दो फायर हो गये। लपक कर सेवक ने हत्यारे को पीछे से पकड़ा। इतने में उसने तीसरा फायर भी कर दिया।

धर्मसिंह ने अपनी जान की परवाह न कर उसका सामना किया तो उस पर भी गोली दाग दी गई। घायल होकर धर्मसिंह जमीन पर लेट गया। हत्यारा भागने के प्रयत्न में था कि पं० धर्मपाल विद्यालंकार ने आकर उसको दबोच लिया। एक हाथ रिवाल्वर वाले हाथ पर और दूसरा उस पर रखे हुए उसे आधे घंटे तक दबाए रखा।

लुढ़कते-लुढ़कते धर्मसिंह ने मकान के छज्जे पर पहुंच कर शोर किया तो लोग दौड़ चले आये। स्वामी जी की मृत्यु का समाचार बिजली की भांति सारे शहर में फैल गया। चारों ओर मातम छा गया। जिसने सुना वही सन्न रह गया। उनकी मृत्यु का समाचार सुनकर महात्मा गांधी के मुंह से सहसा निकला—"शानदार जीवन का शानदार अन्त।"

बलिदान के तीसरे दिन २५ दिसम्बर, १९२६ शनिवार को अर्थी का जो विराट् जुलूस निकला वह बड़े-बड़े सम्राटों को भी रिझाने वाला था। मीलों तक नरमुण्ड ही नरमुण्ड दिखाई पड़ते थे। अपार जनसमूह का उस दिन दिल्ली में समाना कठिन हो रहा था। लाहौरी गेट से प्रारम्भ हुई यह शवयात्रा चांदनी चौक क्षेत्र के मुख्य-मुख्य भागों से होती हुई दोपहर बाद यमुना नदी के किनारे पहुंची। अपने हृदय सम्राट् के नश्वर शरीर को अग्निदेव की भेंट कर जनसमूह अपने घरों को इस प्रकार लौटा जैसे उसका सर्वस्व लुट गया हो।

हमें प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को अक्षुण्ण रखते हुए छुआछूत की भावना को समूल नष्ट करने का भरसक प्रयास करेंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महानता के स्तम्भ : महात्मा हंसराज

श्री अमर स्वामी सरस्वती

आर्यसमाज के तपोधन पूज्य महात्मा हंसराज जी का जन्मदिवस १९ अप्रैल को सारे देश में समारोहपूर्वक मनाया जाता है।

मैं जब उनके महान् व्यक्तित्व के सम्बन्ध में अपनी स्मृतियों को ताजा करता हूं तो बड़े आश्चर्यमिश्रित गौरव का अनुभव करता हूं कि मुझे भी लगातार २० वर्ष तक उनके चरणों में बैठकर आर्यसमाज की सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मानवीय स्वभाव की इतनी ऊंचाई व श्रेष्ठता मैंने अन्यत्र कहीं नहीं देखी। मैंने अत्यन्त निकट से उनके सभी रूपों को देखा। इन २० वर्षों में केवल एक बार क्रोध से लाल उनकी आंखों को देखा। हमारे एक माननीय पंडित जी ने सनातन धर्म के एक वितण्डावादी शास्त्रार्थकर्त्ता की हेत्वाभासी युक्तियों के जाल में फंसकर महान् महर्षि के कागज़ पर बने चित्र पर जूता मार दिया था। महात्मा जी ने जब समाचार सुना तो क्रोध में भरकर बोले वहां कोई आर्यसमाजी नहीं था जो उसकी बूथी (जबड़ा) तोड़ देता। दूसरी बार मैंने उनको आंसू बहाते देखा। जब स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान का समाचार उन्होंने सुना तो शोकाकुल होकर रो उठे। ऐसा था उनका उच्च मानवीय स्वभाव।

सामान्यतया सदा ही मैंने उनके अन्दर सागर की सी गहराई देखी। उनके विरोधी प्रायः बड़े ही कड़वे शब्दों में उनको पत्र लिखते थे। जब पत्र उनके पास आते तो वे क्रोधित होने के बजाय मुस्कुरा देते थे और उनका उत्तर कभी नहीं देते थे। ना हीं इसका कोई बुरा मानते थे।

बीस वर्ष में मैंने उनके मुख से कोई बात झूठी या निरर्थक नहीं सुनी। एक विशेषता उनमें देखी कि जिस बात को वे मुख से कहकर बताना नहीं चाहते थे, मौन हो जाते थे परन्तु झूठ कभी नहीं बोलते थे। मैंने एक बार एक बात पूछी तो हंसकर बोले : पण्डितजी यह बात मत पूछिए यह मैं नहीं बताऊंगा। औरों की भांति यह भी कहा जा सकता था कि यह बात ऐसा नहीं है, परन्तु असत्य का सहारा कभी नहीं लिया और सत्य का दामन कभी नहीं छोड़ा।

कलकत्ता कांग्रेस में लाला लाजपत राय जी अध्यक्ष थे। जब वे वहां से लौटकर लाहौर आये तो जिन स्कूल, कालेजों की स्थापना में उन्होंने जीवन के अनमोल समय का सदुपयोग कर शिक्षा जगत् में क्रान्ति उत्पन्न कर दी थी उसी के सम्बन्ध में उनके विचार सर्वथा बदल गये थे। फलतः उन्होंने महात्मा गांधी की इस घोषणा के समर्थन में कि कुछ वर्षों के लिए स्कूल व कालेज बन्द कर दिये जाएं अपनी सम्मति बदल डाली। इससे पहले लाला जी गांधी जी के उक्त विचारों के विरोधी थे। कलकत्ता कांग्रेस से लौटकर उन्होंने तत्कालीन समाचार पत्रों में एक वक्तव्य दिया जिसमें लिखा था कि महात्मा हंसराज जी को डी० ए० वी० कालेज बन्द कर देना चाहिए। इस वक्तव्य का प्रभाव स्वभावतः कालेज के विद्यार्थियों पर बहुत हुआ। सारे पंजाब में खलबली मच गई कि डी० ए० वी० कालेज का अब क्या बनेगा। इसपर एक वक्तव्य द्वारा महात्मा हंसराज जी ने अपना स्पष्टीकरण किया जिसमें लिखा— "श्री लाला लाजपत राय डी० ए० वी० कालेज के केवल संस्थापक ही नहीं हैं वे उसके संचालक भी रहे हैं। मेरे व लाला जी के बड़े घनिष्ठ सम्बन्ध हैं। वे हर एक बात मुझसे कह सकते हैं और मैं उनसे कह सकता हूं। लाला जी के घर से मेरे घर का पांच मिनट का मार्ग है परन्तु उन्होंने मुझसे बात न करके समाचार पत्रों में वक्तव्य प्रकाशित किया है। समाचार पत्रों में वक्तव्य प्रकाशित किया है वे कभी भी मुझे बुला सकते थे और कभी भी मेरे पास तक आ सकते थे। परन्तु उन्होंने मुझसे बात न करके समाचार पत्रों में वक्तव्य प्रकाशित करना ठीक समझा। इसका मुझे आश्चर्य है। मुझे यह व्यवहार समझ में नहीं आया। साथ ही यह बात है कि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैं न तो कालेज का प्रिंसिपल हूं और न ही मैं डी० ए० वी० कालेज कमेटी का प्रधान हूं। मैं तो एक सामान्य सदस्य हूं। कालेज को बन्द करने या न करने का अधिकार मुझे कैसे है यह लाला जी ही अधिक जानते हैं। मैं तो केवल अपने अधिकारों को ही जानता हूं, क्योंकि मैं कमेटी का एक साधारण सदस्य मात्र हूं। श्री लाला साईंदास जी डी० ए० वी० कालेज के प्रिंसिपल हैं। कालेज के बारे में वे ही श्री प्रधान जी की सम्मति से कुछ कह या कर सकते हैं। इसके पश्चात् दूसरे दिन भी लाला साईदास जी का एक वक्तव्य समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ जो इस प्रकार था— मैं अपने कालेज में तीन प्रकार के विद्यार्थी देखता हूं। एक वे हैं जो यूनीवर्सिटी शिक्षा के विद्यार्थी हैं। दूसरे वे हैं जो यूनिवर्सिटी से सम्बन्ध न रखते हुए शिक्षा लेना चाहते हैं। तीसरे वे विद्यार्थी हैं जो इस समय दोनों ही प्रकार की शिक्षा न लेकर केवल कांग्रेस का ही काम करना चाहते हैं। तीनों प्रकार के विद्यार्थियों के लिए कालेज की ओर से कोई रुकावट नहीं है। जो यूनिवर्सिटी की शिक्षा लेना चाहते हैं वे ले ही रहे हैं। उनके लिए कालेज को बन्द करना उनके साथ अन्याय करना है। दूसरे वे विद्यार्थी हैं जो यूनिवर्सिटी की शिक्षा नहीं लेना चाहते स्वतंत्र रूप से पढ़ना चाहते हैं। उनके लिए मैं घोषणा करता हूं कि ऐसे १०० विद्यार्थी अपने माता-पिता से लिखवाकर दे देवें तो डी० ए० वी० कालेज कमेटी एक नान यूनीवर्सिटी कालेज उनके लिए खोल देगी। तीसरे विद्यार्थी वे हैं जो कांग्रेस आन्दोलन में भाग लेना चाहते हैं और आवश्यकता पड़ने पर जेल जाने को भी तैयार हैं। उनके लिए भी द्वार खुला है। वे जब चाहें कालेज छोड़ सकते हैं और जब फिर कभी वे कालेज में आना चाहेंगे तो उनके लिए कालेज का द्वार खुला है उनके लिए केवल इस कारण से कोई बाधा नहीं होगी कि वे कांग्रेस में क्यों गये थे। वो जब चाहें कालेज में अपना प्रवेश प्राप्त कर सकते हैं। इसके पश्चात् कालेज में एक दिन भी कोई हलचल नहीं हुई। न ही एक दिन के लिए भी कालेज बन्द हुआ।

लाहौर में नान यूनीवर्सिटी "नेशनल कालेज" भी खुला, तिलक स्कूल ऑफ पोलिटिक्स भी खुला। अब तो लाहौर पाकिस्तान में चला गया परन्तु ये दोनों बहुत पहले ही बन्द हो गई थीं। जिनका कहीं नामोनिशान भी शेष नहीं रहा, परन्तु डी० ए० संस्था आज तक जीवित है। दिन पर दिन नये-नये कीर्तिमान स्थापित कर रही है।

नान यूनीवर्सिटी नेशनल कालेज के प्रिं लाला छबीलदास जी एम. ए. बनाये गये थे जो कांगड़ी के आचार्य प्रो० रामदेव जी के जामात तिलक स्कूल ऑफ पोलिटिक्स के प्रिंसिपल देवता भाई परमानन्द जी नियुक्त हुए थे। दोनों संस्था ही समाप्त हो गई। कारण स्पष्ट है कि राज आन्दोलन एक सामयिक भावावेश होता है जबकि ए० वी० का आधार महर्षि की शाश्वत विचारधा

इसके साथ ही एक महत्त्वपूर्ण अनुभव यह माननीय लाला लाजपत राय जी के पूज्य पित राधाकिशन जी के नाम पर जगरांवा में एक हाई था जिसका सम्बन्ध यूनीवर्सिटी से था। लाला विचारों से प्रभावित हाई स्कूल के अधिकारि यूनिवसिर्टी से सम्बन्ध विच्छेद कर लिया। फलत स्कूल ही बन्द हो गया। इसके अधिकारियों को यूनिव से सम्बन्ध बनाना पड़ा तब स्कूल चल सका। मेरे पर महात्मा हंसराज जी की दृढ़ता, दूरदर्शिता, विन शालीनता, पूर्ण सेवा के दिव्य गुणों का ऐसा प्रभाव जैसा आज तक किसी नेता का नहीं पड़ा।

मैं आशा करता हूं कि लोग मुझे पक्षपाती समझेंगे अपितु वे स्वयं भी महात्मा जी के इस उ चरित्र से प्रेरणा प्राप्त कर आर्य समाज के सेवाका व उपयोगी संस्थाओं के संचालन में गम्भीरता, वि विनम्रता, सेवाभाव को कभी हाथ से नहीं जाने वास्तव में इन १०० से ऊपर वर्षों में समाज भी रूप में काफी विकास कर चुका है परन्तु प्रायः उत्त के अभाव में विकास व उन्नति का वह रूप नहीं पाता जो पुरानी पीढ़ी की नेताओं के पास थोड़े से साधन होते हुए भी बन गया था। आज फिर दे उसी दिव्य, शालीन व परोपकारी सेवाभाव आवश्यकता है तभी समाज व राष्ट्र का कल्याण हो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रक्तसाक्षी पं० लेखराम

□ प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु

पं० श्री लेखरामजी ने श्री कन्हैयालाल अलखधारी के नीतिप्रकाश पत्र में महर्षि दयानन्द का नाम पढ़ा तो ऋषि दर्शन की चाह से अजमेर पहुंचे। १७ मई १८८१ को महर्षि के दर्शन किये और कुछ शंकाएं उनके सामने रखीं। महर्षि ने सब प्रश्नों के उत्तर दिये। लेखराम तृप्त होकर घर लौटे और उसी दिन से अपने आपको महर्षि के मिशन की भेंट कर दिया। तन, मन, धन सब कुछ वैदिक धर्म व जाति सेवा के लिए समर्पित हो गया।

६ मार्च १८९७ को धर्म की वेदी पर आपने अपना बलिदान दे दिया। महाकवि तिलोकचन्द महरूम ने ठीक ही तो लिखा है कि–

'निसार ऐसी मौत पर है जिन्दगी हज़ार की।'

पं० लेखराम को अनेक बार मृत्यु की धमकियां दी गई। मिर्जा गुलाम अहमद ने एक लम्बी फारसी कविता में उन्हें लिखा था कि "ऐ मूर्ख पथिक! मुहम्मद की तेज काटने वाली तलवार से डर।"

मृत्यञ्जय दयानन्द के शिष्य ने स्वरचित फारसी कविता में लिखा कि "मैं इस पथ पर मारा जाऊं या जलाया जाऊं फिर भी वेद पथ से मुख न मोडूंगा। मैं उस एक परमेश्वर के सिवा किसी की भी परवाह नहीं करता। मैं सब मित्र बन्धु व सर्वस्व इस राह पर बार दूं।"

सचमुच लेखराम ने इस पथ पर सर्वस्व वार डारा। पं० लेखराम की सूझ अद्‌भुत थी। अपनी ईश्वर प्रदत्त सूझें से उन्होंने वैदिक धर्म के विरोधियों के छक्के छुड़ा दिये। विधर्मी भी उनकी योग्यता का लोहा मानते थे। मौलाना रफीक दिलावरी नाम के एक मुसलमान ने अपनी एक पुस्तक पण्डित जी की एक घटना दी है। जब साहसी लेखराम ने कादियां जाकर मिर्जा गुलाम अहमद को कहा कि दिखाओ कोई चमत्कार या शास्त्रार्थ करो तो मिर्जा घर से बाहर भी न निकला। पं० लेखराम उसके इलहामी कोठे में पहुंच गये और सत्य-असत्य का निर्णय करने के लिए कहा। वार्तालाप में मोजजा (चमत्कार) की चर्चा चली तो पण्डित जी ने कहा कि कुरान में तो मोजजा शब्द ही नहीं। मिर्जा साहिब को हठ था कि यह शब्द कुरान में है। पण्डित जी ने झोले से कुरान निकालकर आगे रख दिया और कहा कि दिखाओ कहां है? मिर्जा साहिब पृष्ठ उलट-पुलटकर रह गये। शब्द हो तो मिले।

इसपर मौलाना रफीक दिलावरी ने लिखा है कि मिर्जा साहिब दावा तो नबी होने का करते थे परन्तु पण्डित लेखराम के सामने उनके कुरान के ज्ञान की पोल खुल गई। पण्डित लेखराम का कथन सत्य था।

पण्डित जी का धर्मभाव व उत्साह इतना था कि स्वयं मिर्जा गुलाम अहमद ने अपनी एक पुस्तक में लिखा है कि पण्डित जी लाहौर में एक मस्जिद में मिर्जा गुलाम अहमद को मिलने जा पहुंचे परन्तु मिर्जा जी ने बात न की। नमाज का समय है यह कहकर पिण्ड छुड़वाया। पण्डित जी ने मस्जिद में मिर्जा जी को नमस्ते कही। आज तो लोग नमस्ते को तजकर गुड मार्निंग आदि के अभ्यस्त हो रहे हैं।

एक ईसाई पत्रिका 'नूर अफशां' की तब बड़ी प्रसिद्धि थी। इस पत्रिका के सम्पादक ने पण्डित जी के पाण्डित्य व सूझ की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि ऐसी युक्तियां तो हमने न कभी सुनी और न पढ़ी है। अपने पादरियों के ज्ञान की तुलना में भी प्रशंसा की है।

पण्डित जी ने रक्त की धार बहाकर दिग्विजय प्राप्त की मिर्जा गुलाम अहमद ने स्वयं लिखा है कि ईश्वर की यह इच्छा थी कि लेखराम शहीद हो सो इसीलिए उसने एक मनुष्य के मन को उभारा। मिर्जा जी पण्डित जी को शिष्ट शब्दों में सम्बोधित भी न
पद्य में लिखा था–

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लेखू मरा था कटकर, जिसकी दुआ से आखिर।

घर-घर पड़ा था मातम वह मिर्जा यही है॥

यह घृणित पद्य रचने वाले मिर्जा ने पण्डित जी को शहीद माना। क्या यह कोई साधारण बात है? मिर्जा जी का एक और पद्य है—

नास्तिक मत के वेद हैं हामी।

है यही मुद्दा वेदों का॥

अर्थात् वेद नास्तिकता के पोषक हैं। यही वेदों का प्रयोजन है। पण्डित जी के बलिदान के पश्चात् मिर्जा जी ने अपने निधन से कुछ ही समय पूर्व यह लिखा—

"हम भगवान् से डरकर वेद को ईश्वरीय वाणी मानते हैं।"

क्या यह पं० लेखराम की दिग्विजय नहीं है? एक मुसलमान ने सूरत में पं० शान्तिस्वरूप जी (जो पहले मुसलमान थे) को कहा था कि मैंने पण्डित लेखराम जैसा खुदातर्स (ईश्वरभक्त) कभी नहीं देखा। वीर लेखराम के ईश्वर विश्वास के क्या कहने! स्वामी दर्शनानन्द जी को लाहौर के म्यु० हस्पताल के एक मेडिकल कालेज के छात्र ने यह लिखा था कि मैंने वीर लेखराम को अन्तिम समय में हस्पताल में देखा। छुरा खाकर, पेट फड़वाकर, अतड़ियां कटवाकर एक बार भी उसने 'आह' का शब्द मुख से न निकाला। गायत्री आदि वेदमन्त्रों का उच्चारण करते हुए प्राण त्यागे।

कहीं भी हो, किसी भी अवस्था में क्यों न हो, इस ईश्वर पुत्र ने कभी भी सन्ध्या वन्दन के नियम का पालन करने में प्रमाद न किया। शौच गये। जल न मिला फिर भी सन्ध्या का समय था, वे ध्यान में बैठ गये। उनका कथन था सन्ध्या मुख्य है हाथ-मुंह धोना यह गौण है।

यात्रा से जालन्धर पहुंचें। वहां से आगे कहीं पहुंचने का बुलावा आ गया। विश्राम और लेखराम दोनों का मेल हो ही नहीं सकता। सर्दी आरम्भ हो गई। वस्त्र मैले हैं। जाना आवश्यक है। महात्मा मुंशीराम से एक धुला कुर्ता मांगा। उन्होंने अपना कुर्ता आर्यपथिक को दिया। निराले लेखराम ने धुला कुर्ता नीचे पहनकर ऊपर मैला पहन लिया। सर्दी से बचाव के लिए पंजा[b] में दो कुर्त्ते भी पहन लेते थे। महात्मा मुंशीराम ने क[ह]
"यह क्या किया? उजला कुर्ता नीचे और मैला ऊपर[?]" लेखराम बोले, मैं समझता हूं कि आपको यह भय है[कि] लोग ऐसा देखकर आपको कहेंगे कि आपके मित्र ने [य]ह क्या कर रखा है? मुझे इस बात की चिन्ता नहीं। शरी[र] के साथ मैला कुर्त्ता लगेगा तो हानि मुझे होगी। इसलि[ए] अन्दर उजला ही होना चाहिए।"

यह सुनकर महात्मा मुंशीराम चुप हो गये। स्वा[मी] स्वतन्त्रानन्द जी कहा करते थे यही वैदिक धर्म का म[र्म] है कि आपके भीतर मैल न हो। मन शुद्ध हो, आ[त्मा] निर्मल हो।

सुन्दर सिंह नाम का एक सिख अपने एक [अ]... सिख मित्र के साथ मुसलमान बनने को तैयार हो ग[या।] दोनों ही सेवा में थे। सुन्दरसिंह का धर्म पुस्तकों [का] अच्छा अध्ययन था। उसकी शंकाओं का कोई सिख उ[त्तर] न दे सका। सिंहसभा स्यालकोट ने वहां के आर्य सम[ाज] से विनती करके पं० लेखराम जी को बुलवाया। सि[खों] को भी यही विश्वास था कि पं० लेखराम ही उ[से] मुसलमान बनने से बचा सकते हैं। पण्डित जी स्यालक[ोट] पधारे। सुन्दरसिंह ने शास्त्रार्थ किया। वह तो विश्वा[स से] मुसलमान बन ही चुका था। केवल केश कटवाने ही [शेष] थे। वीर लेखराम की ज्ञानप्रसूता वाणी से ऐसा प्रभा[व] हुआ कि सन्ध्या व संस्कृत सीखने का तत्काल व्रत लि[या।] पण्डित जी का पक्का व सच्चा भक्त बन गया। सब [सि]... गद्गद हो गये। लेखराम का जय-जयकार होने लग[ा।]

जालन्धर में सेना के सिखों ने उनका व्याख्[यान] सुनकर उन्हें कंधों पर उठाकर हर्षोल्लास व्यक्त कि[या।]

> **आइना चेहरे का हर दाग़ अयां कर देता है,**
> **यह उसकी खसलत का तकाज़ा है,**
> **साफ-साफ कह देना।**
> **सत्यार्थ की तनक़ीद से नाराज़ क्यों हो,**
> **मुँह अपना धो डालो गुस्सा किस बात का।**

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यसमाज

□ श्री रामधारी सिंह 'दिनकर'

उन्नीसवीं सदी के हिन्दू नवोत्थान के इतिहास का पृष्ठ-पृष्ठ बतलाता है कि जब यूरोप वाले भारतवर्ष में आये, तब यहां के धर्म और संस्कृति पर रूढ़ि की पर्तें जमी हुई थीं एवं यूरोप के मुकाबले में उठने के लिए यह आवश्यक हो गया था कि ये पर्तें एकदम उखाड़ फेंकी जाएं और हिन्दुत्व का वह रूप प्रकट किया जाए जो निर्मल और बुद्धिगम्य हो। स्वामी जी के मत से यह हिन्दुत्व पौराणिक कल्पनाओं के नीचे दबा हुआ था। उसपर अनेक स्मृतियों की धूल जम गयी थी एवं वेद के बाद के सहस्रों वर्षों में हिन्दुओं ने जो रूढ़ियां और अन्धविश्वास अर्जित किये थे उनहे ढूहों के नीचे यह धर्म दबा पड़ा था। राममोहन राय, रानाडे, केशवचन्द्र और तिलक से भिन्न स्वामी दयानन्द की विशेषता यह रही कि उन्होंने धीरे-धीरे पपड़ियां तोड़ने का काम न करके, उन्हें एक ही चोट में साफ कर देने का निश्चय किया। परिवर्तन जब धीरे-धीरे आता है तब सुधार कहलाता है किन्तु वही जब वेग से पहुंच जाता है, तब उसे क्रान्ति कहते हैं। दयानन्द के अन्य समकालीन सुधारक केवल सुधारक मात्र थे, किन्तु दयानन्द क्रान्ति के वेग से आये और उन्होंने निश्चलभाव से यह घोषणा कर दी कि हिन्दू धर्म ग्रंथों में केवल वेद ही मान्य हैं। अन्य शास्त्रों और पुराणों की बातें बुद्धि की कसौटी पर कसे बिना मानी नहीं जानी चाहिए। छह शास्त्रों और अठारह पुराणों को उन्होंने एक ही झटके में साफ कर दिया। वेदों में मूर्तिपूजा, अवतारवाद, तीर्थों और अनेक पौराणिक अनुष्ठानों का समर्थन नहीं था, अतएव स्वामी जी ने इन सारे कृत्यों और विश्वासों को गलत घोषित किया।

वेद को छोड़कर कोई अन्य धर्मग्रंथ प्रमाण नहीं है, इस सत्य का प्रचार करने के लिए स्वामी जी ने सारे देश का दौरा करना आरम्भ किया और जहां-जहां वे गये, प्राचीन परम्परा के पण्डित और विद्वान् उनसे हार मानते गये। संस्कृत भाषा का उन्हें अगाध ज्ञान था। संस्कृत में वे धारावाहिक रूप से बोलते थे। साथ ही, वे प्रचण्ड तार्किक थे। उन्होंने ईसाई और मुसलिम धर्मग्रंथों का भी भली-भांति मन्थन किया था। अतएव अकेले ही उन्होंने तीन-तीन मोर्चों पर संघर्ष आरम्भ कर दिया। दो मोर्चे तो ईसाइयत और इस्लाम के थे, किन्तु तीसरा मोर्चा सनातन धर्मी हिन्दुओं का था जिनसे जूझने मे स्वामी जी को अनेक-अनेक अपमान, कुत्सा, कलंक और कष्ट झेलने पड़े। उनके प्रचण्ड शत्रु ईसाई और मुसलमान नहीं, सनातनी हिन्दू ही निकले और कहते हैं, अन्त में इन्हीं हिन्दुओं के षड्यंत्र में उनका प्राणान्त भी हुआ। दयानन्द ने बुद्धिवाद की जो मशाल जलायी थी, उसका कोई जवाब नहीं था। वे जो कुछ कह रहे थे, उसका उत्तर न तो मुसलमान दे सकते थे, न ईसाई, न पुराणों पर पलने वाले हिन्दू पण्डित और विद्वान्। हिन्दू नवोत्थान अब पूरे प्रकाश में आ गया था और अनेक समझदार लोग, मन ही मन, यह अनुभव करने लगे थे कि, सच ही, पौराणिक धर्म में कोई सार नहीं है।

आर्यसमाज की स्थापना

सन् १८७२ ई० में स्वामी जी कलकत्ता पधारे। वहां देवेन्द्रनाथ ठाकुर और केशवचन्द्र सेन ने उनका बड़ा सत्कार किया। ब्रह्मसमाजियों से उनका विचार-विमर्श भी हुआ, किन्तु ईसाइयत से प्रभावित ब्रह्मसमाजी विद्वान् पुनर्जन्म और वेद की प्रमाणिकता के विषय में स्वामी जी से एकमत नहीं हो सके। कहते हैं कलकत्ता में ही केशवचन्द्र सेन ने स्वामी जी को यह सलाह दी कि आप संस्कृत छोड़कर हिन्दी में बोलना आरम्भ करें तो देश का असीम उपकार हो सकता है। तभी से स्वामी जी के व्याख्यानों की भाषा हिन्दी हो गई और हिन्दी प्रान्तों में उन्हें अगणित अनुयायी मिलने लगे। कलकत्ता से स्वामी जी बम्बई पधारे और वहीं १० अप्रैल १८७५ ई० को उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की। बम्बई में उनके साथ प्रार्थना समाज वालों ने भी विचार-विमर्श किया, किन्तु, यह समाज तो ब्रह्मसमाज का ही बम्बई संस्करण था। अतएव, स्वामी जी से इस समाज के लोग भी एकमत नहीं हो सके।

बम्बई से लौटकर स्वामी जी दिल्ली आये। यहां उन्होंने सत्यानुसंधान के लिए ईसाई, मुसलमान और पण्डितों की एक सभा बुलायी, किन्तु दो दिनों के विचार-विमर्श के बाद भी लोग किसी निष्कर्ष पर नहीं आ सके। दिल्ली से स्वामी जी पंजाब गये। पंजाब में उनके प्रति बहुत उत्साह जाग्रत् हुआ और सारे प्रान्त में आर्यसमाज की शाखाएं खुलने लगीं। तभी से पंजाब आर्यसमाजियों का प्रधान गढ़ रहा है।

स्वामी जी केदेहावसान के बाद मादाम ब्लेवास्की ने लिखा था कि "जनसमूह के उबलते हुए क्रोध के सामने कोई संगमरमर की मूर्ति भी स्वामी जी से अधिक अडिग नहीं हो सकती थी। एक बार हमने उन्हें काम करते देखा था। उन्होंने अपने सभी विश्वासी अनुयायियों को यह कहकर अलग हटा दिया कि तुम्हें हमारी रक्षा करने की कोई आवश्यकता नहीं है। भीड़ के सामने वे अकेले ही खड़े हो गये। लोग उतावले हो रहे थे। क्रुद्ध सिंह के समान वे स्वामी जी पर टूट पड़ने को तैयार थे, किन्तु स्वामी जी की धीरता ज्यों की त्यों बनी रही। यह बिल्कुल सही बात है कि शंकराचार्य के बाद से भारत में कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं हुआ जो स्वामी जी से बड़ा संस्कृतज्ञ, उनसे बड़ा दार्शनिक, उनसे अधिक तेजस्वी वक्ता तथा कुरीतियों पर टूट पड़ने में उनसे अधिक निर्भीक रहा हो।" स्वामी जी की मृत्यु के बाद थियोसोफिस्ट अखबार ने उनकी प्रशंसा करते हुए लिखा था कि "उन्होंने जर्जर हिन्दुत्व के गतिहीन ढूह पर भारी बम का प्रहार किया और अपने भाषणों से लोगों के हृदयों में ऋषियों और वेदों के लिए अपरिमित उत्साह की आग जला दी। सारे भारतवर्ष में उनके समान हिन्दी और संस्कृत का वक्ता दूसरा कोई और नहीं था।"

आर्यसमाज की विशेषता

स्वामी जी ने ईश्वर, जीव और प्रकृति तीनों को अनादि माना है, किन्तु यह तो इस्लाम से अधिक भारतीय योग-दर्शन का मत है। भिन्नता यह है कि स्वामी जी नहीं मानते कि भगवान् पापियों के पाप को भी क्षमा करते हैं, बल्कि भगवान् की कृपा के सहारे पाप करने की बात के लिए उन्होंने इस्लाम और ईसाइयत की बार-बार आलोचना की है। हां, जिन बुराइयों के कारण हिन्दुत्व का ह्रास हो रहा था तथा अन्य धर्मों के लोग जिन दुर्बलताओं का लाभ उठाकर हिन्दुओं को ईसाई बना रहे थे, उन बुराइयों को स्वामी जी ने अवश्य दूर किया, जिससे हिन्दुओं के सामाजिक संगठन में वही दृढ़ता आ गयी जो इस्लाम में थी। स्वामी जी ने छुआछूत के विचार को अवैदिक बताया और उनके समाज ने सहस्त्रों अन्त्यजों को यज्ञोपवीत देकर उन्हें हिन्दुत्व के भीतर आदरणीय स्थान दिया। आर्यसमाज ने नारियों की मर्यादा में वृद्धि की एवं उनकी शिक्षा-संस्कृति का प्रचार करते हुए विधवा विवाह का भी प्रचलन किया। कन्या शिक्षा और ब्रह्मचर्य का आर्य समाज ने इतना अधिक प्रचार किया कि हिन्दी प्रान्तों में साहित्य के भीतर एक प्रकार की पवित्रतावादी भावना भर गयी और हिन्दी के कवि कामिनी नारी की कल्पना मात्र से घबराने लगे। पुरुष शिक्षित और स्वस्थ हों, नारियां शिक्षिता और सबला हों, लोग संस्कृत पढ़ें और हवन करें, कोई भी हिन्दू मूर्ति पूजा का नाम न ले, न पुरोहित देवताओं और पंडों के फेरे में पड़ें, ये उपदेश उन सभी प्रान्तों में कोई पचास साल तक गूंजते रहे जहां आर्यसमाज का थोड़ा बहुत भी प्रचार था।

हिन्दुत्व की वीर भुजा

आर्यसमाज हिन्दुत्व की खड्गधर बांह साबित हुआ। स्वामी जी के समय से लेकर, अभी हाल तक, आर्य समाज ने सरे हिन्दी प्रान्त को अपने प्रचार से झकझोर डाला। आर्य समाज के प्रभाव में आकर बहुत से हिन्दुओं ने मूर्तिपूजा छोड़ दी, बहुतों ने अपने घर के देवी-देवताओं की प्रतिमाओं को तोड़कर बाहर फेंक दिया, बहुतों ने श्राद्ध की पद्धति बंद कर दी और बहुतों ने पुरोहितों को अपने यहां से विदा कर दिया। जो विधिवत् आर्यसमाजी नहीं बने, शास्त्रों और पुराणों से उनका भी विश्वास हिल गया और वे भी मन ही मन, शंका करने लगे कि राम और कृष्ण ईश्वर हैं या नहीं और पाषाणों की पूजा से मनुष्य को कोई लाभ हो सकता है या नहीं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यसमाजियों ने जगह-जगह अपने उद्देश्यानुकूल विद्यालय स्थापित किये, जिनमें संस्कृत की विशेष रूप से पढ़ाई होती है और जहां के स्नातक स्वामी दयानन्द के उद्देश्यों के मूर्तिमान् रूप बनकर बाहर आते हैं। इन विद्यालयों में कन्या और युवक ब्रह्मचर्य वास करते हैं।

आगे चलकर आर्यसमाज ने शुद्धि और संगठन का भी प्रचार किया। सन् १९२९ ई० में मोपला (मालाबार) में मुसलमानों ने भयानक विद्रोह किया और उन्होंने पड़ोस के हिन्दुओं को जबर्दस्ती मुसलमान बना लिया। आर्यसमाज ने इस विपत्ति के समय संकट के सामने छाती खोलकर और कोई ढाई हजार भ्रष्ट परिवारों को फिर से हिन्दू बना लिया। इसी काण्ड के बाद आर्यसमाजियों ने राजस्थान के मलकाना राजपूतों की शुद्धि आरम्भ की, जिससे मुस्लिम सम्प्रदाय में क्षोभ उत्पन्न हुआ और लोग कहने लगे कि आर्यसमाजी मुसलमानों से शत्रुता कर रहे हैं। किन्तु, शत्रुता की इसमें कोई बात नहीं। जब अन्य धर्म वालों को यह अधिकार है कि वे चाहे जितने हिन्दुओं को क्रिस्तान या मुसलमान बना सकते हैं, तब धर्मभ्रष्ट हिन्दुओं को फिर से हिन्दू बना लेने में ऐसा क्या अन्याय है? किन्तु, आर्यसमाजियों के इस साहस से मुसलमान बहुत घबराये एवं भारतीय एकता का शकट कुछ पीछे की ओर लुढ़क गया।

आर्यसमाजियों ने अपने साहस का दूसरा परिचय सन् १९३९ ई० में दिया जब हैदराबाद की निजाम सरकार ने यह फरमान जारी किया था कि हैदराबाद राज्य में आर्यसमाज का प्रचार नहीं होने दिया जाएगा। इस आज्ञा के विरुद्ध आर्यसमाजियों ने सत्याग्रह का शस्त्र निकाला और एक-एक करके कोई बारह हजार आर्यसमाजी सत्याग्रही जेल चले गये।

ईसाइयत और इस्लाम के आक्रमणों से हिन्दुत्व की रक्षा करने में जितनी मुसीबतें आर्यसमाज ने झेली हैं, उतनी किसी और अन्य संस्था ने नहीं। सच पूछिये तो उत्तर भारत में हिन्दुओं को जगाकर उन्हें प्रगतिशील करने का सारा श्रेय आर्य समाज को ही है। पण्डित चमूपति ने सत्य ही कहा है कि "आर्य समाज के जन्म के समय हिन्दू कोरा फुसफुसिया जीव था। उसके मेरुदंड की हड्डी थी ही नहीं चाहे कोई उसे गाली दे, उसकी हंसी उड़ाये, उसके देवताओं की भर्त्सना करे या उसके धर्म पर कीचड़ उछाले, जिसे वह सदियों से मानता आ रहा है, फिर भी इन सारे अपमानों के सामने वह दांत निपोरकर रह जाता था। लोगों को यह उचित शंका हो सकती थी कि यह आदमी भी है या नहीं, इसे आवेश भी चढ़ता है या नहीं अथवा यह गुस्से में आकर प्रतिपक्षी की ओर घूर भी सकता है या नहीं, किन्तु आर्यसमाज के उदय के बाद, अविचल उदासीनता की यह मनोवृत्ति विदा हो गयी। हिन्दुओं का धर्म एक बार फिर जगमगा उठा। आज का हिन्दू अपने धर्म की निन्दा सुनकर चुप नहीं रह सकता। जरूरत हुई तो धर्म-रक्षार्थ अपने प्राण भी दे सकता है।"

हाथ में लेकर तर्क-कुठार, काट कुत्सित तर्कों का जाल।
किया ऊँचा हिमगिरि के तुल्य, विश्व में आर्यजनों का भाल।
इसी से सुनते हैं हम आज, धरा के कण-कण से आवाज़
विश्व में फैला आर्यसमाज, जगत् में जय-जय आर्यसमाज॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यसमाज का दायित्व

❑ श्री प्रकाशवीर शास्त्री

आर्यसमाज की स्थापना कांग्रेस के जन्म से छह वर्ष पहले हो चुकी थी। डॉ० पट्टाभिसीतारमैया के शब्दों में स्वराज्य के जो स्वर १९०६ में कांग्रेस के मंच पर मुखरित हुए उसकी सम्पूर्ण योजना और कार्यक्रम आर्यसमाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने १८७५ में ही देशवासियों को दे दी थी। अपने प्रमुख ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश में स्वराज्य को सुराज में बदलने की रूपरेखा भी अंग्रेजी राज को भारत से उखाड़ने के साथ-साथ स्वामी जी ने उन्हीं दिनों अपने ग्रंथों में लिख दी थी। सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा को विदेश में भेजकर स्वराज्य के लिए भूमिका तैयार करने में भी स्वामी की दूरदृष्टि काम कर रही थी। भारत में देशी राजाओं को जो १८५७ की क्रान्ति में छुपे बैठे रहे उनको कर्त्तव्य बोध कराने में स्वामी जी ने कई बार देशी रियासतों की यात्रा की। उनके महाप्रयाण के बाद आर्य समाज के बहुत से नेता राष्ट्रीय आन्दोलन की अगली पंक्ति में रहकर स्वाधीनता आन्दोलन का नेतृत्व करते रहे। अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द, पंजाब केसरी लाला लाजपतराय, देवता स्वरूप भाई परमानन्द, चौधरी रामभजदत्त आदि नेता उसी पीढ़ी के थे। क्रान्तिकारी आन्दोलन मेंभी सरदार भगतसिंह और रामप्रसाद बिस्मिल जैसे कई उभरते व्यक्तित्व आर्य समाज ने देश को दिये। पर इतना सब कुछ ज्ञान होने के बाद भी आर्य समाज विशुद्ध रूप से सांस्कृतिक और सामाजिक संगठन रहकर ही कार्य करे यह ही सब की इच्छा रही। परन्तु राजनीति से सदा आंख बन्द रहे और आर्यसमाज राजनीति का निर्देश भी न करे यह अभिप्राय किसी का नहीं था।

अंग्रेज भारत को अर्थिक गुलामी में जकड़ने के साथ-साथ सांस्कृतिक और सामाजिक बन्धनों में भी बांधकर रखना चाहता था। इसके लिए अंग्रेजों ने जहां ईसाई मिशनरियों का जाल पूरे भारत में फैला दिया वहां सरकारी शिक्षण संस्थाओं का भी खुलकर उपय इसमें कर रहा था। लार्ड मैकाले ने इसी तरह की अ सफलता का उल्लेख करते हुए एक पत्र में लिखा था दिन दूर नहीं जब भारतीय मन और मस्तिष्क दोनों हमारे षड्यंत्र का शिकार हो चुके होंगे। शरीर से ही वह हिन्दुस्तानी लगें पर उनके विचारों और वेशभू पर हम पूरी तरह से छा जाएंगे। आर्यसमाज ने चुनौती का भी मजबूती से सामना किया। उसके गुरु और डी० ए० वी० कालेज जहां युवा पीढ़ी में राष्ट्रीय कूट-कूट कर भरने में लगे थे वहां ईसाई मिशनरियों दुकानें बन्द करवाने में भी आर्य समाज ने प्रमुख भूमि निभाई। यह बात दूसरी है किसी राजसत्ता अथवा धनपति का हाथ कमर पर न होने से कुछ क्षेत्रों उतना काम न हो सका जितना आवश्यक था। फिर मिशनरियों को नाकों चने चबवा दिये। भारत के भागों में जहां आर्य समाज की शाखाएं नहीं थी व जरूर कुछ इन्होंने अपने पंजे जमाये। पर देश के मध्यव क्षेत्रों से निराशा भी उनको हाथ लगी।

सामाजिक और राजनीतिक सुधार एक-दूसरे पूरक हैं। आर्य समाज प्रारम्भ से ही इसे जानता इसीलिए हरिजनों, आदिवासियों, महिलाओं की शि और उनकी सामाजिक स्थिति सुधारने में प्रारम्भ से आर्यसमाज ने विशेष यत्न किया। हिन्दू समाज ने यदि इसमें साथ दे दिया होता तो तस्वीर आज और ही होती। फिर भी सौ वर्षों में इस क्षेत्र में की आर्य समाज की सेवाएं आज इतिहास का विषय गयी हैं। भारतीय संविधान में अस्पृश्यता अपराध मा गया है। हरिजनों की आर्थिक स्थिति सुधारने के लि उन्हें नौकरियों और विधानमण्डलों में विशेष संर देने की भी व्यवस्था की गयी है। आजकल अति भूमि के वितरण में भी हरिजन परिवारों को प्राथमि दी जा रही है। पर क्या इससे समस्या का समाधान

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गया? यह तो प्रारम्भिक प्रयास मात्र है। इसमें अभी बहुत कुछ क्रान्तिकारी परिवर्तन करने होंगे।

जन्म से जात-पात की समाप्ति और अन्तर्जातीय सम्बन्धों के विकास में आर्यसमाज ने प्रारम्भ से ही अच्छी रुचि ली है। परन्तु अब लगता है कुछ इसमें शिथिलता आ रही है। इसके लिए शासन के स्तर को जहां कुछ सुधार अपेक्षित हैं वहां सामाजिक स्तर पर भी नये पग उठाने होंगे। तमिलनाडु की सरकार ने अन्तर्जातीय विवाह करने वालों को सरकार की ओर से आर्थिक सहयोग और नौकरियों में प्राथमिकता देने का अभियान प्रारम्भ किया है, वह अनुकरणीय है। आर्यसमाज यदि इसके लिए अनुकूल भूमिका तैयार करे तो उसमें केवल हिन्दू समाज का ही नहीं मानव समाज का बहुत भला हो सकता है। इसकें लिए पहले अपने संगठन में उन अधिकारियों को प्रमुखता दी जाये जिन्होंने जात-पात से ऊपर उठकर अपना पारिवारिक विस्तार अथवा वैवाहिक सम्बन्ध किये हैं। आर्य समाज के सदस्य और पदाधिकारी ही कहीं-कहीं अपने नाम के साथ जब जातिवाचक शब्द लगाते हैं तो उनकी आस्था में संदेह होने लगता है। आर्यसमाज की शिक्षण संस्थाओं में पढ़ने और पढ़ाने वाले छात्रों एवं अध्यापकों के नामों के साथ भी जातिवाचक शब्दों का रहना उपहासास्पद लगता है। यहीं से जाति परक शब्दों के लिए मोह जागता है। यदि आर्य समाज इस दिशा में पहल करे तो शासन को विवश होकर इस ओर झुकना पड़ेगा। पीछे हरिजन समस्या से समाधान पर बोलते हुए वर्तमान प्रधानमंत्री ने कहा भी है जब तक देश में जात-पात की बुराई जीवित रहेगी तब तक हरिजन समस्या के समाधान में बहुत बड़ी बाधा खड़ी रहेगी।

अभी गांधी जयन्ती से शराबबंदी के बारह सूत्री कार्यक्रम की घोषणा भी की गयी है। पराधीन भारत में जिस शराब की बुराई से मुक्ति लेने का दृढ़ संकल्प किया गया था वह दुर्भाग्य से स्वाधीनता के अट्ठाईस वर्ष बाद और भी कई गुणा बढ़ गई है। कई राज्य सरकारों का भी इसमें प्रमुख हाथ रहा। राज्य की आय बढ़ाने के चक्कर में आंख मूंदकर शराब के लाइसेंस दिये जाते रहे। पर आर्यसमाज जैसे समाज सुधारक संगठन मजबूती से यदि इस ओर लग जायें तो समाज और सरकार दोनों को सही रास्ते पर आना पड़ेगा। मादक द्रव्यों का सेवन करने वाले चाहे कितना ही बड़े से बड़ा नेता क्यों न हो उसका और सरकारी अधिकारियों का जब तक खुलकर जनता में विरोध नहीं किया जायेगा तब तक यह बुराई देश से जायेगी नहीं। राजनीति से पृथक् रहते हुए भी कृतसंकल्प होकर यदि आर्यसमाज ने इस बुराई को दूर करने का बीड़ा उठा लिया तो भावी भारत उसका ऋणी रहेगा।

इसी तरह की एक और कमजोरी जो आज पूरे देश को स्वाधीन होने के बाद भी फिर से दासता के शिकंजों में जकड़ रही है वह है अंग्रेजी भाषा के बढ़ते हुए वर्चस्व की। एक बार तो यह लगने लगा था कि अंग्रेजी के नाम लेवा और पानी देवा अब इस देश में ढूंढ़ने पर भी नहीं मिलेंगे। परन्तु अब फिर से अंग्रेजी की हवा बढ़ रही है। सरकारी कार्यालयों, नौकरियों और परीक्षाओं में तो अंग्रेजी का दबदबा है ही। सामाजिक कार्यक्रमों में विशेषकर विवाह शादी के आमन्त्रण पत्रों तक में अंग्रेजी का भूत हावी हो रहा है। आर्यसमाज के प्रवर्त्तक स्वामी दयानन्द जी ने अहिन्दी भाषी होते हुए भी राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोने के लिए हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया था। अपने ग्रंथों और भाषणों में भी उन्होंने उसका प्रयोग किया। परन्तु अब आकर हिन्दी के प्रचारक और समर्थक भी थकते से नजर आ रहे हैं। आर्यसमाज भाषायी स्वाभिमान देश में जागृत करने के लिए यदि आगे आता है तो दूसरे लोग भी उसके पीछे चलेंगे। क्योंकि आर्य समाज को इसके माध्यम से अपनी किसी राजनीतिक स्वार्थ की पूर्ति नहीं करनी है इसलिए भी उसकी आवाज स्वागत योग्य होगी। देश आज सामाजिक और राजनीतिक क्रान्ति के चौराहे पर है। इसमें भाषायी स्वाभिमान का प्रश्न भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। राष्ट्रीय चेतना जगाने में भाषा की भी अपनी प्रमुख भूमिका रहती है। आर्यसमाज

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शताब्दी के दूसरे चरण में प्रवेश करते समय अपने कार्यक्रमों में इसका समावेश करे। इसी तरह के कई और भी ज्वलंत प्रश्न हैं जिनको आर्य समाज अपने कार्यक्रम में स्थान दे तो देश उसे हाथों-हाथ उठा लेगा।

राजनीतिक दल न होते हुए भी आर्य समाज देश की वर्तमान और भावी राजनीति को स्वस्थ दिशा देने का काम आसानी से कर सकता है। सत्ता की राजनीति को सेवा की राजनीति में बदलने का काम प्रच राजनीतिक दलों द्वारा संभव नहीं है। यह आर्यसम जैसे निष्पक्ष और तटस्थ संगठन ही कर सकते हैं। दश की राजसभा में जो काम महर्षि वशिष्ठ का था वह आज आर्यसमाज को निभाना होगा। किसी भी महत्व प्रश्न पर शासन और समाज दोनों आर्यसमाज के स की आंख उठाकर प्रतीक्षा करें इस स्थिति में यदि समाज आ गया तो इतिहास में अमर हो जायेगा।

Gayatri Mantra not Confined to any Religion & is Secular

1. **Gayatri Mantra belong to all man kind and it is not confined to a particular religion, race, caste or community. Mr. Justice D. Raju, Judge of the Madras High Court has said.**
2. **To greet with Gayatri Mantra is not against the secular spirit of t Constitution, Mr. Justice Raju has observed while dismissing a wr petition by the D. M. K. alleging that the United India Assuran Company which in 1983 printed 50,000 Deepawali Greeting Car containing Gayatri Mantra had acted against the provisions of t Constitution.**
3. **Describing the Gayatri Mantra as "Shabad Brahama". Mr. Justi Raju observed that the Mantra appears in the Rig Veda and is said be the key to Vedic Wisdom. It will be anachronistic for any one contend that the Mantra signifies or relates to any particul religion.**
4. **The Vedas have always been considered to belong to all man ki and are not limited to any particular religion, race, caste community, he said.**
5. **Mr. Justice Raju said, "There is nothing on record to demonstra that the Gayatri Mantra is exclusive privilages or property of a class, caste or community."**
6. **The Judge noted that the Secularism did not mean irreligion or a thing anti-religious. It implies that the State does not identify its with any particular religion.**

प्रस्तुति—श्री टेकचन्द सन्दूजा
एडवोकेट

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राष्ट्र निर्माण में आर्यसमाज का योगदान

❑ डॉ० (श्रीमती) शशिप्रभा 'कुमार'

आर्यसमाज कोई नया पन्थ, धर्म या सम्प्रदाय नहीं है अपितु प्राचीन वैदिक धर्म, संस्कृति और मूल्यों की पुनः स्थापना के लिए प्रेरित व समर्पित कार्यक्रम है, आन्दोलन है। आज अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर महर्षि दयानन्द के दो शब्द हमें अन्तर्दर्शन व आत्मनिरीक्षण की प्रेरणा देते हैं कि **मैं अपना मन्तव्य उसी को मानता हूं जो तीन काल में सबको एक सा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन मत-मतान्तर व कल्पना चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है किन्तु जो सत्य है उसे मानना और मनवाना जो असत्य है उसे छोड़ना-छुड़वाना ही मुझे अभीष्ट है।**

आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य संसार का उपकार करना रहा है, अतः आर्यसमाज के नियम एक समग्र, समन्वयवादी विचारधारा को व्यक्त करते हैं—वे केवल बाह्य विधानों या कर्मकाण्ड पर ही आधारित नहीं है, अपितु एक विशिष्ट जीवन पद्धति के रूप में व्यष्टि और समष्टि की सर्वतोमुखी उन्नति, राष्ट्रीयता और वेदों की परम प्रतिष्ठा के साथ-साथ ईश्वर की सर्वशक्तिमत्ता और न्यायकारिता पर बल देते हैं। इस दृष्टि से विश्लेषण करने पर विदित होता है कि नवीन भारत के स्वाधीनता संग्राम और पुनर्निर्माण में आर्य समाज ने बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। राष्ट्रीय जीवन के धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक तीनों ही क्षेत्रों में इसका योगदान अमूल्य रहा है, तद्यथा

(अ) धार्मिक

आर्यसमाज का अवतरण प्रमुखतः धार्मिक संस्था के रूप में ही हुआ था, अतः धार्मिक क्षेत्र में तो इस संस्था ने गम्भीर क्रान्ति का प्रवर्तन किया। महर्षि दयानन्द की दृढ़ मान्यता थी कि जब तक वेदों के अनुरूप मानवीय चिन्तन में उदारता नहीं आयेगी तथा व्यक्ति व समाज सत्य एवं प्रेम की मूल मर्यादाओं में बंधकर नहीं चलेंगे तब तक सच्चे मानव धर्म का परिपालन नहीं हो सकेगा। इसीलिए उन्होंने अविद्याजन्य नाना मतों के फैलने से संसार में जो द्वेष फैल गया था, उसे दूर करने के लिए वेदों के उद्धार का बीड़ा उठाया और अपना सारा जीवन इसी महान् लक्ष्य की सिद्धि के लिए समर्पित कर दिया।

वस्तुतः वैदिक धर्म के सच्चे, वास्तविक स्वरूप का प्रचार करने के लिए ही उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना की थी, चूंकि उन्नीसवीं सदी के आर्य धर्म में अनेक विकृतियां आ चुकी थीं। एकेश्वराधन के स्थान पर हजारों देवी-देवताओं की पूजा प्रचलित हो चुकी थी। मृतकों के लिए पिण्डदान करना, पितरों का श्राद्ध व तर्पण करना आदि अनेक वेद विरुद्ध अनुष्ठान धार्मिक कृत्य समझे जाने लगे थे। राम-कृष्ण आदि महानुभावों को ईश्वर का अवतार मानकर उनकी पूजा होने लगी थी। ऐसी विषम परिस्थिति में महर्षि ने अद्‌भुत साहस और संकल्प के साथ सनातन वैदिक धर्म की उदार धार्मिक क्रान्ति का सूत्रपात किया व आर्यसमाज की स्थापना की।

स्वामी जी ने यह भी स्पष्ट किया कि 'आर्य' शब्द किसी विशेष जाति का वाचक नहीं, अपितु श्रेष्ठ गुण, कर्म, स्वभाव वाले मानव का सूचक है। यह शब्द 'ऋ' धातु से बना है जिसका अर्थ होता है मर्यादित एवं नियमित 'गति' (ऋतु और ऋत शब्द भी इसी धातु से बने हैं)। अतः 'आर्य' शब्द में ऋ धातु का प्रयोजन ही यह प्रकट करता है कि आर्यों का जीवन आचरण, विचार सभी व्यवस्थित एवं नियमित हों। इसी भांति यदि 'समाज' शब्द का व्युत्पत्तिपरक अर्थ देखा जाये तो **'समम् अजन्ति जनाः यस्मिन् इति'** अर्थात् जिसमें सब लोग मिलकर चलते हैं वह समाज है। अतः श्रेष्ठ जनों का सम्मेलन ही 'आर्यसमाज' है। अपने उद्‌गम से लेकर पिछली एक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शताब्दी में इस संस्था ने अपने इस नामकरण को अनेकशः चरितार्थ भी कर दिखाया है।

इस भांति धार्मिक क्षेत्र में आर्य समाज ने अनेक कुरीतियों व रूढ़ियों का खण्डन कर एक सर्वोच्च सर्वशक्तिमान, निराकार परमेश्वर की उपासना का प्रचार किया। वेदानुकूल त्रैतवादी दार्शनिक विचारधारा को प्रश्रय दिया तथा वैदिक धर्म के वास्तविक विशुद्ध रूप को प्रतिष्ठापित करने का अनवद्य प्रयास किया। इसीलिए गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने लिखा कि

'मेरा प्रणाम हो उस महान् गुरु दयानन्द को जिनकी दृष्टि ने भारत के आध्यात्मिक इतिहास में सत्य व एकता को देखा, जिसके मन ने भारतीय जीवन के सब अंगों को प्रदीप्त कर दिया। जिस गुरु का उद्देश्य भारत की अविद्या, आलस्य और प्राचीन ऐतिहासिक तत्त्व को अज्ञान से मुक्त कर सत्य और पवित्रता की जागृति में लाना था। उसे मेरा बारम्बार प्रणाम है। मैं आधुनिक भारत के मार्गदर्शक उस दयानन्द को आदरपूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं जिसने देश की पतितावस्था में भी हिन्दुओं को प्रभु की भक्ति और मानव समाज की सेवा के सच्चे-सीधे मार्ग का दर्शन कराया।'

इस भांति धार्मिक दृष्टि से आर्य समाज ने भारत राष्ट्र के शक्तिशून्य शरीर में नवजीवन का संचार किया इसमें कोई संदेह नहीं।

(आ) सामाजिक

स्वाधीन भारत के सामाजिक नवनिर्माण में भी आर्यसमाज का अमूल्य योगदान रहा है। इसने जन्मना जाति व्यवस्था को नकार कर गुण-कर्म के आधार पर वर्ण व्यवस्था को मान्य ठहराया। साथ ही हिन्दू मात्र को आर्य नाम देकर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सबको एक आसन पर ला बिठाया और अस्पृश्यता की जड़ें खोखली कर दीं। महात्मा गांधी के हरिजनोद्धार कार्यक्रम की पृष्ठभूमि आर्यसमाज ने बहुत पहले ही तैयार कर दी थी। अतः यदि यह कहा जाये कि स्वामी दयानन्द से बढ़कर अस्पृश्यों के अपहृत अधिकारों का उत्साही समर्थक दूसरा कोई नहीं हुआ तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

बाल विवाह और बेमेल विवाह का प्रबल ख[ण्डन] शुद्धि आन्दोलन, विधवा विवाह और स्त्री शिक्षा मण्डन आदि कार्यक्रमों के द्वारा आर्य समाज ने [पि]छड़े हुए एवं रूढ़िग्रस्त हिन्दू समाज में महान् क्रान्ति सूत्रपात किया। 'सत्यार्थप्रकाश' जैसे दिव्य, उद्बो[धक] ग्रंथ की रचना कर स्वामी दयानन्द ने भारतीय स[माज] में महान् सुधारक का दायित्व निभाया, नारी जा[ति के] खोये हुए सम्मान को पुनः प्रतिष्ठापित करने का [श्रेय] यदि किसी को है तो महर्षि दयानन्द और उसके [द्वारा] स्थापित आर्यसमाज को ही है।

राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति भी आर्य समाज [का] महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। हिन्दी को 'आर्यभाषा' नाम देकर उसके प्रचार-प्रसार को आर्य समाज के प्र[मुख] धार्मिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों में रखा गया। आर्यसम[ाज] के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द ने स्वयं गुजराती भाषी [हो]ते हुए भी प्रायः अपने सभी ग्रंथ हिन्दी में लिखे। आर्यसम[ाज] ने ही सर्वप्रथम अंग्रेजी भाषा, अंग्रेजी शिक्षा तथा अं[ग्रेजी] चाल-चलन का विरोध कर हिन्दी माध्यम की शि[क्षा] संस्थायें स्थापित कीं।

वेदों, वैदिक दर्शनों, वैदिक संस्कृति एवं साहि[त्य] के संरक्षण संवर्धन में भी आर्यसमाज की भूमि[का] अतुलनीय रही है। गुरुकुलों, डी० ए० वी० शि[क्षा] संस्थाओं और कन्या पाठशालाओं के माध्यम से आ[र्य] समाज ने वेदों और वेदभाष्यकार महर्षि दयानन्द [के] सन्देश को जन-जन तक पहुंचाने का महत्त्वपूर्ण [कार्य] किया है। आर्य समाज ने ही सर्वप्रथम शिक्षा [की] आवश्यकता का उद्घोष किया जैसा कि महर्षि दया[नन्द] के इस वक्तव्य से व्यक्त है—'इसमें राजनियम [और] जातिनियम होना चाहिए कि पांचवें अथवा आठवें [वर्ष] से आगे कोई अपने लड़के और लड़कियों को घर में [न] रख सके। पाठशाला में अवश्य भेज देवें, न भेजे [तो] दण्डनीय हो।' अतः यदि महर्षि को आधुनिक युग [का] सर्वप्रमुख शिक्षाशास्त्री कहा जाये तो असत्य न हो[गा]।

गुणकर्मानुसार चातुर्वर्ण्य व्यवस्था तथा न्याय [पर] आधारित सामाजिक संगठन की परिकल्पना जिसमें [न] कोई शोषक हो व न ही शोषित आर्यसमाज की ही [...]

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है। इसमें समाजवाद और पूंजीवाद दोनों व्यवस्थाओं के दोषों का निराकरण कर सबके प्रति न्याय की भावना पर बल दिया गया है। मानव समाज के कल्याण के लिए भौतिकता एवं अध्यात्म में समन्वय को अनिवार्य जानकर आर्य समाज ने आश्रम व्यवस्था की भी उपादेयता मानी है। इस भांति, सामाजिक क्षेत्र में भी आर्य समाज ने भारत राष्ट्र के उत्थान हेतु अनुपम कार्य किया है।'

(इ) राजनैतिक

यद्यपि आर्य समाज की स्थापना का मूल उद्देश्य धार्मिक ही था, राजनैतिक नहीं, किन्तु अपने व्यापक एवं उदार राष्ट्रवादी दृष्टिकोण के कारण भारत के स्वाधीनता संग्राम में जितना आर्यसमाज ने योग दिया है, उतना अन्य किसी संस्था ने नहीं। स्वदेशी, स्वभाषा एवं स्वराज्य का सर्वप्रथम उद्घोष स्वामी जी ने ही किया। यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि महिला उत्थान, हरिजन उद्धार, राष्ट्रीय एकता, गोरक्षा, मद्यनिषेध आदि महत्त्वपूर्ण आन्दोलन आर्य समाज ने ही चलाए। जिन्हें बाद में महात्मा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस ने अपनाया। स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपत राय, महात्मा हंसराज, हरदयाल जी, पंडित गुरुदत्त, चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल आदि स्वाधीनता सेनानी आर्य समाज की ही देन थे। श्री वी० जी० पटेल ने स्वामी दयानन्द की राजनैतिक सूझबूझ की सराहना करते हुए कहा है कि "मेरी दृष्टि में ऋषि दयानन्द एक सच्चे राजनैतिक नेता थे क्योंकि उन्होंने सबसे पहले कहा था कि दूसरों का अच्छा शासन अपने बुरे शासन से भी बुरा होता है।

यह महर्षि की राजनैतिक दूरदर्शिता थी, जिससे प्रेरित होकर उन्होंने राज्यसंचालन में तीन सभाओं का प्रतिपादन किया है। प्रथम राज्यप्रबन्ध के लिए 'राजार्यसभा' दूसरी सब प्रकार की विद्याओं के प्रचार के लिए 'विद्यार्यसभा' तथा तीसरी धर्म के प्रचार व अधर्म की हानि के लिए 'धर्मार्यसभा'। महर्षि ने यह भी विधान किया है कि ये तीनों सभायें सामान्य विषयों के लिए परस्पर मिलकर उत्तम व्यवहारों का निर्धारण किया करें। इन तीनों सभाओं में राजार्य सभी की स्थिति सर्वोच्च है, चूंकि शासन का संचालन उसी के द्वारा होता है। राजा का चयन वंशक्रमानुगत न होकर जनता द्वारा निर्वाचन के आधार पर होना चाहिए। राजा के गुण व कर्त्तव्यों का निर्देश तथा राज्य संस्था के कार्यक्षेत्र के विषय में भी उन्होंने अपने गंभीर विचार प्रकट किये हैं। महर्षि के इन मन्तव्यों के अनुसार आर्यसमाज ने भी राष्ट्र के राजनैतिक जीवन में समय-समय पर महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। राष्ट्रीय एकता व अखण्डता के विषय में आर्य समाज का दृष्टिकोण आरम्भ से ही बड़ा स्पष्ट एवं सुदृढ़ रहा है। देश के विभाजन की मांग पर आर्यसमाज ने उसका प्रबल विरोध किया था। विदेशी आक्रमणों एवं आन्तरिक संकटपूर्ण समस्याओं के समाधान हेतु आर्यसमाज सदैव सम्बद्ध रहा है। एवं राष्ट्र रक्षा कोष में तथा विस्थापितों के पुनर्वास में इसने उन्मुक्त हृदय से जीवन-धन-प्रयत्न लगाये हैं।

इस प्रकार उक्त संक्षिप्त विवरण से स्पष्ट हो जाता है कि धार्मिक, सामाजिक व राजनैतिक सभी दृष्टियों से राष्ट्र निर्माण में आर्य समाज का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। किन्तु यह चित्र केवल एक पक्ष है। राष्ट्रनिर्माण में आर्य समाज ने सक्रिय एवं सशक्त भूमिका निभाई है। इसमें तो किसी को विप्रतिपत्ति नहीं किन्तु इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण विचारणीय विषय है कि आज की परिस्थितियों में राष्ट्र के नवनिर्माण के लिए आर्य समाज की क्या भूमिका होनी चाहिए?

आज हमारे देश की राजनैतिक स्वतंत्रता के पाँच दशक पूरे हो चुके हैं, किन्तु मानसिक रूप से हम अभी भी दासता की श्रृंखलाओं में जकड़े हुए हैं। देश की प्रगति के लिए अनेकानेक सराहनीय योजनाएं बन रही हैं और क्रियान्वित भी हो रही हैं, किन्तु परिणामों की सुखद प्रतीक्षा अभी भी पूरी नहीं हुई है। आज सर्वत्र राष्ट्रीय चरित्र के अभाव की चर्चा चल रही हैं अध्यापक, मजदूर, वकील, राजनेता, विद्यार्थी सभी अपनी-अपनी जगह असन्तुष्ट व क्षुब्ध हैं। संस्कारों की तथा सुसंस्कारी सन्तति की युग चुनौती नये सिरे से प्रखर हो रही है। दहेज प्रथा, साम्प्रदायिक विद्वेष, जातिवाद, सतीप्रथा,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भ्रष्टाचार और आतंकवाद आदि विभीषिकाओं से हमारा राष्ट्र अभी भी त्रस्त है।

ऐसी विषम परिस्थिति में आर्यसमाज के गौरवपूर्ण अतीत योगदान के परिप्रेक्ष्य में यह प्रश्न उठना बड़ा सहज है एवं स्वाभाविक है कि इस दशा में आज आर्यसमाज का और आर्यजनों का दायित्व क्या है? आर्यसमाज की स्थापना जिन महान् उद्देश्यों को लेकर हुई थी, आर्यसमाज के नियमों में जिस सार्वभौम मानवता के आदर्श दिये गये हैं क्या हम उनके पोषण-संरक्षण के प्रति सावधान हैं? क्या हम वास्तव में 'आर्य' कहलाने के अधिकारी हैं या केवल 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' और 'आर्यसमाज अमर रहे' के नारे लगाकर ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ बैठे हैं? ये और ऐसे ही अनेक अन्य प्रश्न आज प्रत्येक आत्मान्वेषी आर्य के हृदय को आतुर बना रहे हैं। वास्तव में यह भी बड़े खेद के साथ स्वीकार करना पड़ता है कि आज हम आर्यजन भी अपने राष्ट्रीय कर्त्तव्यों के प्रति पूर्णतः समर्पित नहीं हैं। केवल साप्ताहिक सत्संग या वार्षिक उत्सव मना कर बड़े-बड़े आदर्शों का स्थापन करके नहीं, अपितु अपने-अपने स्तर पर किसी भी एक रुढ़ि से, एक कुरीति से संघर्ष करने का शिवसंकल्प यदि हममें से प्रत्येक कर ले तो सम्भवतः आज की परिस्थिति में भी आर्य समाज का योगदान सबसे बड़ा होगा। यह राष्ट्र हमारी माता है और हम सब इसके सजग प्रहरी हैं। अतः अपने अधिकारों के साथ-साथ कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक होना हमारा परम धर्म है। महर्षि दयानन्द ने जिन पुनीत ध्येयों को लेकर यह 'ओ३म्' का ध्वज ऊंचा उठाया था और हमारे पूर्वजों ने जिन नैतिक आदर्शों की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व होम कर दिया, क्या हम अपनी आंखों के सामने उन उदात्त मूल्यों का हनन होता देखते रहेंगे?

आज हमें सच्चे अर्थों में 'आर्य' बनना है और इस संस्था को वस्तुतः समाज बनाना है। साम्प्रदायिक विद्वेष मिटाना है, सामाजिक कुरीतियों से लड़ना है और राष्ट्रीय भावना का प्रसार करना है। इसके लिए हमें अपना दृष्टिकोण उदार व व्यापक बनाना होगा, एकांगी संकीर्ण विचारधारा को त्यागकर सर्वांगीण जी दर्शन अपनाना होगा और आर्यसमाज के नियमों क केवल शब्दशः उच्चारण अपितु अर्थतः पालन भी क होगा, वेदों और वैदिक संस्कृति के पुनरुत्थान का प्र करना होगा तथा देवभाषा संस्कृत और आर्यभाषा हि के प्रचार के लिए कटिबद्ध होना होगा। पिछले एक तेईस वर्षों में आर्यसमाज ने जिस भांति राष्ट्र की की है, उसी भांति इक्कीसवीं सदी में भी हमें आर्यसम की अस्मिता को अक्षुण्ण रखना है। आज की परिस्थि में हमें अपनी ही त्रुटियों को खोज-खोजकर दूर कर होगा। आज हमें किसी बाह्य शक्ति से नहीं, अपने अ से जूझना है और इसके लिए अदम्य साहस, अद त्याग एवं अप्रतिम सहिष्णुता का आश्रय लेना हो हमें यह कदापि नहीं भूलना चाहिए कि व्यक्ति से सम बड़ा है, समाज से राष्ट्र और राष्ट्र से बढ़कर है मानव मानवता की रक्षा हमारा परम धर्म है। इस धर्म पालन हेतु हमें न तो कहीं जाने की आवश्यकता है न अत्यन्त शिक्षित या धनवान् होने की आवश्यकता केवल यह दृढ़ निश्चय करने की कि इस 'समाज उद्देश्य है न केवल अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट रह अपितु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझना।'

जिस क्षण हममें से प्रत्येक आर्य यह संकल्प म मन से कर लेगा, उसी क्षण राष्ट्र निर्माण का महा कार्य मानो सम्पन्न हो जायेगा। और हम भी वस् आर्य कहलाने के अधिकारी बनेंगे। अतः आइये, रा निर्माण के इस महायज्ञ में हम सब अपनी आहु श्रद्धापूर्वक समर्पित करें। तभी यह विशाल उत्सव मन सार्थक होगा और तभी हमारा राष्ट्र पुनः अपने खं गौरव को पा सकेगा और तभी मैथिलीशरण गुप्त यह उद्घोष सत्य सिद्ध हो सकेगा कि—

"संसार में किस देश का
सबसे अधिक उत्कर्ष है?
उसका कि जो ऋषिभूमि है,
वह कौन है? भारतवर्ष है।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यसमाज की मान्यताएँ

१. वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, जो ईश्वर ने सृष्टि के आदि में मनुष्यों के पथ-प्रदर्शन और ज्ञानार्थ प्रदान किया। वेदों को पढ़ने का अधिकार विना भेदभाव के संसार भर में सब स्त्री-पुरुषों को है।

२. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, न्यायकारी, अजन्मा, सर्वव्यापक, अनादि, सृष्टिकर्ता, कर्मफलदाता आदि गुणयुक्त तथा मनुष्यमात्र का उपास्यदेव है। एक मात्र उसी की उपासना करनी चाहिए।

३. वेदों में ईश्वर का नाम ओम् (परम रक्षक), भूः (सबका प्राणाधार), भुवः (सर्वदुःखनाशक), स्वः (सर्व सुखदाता) एवं माता-पिता, बन्धु, इन्द्र आदि कई प्रकार से आया है।

(क) जड़ पदार्थों—अग्नि, सूर्य, जल, वायु, पृथ्वी आदि के गुणानुसार भी ईश्वर की सत्ता-महत्ता समझाने को वेद में ईश्वर का नाम, अग्नि, सूर्य आदि आया है। इससे भ्रम पैदा होकर जड़ पदार्थों की पूजा भी कोई-कोई करने लगे। यह मान्य नहीं।

(ख) रोगों में 'ज्वर' प्रमुख है। तुलसी और पीपल को शास्त्र में ज्वर की प्रमुख ओषधि माना है, परन्तु उनसे लाभ उठाना तो रहा दूर, हम उनकी परिक्रमा करते हैं, सूत लपेटते हैं, उन्हें तुलसी भगवती तथा पीपल महादेव कहते हुए नमस्कार करते हैं। कितनी अज्ञानता आ गई है।

४. ईश्वर निराकार और सर्वव्यापक है। उसकी मूर्ति नहीं हो सकती। ईश्वर के स्थान पर देवी-देवताओं की कल्पित मूर्तियों की पूजा वेदानुकूल नहीं, मूर्तिपूजा में भावना की युक्ति ठीक नहीं। भावना सीधे ही सत्-चित्-आनन्द ईश्वर में होना ईश्वर-भक्त को शीघ्रातिशीघ्र सफलता प्राप्त कराता है। 'मन्दिर वही कहलाने योग्य है, जहां नित्यप्रति ईश्वरोपासना, धर्म, धार्मिक जीवन और सुकर्म का उपदेश मिले। मन्दिर जाकर घंटा बजा दिया, पैसा चढ़ा दिया, चरणामृत ले लिया, इससे कुछ नहीं बनता, यदि वहां जाकर बैठे नहीं, उपदेश नहीं सुना, जीवन और कमाई में पवित्रता नहीं लाये।

५. जीव ब्रह्म से भिन्न है। अद्वैतवादियों का 'अहं ब्रह्मास्मि' (मैं ब्रह्म हूं) कहना युक्तियुक्त नहीं। यदि हम ही ब्रह्म हैं, तो पूजन किसका? प्रार्थना किसके आगे? दुःख में फिर आश्रय किसका?

'जगन्मिथ्या' कहना भ्रमजनक वाक्य है। जगत् स्पष्टतः इन्द्रिय-गम्य है, सत्य है। हां, इन्द्रियों में रसों में और धनोपार्जन में सुख मानना एवं उस प्रकार के जीवन तक ही जगत् को सीमित समझना मिथ्या है। जगत् के प्रलोभनों, विषय-विकारों में फंसना मिथ्याचरण है।

६. हरिद्वार आदि स्थानों पर सत्संग के लिए जाना तो ठीक है, परन्तु 'गंगा, यमुना आदि में स्नान मात्र, हमें पापों के फल भोगने से छुड़ा सकते हैं, ऐसा मानना तो विवेकी श्रीमानों को योग्य नहीं। अच्छे कर्मों से सुख और बुरे कर्मों से दुःख भोगना अवश्यम्भावी है।

तीर्थों पर जाकर मरने से सीधे स्वर्गलोक जा पहुँचने की भावना रखने वाले वृद्ध स्त्री-पुरुषों की मति विकृत हो चुकने का चिह्न है। सत्संग के लिए तीर्थ भले ही जाओ।

७. स्वार्थियों ने हिन्दुओं के दान की प्रथा को बिगाड़कर रख दिया है। चेले-चेली बनकर 'सम्पत्तियों के मालिकों गुरुओं को धनमाल अर्पण कर देना शास्त्रविरुद्ध है। महाभारत का प्रमाण स्पष्ट है— **"धनिने धनं मा प्रयच्छ, दरिद्रान् भर कौन्तेय"**, अर्थात् धनियों को धन मत दो, गरीबों, अनाथों, दुःखी-दरिद्रों की पालना करो। इसी प्रकार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विद्यालयों, गुरुकुलों, अस्पतालों, परोपकारी की परीक्षित संस्थाओं धनहीन सच्चे त्यागी, तपस्वी धर्मप्रचारकों आदि को ही दान देना पुण्य है। मुफ्तखोरों को दान देने से पाप लगता है।

८. सूर्यग्रहण तथा चन्द्रग्रहण छायामात्र है, यह सभी पढ़े-लिखे जानते हैं। उन्हें राहु-केतु से ग्रसा जाना मानना ठीक नहीं। ग्रहण के समय कुरुक्षेत्र आदि तीर्थों पर जाकर स्नान करने में पुण्य मानना अन्धविश्वास है। श्रीमानों को अब अन्धपरम्परा से ऊंचा उठाना योग्य है।

९. ईश्वर कभी किसी सुअर, कच्छप, मच्छ आदि की देह धारण करके अवतार नहीं लेता। बड़े-बड़े सनातनधर्मी अब पुराणों में ऐसे वर्णन को आलंकारिक मानने लगे हैं।

१०. ईश्वर कर्मों का फलदाता है और उसके न्याय नियम से कर्मों का फल अवश्य मिलता है। कोई ईश्वर का अवतार, 'खुदा का पैगम्बर' या 'खुदा का बेटा' दुष्कर्म के फल भोग से किसी को बचा नहीं सकता। ऐसा मानना कि दुष्कर्मी के पाप क्षमा हो सकते हैं, पाप को बढ़ावा देना है।

११. स्वर्ग-नरक कोई विशेष स्थान नहीं है। सुख का नाम स्वर्ग और दुःख का नाम नरक है, और वे भी इसी संसार में तथा इसी शरीर में भोगे जाते हैं। दरिद्रता, ऋण, रोग, क्रोध, विषय-विलासिता, परिवार आदि में कलह, मुकदमे, बेरोज़गारी, सन्तान आदि की मृत्यु अथवा विमुखता ये नरक हैं। धर्मपरायणता, सुख स्वास्थ्य, सम्पत्ति, सम्मान, ऐश्वर्य, अच्छे पति-पत्नी, माता-पिता, सन्तान आदि सम्बन्धियों का होना तथा शुभ कर्म में रुचि होना आदि स्वर्ग हैं।

१२. पुण्य, दान, ईश्वरोपासना, स्वाध्याय, सत्संग, सदाचार, माता-पिता, गुरुजनों तथा दीन-दुःखी की सेवा मांस-मदिरा और विषय विलासिता का त्याग देवकर्म है।

१३. माता-पिता और आचार्य तीन गुरु होते हैं। जीवित माता, पिता और गुरुजनों की श्रद्धापूर्वक [illegible] करना ही श्राद्ध है। मृत पितरों के नाम पर [illegible] करना वेद विरुद्ध और निष्फल है। 'सुमति [illegible] सत्संग का लाभ प्रदान करने वाले सदाचा[illegible] निःस्वार्थी विद्वान् ब्राह्मणों की सेवा क[illegible] आर्यसमाज पुण्य मानता है। श्राद्ध के विशेष [illegible] ब्राह्मण को खिलाया हुआ पदार्थ मृत माता-[illegible] आदि को जा पहुंचेगा, ऐसा मानना अज्ञा[illegible] और अन्धविश्वास मात्र है।

१४. वर्ण व्यवस्था 'गुण, कर्म, स्वभाव' से है। ब्राह्[illegible] क्षत्रिय या वैश्य यदि आचार और विद्या से वि[illegible] हो तो उसका शूद्र वर्ण हो जाता है। कर्म से वर्ण व्यवस्था मानने योग्य है।

१५. ईसाइयों-मुसलमानों के मत में इस प्रश्न का [illegible] युक्तियुक्त उत्तर नहीं कि क्यों कोई अंग[illegible] अस्वस्थ, या दरिद्री के घर पैदा होता है, [illegible] सुन्दर, स्वस्थ, धनी घराने में? केवल वैदिक ([illegible] आर्य) धर्म में इसका उत्तर मिलता है कि [illegible] जन्म के पुण्य-पाप के आधार पर यह भेद नि[illegible] है। ईसाई, मुसलमान 'खुदा की मर्ज़ी' कहकर [illegible] खुदा को ही अन्यायी और निष्ठुर सिद्ध कर[illegible] हैं।

१६. पशुओं के बलिदान से ईश्वर प्रसन्न नहीं हो[illegible] धर्म या यज्ञ के नाम पर मन्दिर आदि में [illegible] हिंसा करना घोर पाप है अपने बच्चे की का[illegible] के लिए दूसरों (गूंगे पशुओं) के गले काटना, अ[illegible] और देवी-देवताओं की बुद्धि का अपमान क[illegible] है। विद्वानों का सत्संग, स्वाध्याय आदि [illegible] कहलाते हैं। अश्वमेध में घोड़ों की आहुति [illegible] अलंकार से अश्व (इन्द्रियों) के विषय विकारों [illegible] आहुति देना ही अभिप्रेत है।

१७. भूत, प्रेत, जादू-टोना, तागा-तावीज, यन्त्र[illegible] झाड़-फूंक सब मूर्खों को बहकाने, ठगने क[illegible] ज्योतिषियों के परामर्श से रुपये देकर कष्ट निवा[illegible] के लिए किसी दूसरे से जाप कराना अपने आ[illegible] धोखा देना है। स्वयं ही अर्थ विचार[illegible]

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महामृत्युंजय, गायत्री मन्त्र का जाप करें और प्रभु की कृपा का साक्षात् प्रभाव देखें।

१८. बिना किसी स्वार्थ के संसार का उपकार करना, अज्ञानता, नास्तिकता और कुप्रथा का नाश करना, पीस डालने वाले रीति-रिवाज की फिजूलखर्चियों से गरीबों को बचाना, सदाचरण और प्रभु भक्ति करना-करना आर्यसमाज के मूल मन्त्र हैं।

१९. आप्त धर्म के रूप में युवा विधवाओं का पुनर्विवाह होना चाहिए। कुकर्म, अधर्म, अपवाद, अपयश पश्चात्ताप से बचना चाहें तो 'युवा विधवा का पुनर्विवाह कर दें।

२०. शूद्रों या अपने से भिन्न जाति के साफ-सुथरे स्त्री-पुरुषों द्वारा पकाये हुए भोजन से धर्म भ्रष्ट नहीं होता, परन्तु अधर्म, अन्याय, घूस, ब्लैक मार्किट, मिलावट आदि पाप-कर्मों से प्राप्त होने वाले धन से खरीदे हुए अन्न को खाने से अवश्य धर्मभ्रष्ट होता है। (जात्याभिमानीजन हृदय पर हाथ धरकर अपनी-अपनी कमाई और जीवनी को इस कसौटी पर परखें)

२१. आर्य समाज कोई अलग सम्प्रदाय नहीं। आर्य का मतलब श्रेष्ठ है, आर्य समाज श्रेष्ठ, सदाचारी, आस्तिक, ईश्वर विश्वासी, और वैदिक धर्मी जनों का संगठन है। उपरिलिखित गुण धारण करने वाले सभी व्यक्ति श्रेष्ठ हैं और आर्य हैं, चाहे वे किसी सम्प्रदाय के हों। आर्यसमाज सम्प्रदायवाद को स्वीकार नहीं करता।

२२. 'विद्या धर्मेण शोभते' अधर्मी कर्त्तव्यहीन, चरित्रहीन, स्वार्थरत तथा खाने-पीने और मन की मौज तक जिसका जीवन सीमित हो ऐसे किसी भी दुर्गुणयुक्त ग्रेजुएट एवं डबल ग्रेजुएट को विद्वान् कहना अशोभनीय है। विद्या की शोभा पवित्र जीवन से ही है।

२३. आर्य समाज ऐसा मानता है कि 'सन्ध्या प्रार्थना, अग्निहोत्र, यज्ञ; स्वाध्याय, पूजा-पाठ, नित्य कर्म करते हुए यदि किसी व्यक्ति में 'सदाचार, दान, पुण्य, पवित्र कमाई शुद्ध आहार, सत्य व्यवहार नहीं', तो वे सभी नित्यकर्म निरर्थक हैं। इसलिए सभी लोग आर्य अर्थात् श्रेष्ठ बनें। यही आर्यसमाज की मान्यता है, यही आर्यसमाज का सन्देश है।

चरित्रवान् हो देश हमारा, ब्रह्मचर्यव्रत हम पालें।
भारत माँ की उन्नति में हम, जीवन अपना दे डालें॥
बनो सभासद् इस समाज के, धर्मभाव नहीं ऊना हो।
यह समाज सब ही के सम्मुख, फिर से नया नमूना हो॥
हमें विश्व के हर मानव में, जीवन ज्योति जगानी है।
आर्यसमाज हमारे ऋषि की सबसे अमिट निशानी है॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यसमाज का महापुरुषों द्वारा मूल्यांकन

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने हिन्दू धर्म के उद्धार और अपने देश को नैतिक और सामाजिक क्षेत्रों में ऊंचा उठाने के लिए जो मूल्यवान् योगदान दिया है उसका थोड़ी सी पंक्तियों में पूर्ण विवरण दिया जाना सम्भव नहीं है। उन्होंने जन्मना जात-पात का खण्डन करके जो उपलब्धि प्राप्त की हैं वह मुझे विश्वास है कि भारत की उन्नति और एकता के लिए राजमार्ग सिद्ध होगी।

उन्होंने (स्वामी जी ने) भारतीय पुनर्जागरण के आधार पर आर्यसमाज नामक जिस संस्था की नींव खड़ी की थी वह अब भी और सदैव भारत की आत्मचेतना और राष्ट्रकल्याण की स्वाभाविक भावना के जागरण के उदाहरण के रूप में देखी जाती रहेगी।

रहीमजादा सफवी तेहरान (ईरान)

वही सच्चा राजनेता है जो भविष्यत् के लिए नियम और विधान बनाता है, जो उस शक्ति को उन्मुक्त करता है जो आने वाली पीढ़ियों के जीवन और विचारों को प्रभावित करती रहे। जब भारत के विकास का इतिहास लिखा जायेगा तब उपयुक्त उच्चतम स्थान, नंगे फकीर दयानन्द को प्राप्त होगा। उसने हिन्दू धर्म के हृदय को क्षय रोग से मुक्त करके शाश्वत उन्नति के साथ जोड़ दिया जिसका बाह्य जगत् में शासन है। उन्होंने सिद्ध कर दिया कि आर्यावर्त्त के प्राचीन ऋषियों की बपौती में जो कुछ सर्वोत्तम और सत्यमय है वह निधि है जिसमें समस्त मानव समाज का अधिकार है और वह किसी द्विजन्मा जाति और पवित्र भूमि तक सीमित नहीं है।

प्रत्येक धर्म की सच्ची कसौटी वह प्रभाव है जो आचार विचार पर पड़ता है। स्वामी दयानन्द का चर्च (आर्यसमाज) इस कसौटी पर खरा उतरा है। आर्यसमाज प्रत्येक वस्तु को सच्चाई और पवित्रता के अन्तर्गत रखता है और यह आवश्यक समझता हैं कि प्रत्येक कार्य परमात्मा के नियम और आदेश के अनुकूल होना चाहिए। दयानन्द ने करनी और कथनी से यह प्रमाणि कर दिया कि कर्मण्यता, उन्नति और संघर्ष का जीव हिन्दू धर्म की सच्ची भावना के विरुद्ध नहीं है। उन्हों ईश्वर की सन्तानों में पूर्ण एकता स्थापित की। जहां-ज आर्यसमाज एक तथ्य है, वहां-वहां जनसामान्य आश्चर्यजनक उत्थान हुआ है। यह प्रजातन्त्रात्मक ध है। इसका कार्य मध्यम और निम्न वर्ग के प्रयत्न औ समस्त वर्गों के हार्दिक सहयोग का फल है।

आर्यसमाज की शक्ति और उत्साह का बांध शिक्ष कष्ट निवारण, पिछड़े वर्ग के उद्धार व सुधार, शास्त्री विद्वत्तापूर्ण और प्रचारात्मक साहित्य की सृजना के विस्तृ किनारों को तोड़कर प्रवाहित हो रहा है।

नवभारत के भौतिक एवं आचारिक जीवन प आर्य समाज का प्रभाव जो संख्या की दृष्टि से छोटा विस्मयकारी रहा है।

अधिक समय नहीं बीता है जबकि हिन्दू समा का एक भाग, जिसे गलती से सनातन समाज कहा जा था, सर्वत्र आर्यसमाज के पीछे लाठी लिए फिरता दे जाता था और आध्यात्मिक एवं धार्मिक प्रश्नों के निपट के लिए सनातन समाज तर्क के प्रकाश का नहीं अपि लाठियों डंडों और फौजदारी की अदालतों का सहा लेने में नहीं झिझकता था। वह स्टेज समाप्त हो चुकी आर्यसमाज ने देश और धर्म की सेवा में अपने अस्ति की रक्षा की है। आज पौराणिक समाज आर्यसमाज अपना सर्वोत्तम साथ मानता है।

सुप्रसिद्ध इतिहासकार यदुनाथ सरका

स्वामी दयानन्द भारत को राजनैतिक, सामाजि और धार्मिक रूप से एकसूत्र में बांधना चाहते थे। भार को एक राष्ट्र का रूप देने के लिए उन्होंने भारत विदेशी शासन से मुक्त कराना चाहा। सामाजिक दृ से देशवासियों को एक करने के लिए उन्होंने प्रचलि मतों के स्थान में वेद द्वारा प्रतिपादित धर्म को स्थान दे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की कामना की थी। स्वामी दयानन्द को इन दोनों उद्देश्यों में सफलता मिली।

समाज सुधार के क्षेत्र में आर्यसमाज ने अद्‌भुत सेवा की है। अन्त्यजों का उद्धार करके इस धार्मिक संगठन ने अपने को समाज के सच्चे उद्धारक के रूप में प्रस्तुत किया है, इसने अन्तर्जातीय विवाहों को तथा विधवा विवाह को प्रोत्साहन दिया और क्रियात्मक रूप से अपने अनुयायियों में विवाह की आयु बढ़ाई है। इसकी शिक्षा, अकाल पीड़ितों की सहायता और अनाथों की रक्षा सम्बन्धी प्रगतियां श्लाघनीय हैं। शायद स्वामी दयानन्द सरस्वती का विशुद्ध धार्मिक प्रचार कुछ नीचे पड़ गया है। परन्तु इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि आर्यसमाज ने जनसामान्य में एकेश्वरवाद को लोकप्रिय बनाने में सफलता प्राप्त की है।

माडर्न रिव्यू के यशस्वी सम्पादक रामानन्द चटर्जी

आर्यसमाज और थियोसाफिकल सोयायटी के प्रसार से सफेद जाति की वरीयता के विश्वास का उन्मूलन हुआ।

ऐनी विसेण्ट

आर्यसमाज सब मनुष्यों की समानता को सिद्धान्त रूप में स्वीकार करता है। यह जन्मना जात-पात का खण्डन करता है। और गुण, कर्म व योग्यता के आधार पर वर्ण व्यवस्था को मानता है। इस विभाजन से धर्म का कोई सम्बन्ध नहीं होता। सबसे बढ़कर अस्पृश्यों की घृणित मौजूदगी को यह बर्दाश्त नहीं करता और स्वामी जी से बढ़कर उनके अपहृत अधिकारों का उत्साही रक्षक और कोई दूसरा नहीं हुआ। वे आर्यसमाज में समानता के आधार पर प्रविष्ट किये जाते हैं क्योंकि आर्य कोई जाति नहीं है। आर्य श्रेष्ठ और उन्नतमना व्यक्ति को कहते हैं।

स्त्रियों की दुर्दशा के निवारण के लिंए दयानन्द ने बड़ी उदारता और वीरता के साथ कार्य किया।

राष्ट्रीय पुनर्जागरण में जो इस समय भारत में दीख पड़ रहा है दयानन्द ने सबसे प्रबल शक्ति के रूप में कार्य किया। उनके आर्यसमाज ने इच्छा व अनिच्छा पूर्वक बंगाल के १९०५ के विप्लव का मार्ग बताया था। दयानन्द सदैव सार्वजनिक रूप से यह घोषणा करते थे कि उनका समाज अराजनैतिक है और ब्रिटिश गवर्नमेंट का निर्णय इससे भिन्न था। आर्यसमाज अपने सदस्यों की तत्सम्बन्धी कार्यवाही से समझौता करता था। दयानन्द राष्ट्रीय संगठन और पुनर्निर्माण का सर्वाधिक उत्साही मसीहा था। मैं समझता हूं कि उसी ने जागृति बनाये रखी।

रोम्या रोला

आर्य समाज मेरी माता है।

लाला लाजपत राय

आर्य समाज ने उस महान सुधार का मार्ग बनाया है जिसकी अपने नैतिक और अध्यात्मिक महत्ता के उच्च स्थान की पुनः प्राप्ति के लिए भारत प्रतीक्षा करता रहा था और इसके संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती को आधुनिक भारत के निर्माताओं की अगली पंक्ति में स्थान प्राप्त है।

मोहन सिंह मेहता (उदयपुर)

संस्कृत के प्रति उत्साह उत्पन्न करने में आर्य समाज ने अद्‌भुत भूमिका निबाही है। पश्चिमी विचारधारा और सभ्यता से कुछ समय तक भारतीयों के बौद्धिक संतुलन के नष्ट होने और पैरों के लड़खड़ाने का खतरा उत्पन्न हो गया था। एक पीढ़ी से पहले शिक्षित एवं आधुनिक भारतीय संस्कृति को और हिन्दू फिलासफी को प्राचीन बर्बरकाल की निशानी मानकर उनसे घृणा करते थे। यदि आज इनके प्रति श्रद्धा है और बौद्धिक ऊहा-पोह की प्रवृत्ति कार्यरत है तो इसका अधिकांश श्रेय आर्यसमाज को प्राप्त है।

अमरनाथ झा

आर्य समाज के कुछ अनुयायियों ने बाद में जिस ढंग को अपनाया उसके कुछ अंश से हमारा मतभेद हो सकता है, परन्तु समष्टिगत रूप में आर्यसमाज ने शिक्षा और समाज सुधार जनहित के लिए त्याग और बलिदान की दिशा में अग्रणी के रूप में कार्य किया है।

सर सीताराम

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महर्षि दयानन्द का कार्य उनकी उस भावना की अपेक्षा जिसमे प्रेरित होकर उन्होंने यह कार्य किया था, उनके वचनों के प्रति अधिक श्रद्धा दर्शाये जाने से आच्छादित नहीं होने देना चाहिए। यदि महर्षि जैसा सत्य के प्रति सुधार इंन प्राचीन देश और उसके निवासियों के प्रति प्रेम उनके अनुयायियों के हृदयों को उद्वेलित करता रहे तो निश्चय ही आर्यसमाज अपनी उपयोगिता की अवधि को बढ़ायेगा और वर्तमान सामाजिक एवं धार्मिक जीवन की उथल-पुथल में महान सफलता के सेहरे से अलंकृत होगा।

पी. वसु

स्वामी दयानन्द की जीवित जागृत शिक्षाओं की जड़ें बहुत गहरी पहुंच गयी हैं और आर्यसमाज उनके फल-फूलों का बहुमात्रा में उपयोग कर रहा है। किन्हीं उन व्यक्तियों की जो आर्यसमाजी नहीं हैं उन समस्त शिक्षाओं से सहमति नहीं भी हो तब भी यह स्वीकार करना होगा कि स्वामी दयानन्द ने वैदिक ऋषियों के अधिक मौलिक एवं पवित्र सिद्धान्तों को पुनरुज्जीवित करके उन्नति की दिशा में यह योग दिया है जिसकी बड़ी आवश्यकता थी।

ए. वी. लेथे (बेल्जियम)

स्वामी दयानन्द ने जो मूल्यवान निधियां छोड़ी हैं, अस्पृश्यता का स्पष्ट विरोध निःसंदेह उनमें एक निधि है।

महात्मा गांधी

मैं आधुनिक भारत के महान् पथ-प्रदर्शक स्वा॰ दयानन्द के प्रति श्रद्धांजलि प्रस्तुत करता हूं जिन्हो॰ मतमतान्तरों और अनुष्ठानों के बीहड़ जंगल में से जि॰ देश के पतन के काल में गहरी घास उग आई थी म॰ को परिष्कृत किया ताकि हिन्दू लोग परमात्मा के प्र॰ निष्ठा और मानव सेवा का सादा और विवेकपूर्ण जी॰ व्यतीत कर सकें।

सत्य के अप्रतिम दर्शनों, दृढ़ निश्चय एवं सा॰ के संबल से उन्होंने हमारे आत्मसम्मान और हृदय॰ आलोकित करने के लिए जो कार्य एवं प्रचार किया, आधुनिक काल की प्रगतिशील भावना से संगति बि॰ के लिए प्रयत्नशील हो सके और साथ ही भारत के॰ गौरवपूर्ण भूतकाल से सम्पर्क बनाये रख सके जब॰ उसने अपने वजूद को विचार और कर्म की स्वतं॰ और चमकती हुई आध्यात्मिक साधना में व्यक्त कि॰ था।

रवीन्द्रनाथ टै॰

आर्यसमाज ने लड़के और लड़कियों की शि॰ के प्रसार, स्त्रियों की दशा में सुधार और दलितोद्धार॰ बहुत अच्छा कार्य किया है।

पं॰ जवाहर लाल ने॰

नत मस्तक सब आर्यजन, करते तुम्हें प्रणाम
अजर-अमर है विश्व में, दयानन्द का नाम
दयानन्द का नाम, महर्षि पदवी पाई
भूले-भटके जन-गण-मन को राह दिखाई
गोरे भारत नहीं छोड़ते राज़ी-राज़ी
अगर न देते योग देश के आर्यसमाजी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सत्यार्थप्रकाश की प्रासंगिकता

❑ डॉ० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

ऋषि दयानन्द जिस समय १८६० में गुरु विरजानन्द जी के पास विद्याध्ययन के लिए पहुंचे, उस समय उनकी आयु ३६ वर्ष की थी। १८६३ में उन्होंने अपने गुरु से दीक्षा ली और उनके पास से अध्ययन समाप्त कर जीवन क्षेत्र में उतर पड़े। इस समय वे ३९-४० वर्ष के हो चुके थे। विरजानन्द जी के पास उन्होंने जो कुछ सीखा वही उनकी वास्तविक शिक्षा थी, क्योंकि इससे पहले वे जो कुछ पढ़ आये थे उसे विरजानन्द जी ने भुला देने की उनसे प्रतिज्ञा ली थी। इस प्रकार ऋषि दयानन्द जी की यथार्थ शिक्षा १८६० से १८६३ तक अर्थात् कुल तीन वर्ष हुई थी। उन्होंने पीछे चलकर अपने जीवन काल में जितने व्याख्यान दिये, जितने ग्रंथ लिखे, जितने शास्त्रार्थ किये, वह इन तीन वर्षों के अध्ययन का ही परिणाम था। इसी से स्पष्ट होता है कि इन तीन सालों में उन्होंने जो पाया था वह कितना मूल्यवान था।

अपने गुरु विरजानन्द जी से ऋषि दयानन्द ने जो गुर पाया था वह आर्ष तथा अनार्ष ग्रंथों में भेद करना था। ३६ वर्ष की आयु से पहले उन्होंने जो कुछ पढ़ा था वह अनार्ष ग्रंथों का अध्ययन था। आर्ष ग्रंथों के अध्ययन ने उनके जीवन, उनके विचारों में जो क्रान्ति उत्पन्न कर दी उससे भारत के पिछले वर्षों का इतिहास बन गया।

इस क्रान्ति का मूल स्रोत सत्यार्थप्रकाश है। सत्यार्थप्रकाश १८७४ में लिखा गया। मुरादाबाद के राजा जयकृष्णदास जी काशी में डिप्टी कलेक्टर थे तब ऋषि दयानन्द काशी पधारे। राजा जयकृष्ण दास ने ऋषि से कहा आपके उपदेशामृत से वे ही व्यक्ति लाभ उठा सकते हैं जो आपके व्याख्यान सुनते हैं। जिन्हें आपके व्याख्यान सुनने का अवसर नहीं मिलता उनके लिए अगर आप अपने विचारों को ग्रंथ रूप में लिख दें, तो जनता का बड़ा उपकार हो। ग्रंथ के छपने का भार राजा जयकृष्ण दास ने अपने ऊपर ले लिया। यह आश्चर्य की बात है कि यह बृहत्काय तथा महत्त्वपूर्ण ग्रंथ, जिसे पं० गुरुदत्त विद्यार्थी ने १४ बार पढ़कर कहा कि हर बार के अध्ययन से उन्हें नया रत्न हाथ आता है, कुल साढ़े तीन महीनों में लिखा गया।

केवल तीन मास में

सत्यार्थप्रकाश का गहराई से अध्ययन करने पर पता चलता है कि इसमें ३७७ ग्रंथों का हवाला है। इस ग्रंथ में १५४२ वेदमन्त्रों या श्लोकों के उद्धरण दिये गये हैं। चारों वेद, सब ब्राह्मण ग्रंथ, सब उपनिषद्, छहों दर्शन, अठारह स्मृति, सब पुराण, सूत्र ग्रंथ, जैन बौद्ध ग्रंथ, बायबल, कुरान इन सबके उद्धरण ही नहीं, उनके रेफरेंस भी दिये गये हैं। किस ग्रंथ में कौन सा मन्त्र या श्लोक, या वाक्य कहां है, उसकी संख्या क्या है यह सब कुछ इस साढ़े तीन महीनों में लिखे ग्रंथ में मिलता है। आज का कोई रिसर्च स्कालर अगर किसी विश्वविद्यालय की संस्कृत की अप-टु-डेट लायब्रेरी में, जहां सब ग्रंथ उपलब्ध हों, इतने रेफरेंस वाला कोई ग्रंथ लिखना चाहे तो भी उसे सालों लग जायें, जिसे ऋषि दयानन्द ने साढ़े तीन महीनों में तैयार कर दिया था। साधारण ग्रंथ की बात दूसरी है, सत्यार्थप्रकाश एक मौलिक विचारों का ग्रंथ है। ऐसा ग्रंथ जिसने समाज को एक सिरे से दूसरे सिरे तक हिला दिया। जिन ग्रंथों ने संसार को झकझोरा है उनके निर्माण में सालों लगे हैं। कार्ल मार्क्स ने ३४ वर्ष इंग्लैंड में बैठकर 'कैपिटल' ग्रंथ लिखा था जिसने विश्व में नवीन आर्थिक दृष्टिकोण को जन्म दिया। किन्तु ऋषि दयानन्द ने 'सत्यार्थप्रकाश' साढ़े तीन महीनों में लिखा था जिसने नवीन सामाजिक दृष्टिकोण को जन्म दिया। मार्क्स के ग्रंथ ने यूरोप का आर्थिक ढांचा हिला दिया, ऋषि दयानन्द के ग्रंथ ने भारत का सांस्कृतिक तथा सामाजिक ढांचा हिला दिया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्रान्तिकारी विचारों का खजाना

सत्यार्थप्रकाश चुने हुए क्रान्तिकारी विचारों का खजाना है। ऐसे विचारों को जिन्हें उस युग में कोई सोच भी नहीं सकता था। समाज की रचना 'जन्म' के आधार पर न होनी चाहिए—सत्यार्थप्रकाश का यही एक विचार इतना क्रान्तिकारी है कि इसके व्यवहार में आने से हमारी ९० प्रतिशत समस्याएं हल हो जाती हैं। ऐसे संगठन में जन्म से न कोई ऊंचा; न कोई नीचा, जन्म से न कोई गरीब, न कोई अमीर, जो कुछ हो कर्म से हो ऐसी कौन सी समस्या है जो इस सूत्र से हल नहीं हो जाती।

शिक्षा क्षेत्र में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का विचार सत्यार्थप्रकाश की ही देन है। जिसे पकड़कर उत्तर भारत में जगह-जगह गुरुकुलों का जाल बिछ गया। आज भी हमारी शिक्षा प्रणाली की जो छीछलेदर हो रही है उसका इलाज गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में ही निहित है। दादाभाई नौरोजी ने 'स्वराज्य' शब्द का प्रयोग किया था। इन सबसे पहले ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के ८वें समुल्लास में लिखा था—"कोई कितना ही कहे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम है।" ऋषि दयानन्द के ये वाक्य उस जगत् प्रसिद्ध अंग्रेजी वाक्य से जिसमें कहा गया था "Good government is not substitute for self-government" इतने मिलते-जुलते हैं कि १८७४ में अंग्रेजों के राज्य में कोई व्यक्ति यह लिखने का साहस कर सकता था यह जानकर आश्चर्य होता है।

आज जिन समस्याओं को लेकर हम उलझे हैं, हरिजनों की समस्या, स्त्रियों की समस्या, गरीबी की समस्या, शिक्षा की समस्या, देशभाषा की समस्या, चुनाव की समस्या, नियम तथा व्यवस्था की समस्या, गोरक्षा की समस्या कौन सी समस्या है जिसका हल सत्यार्थप्रकाश में मौजूद नहीं है और कौन सा ऐसा हल आज के राजनीतिज्ञों ने ढूंढ़ निकाला है जो सत्यार्थप्रकाश में पहले से नहीं है।

वेदों के नाम पर

हिन्दू समाज की सबसे बड़ी समस्या वेदों की थी। यहां हर कोई हर बात के लिए वेदों का नाम लेता था। स्त्रियों तथा शूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं? क्योंकि वेदों में लिखा है—'स्त्री शूद्रौ नाधीयता बाल विवाह क्यों होना चाहिए? क्योंकि वेदों में है—अष्टवर्षा भवेत् गौरी नववर्षा च रोहिणी। दश भवेत् कन्या तत ऊर्ध्वं रजस्वला। माता चैव पिता ज्येष्ठो भ्राता तथैव च, त्रयस्ते नरकं यान्ति दृष्ट्वा रजस्वलाम्। जन्म से वर्ण व्यवस्था क्यों मानें? क्यों वेद में लिखा है—'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्'। ब्रा परमात्मा के मुख और शूद्र उसके पांव से उत्पन्न हु जैसे मुख बाहू और बाहू मुख नहीं बन सकता, प्रकार ब्राह्मण शूद्र तथा शूद्र ब्राह्मण नहीं बन सक जब ऋषि दयानन्द ने यह देखा कि वेदों का नाम हर संस्कृत वाक्य को वेद कहा जा रहा है और वेदों उद्धरण देकर वेदमन्त्रों का अनर्थ किया जा रहा है, उन्होंने निश्चय कर लिया कि वेदों को ही केन्द्र बना हिन्दू समाज की रक्षा की जा सकती है और वह तभी की जा सकती है जब जन-साधारण की समझ आ जाये कि वेदों में क्या कहा गया है। ऋषि दयानन्द वेदों से वेदों पर प्रहार किया।

वैदिक वाङ्मय के सम्बन्ध में ऋषि दयानन्द खोज यह थी कि हर संस्कृत वाक्य तथा हर संस्कृत वेद नहीं है। ब्राह्मण ग्रंथ, उपनिषद्, स्मृति, पुराण, ग्रंथ ये सब वेद नहीं हैं। इन ग्रंथों में जो कुछ लिखा वह अगर वेद विरुद्ध है तो वह त्याज्य है, जो वेदानु है वही ग्राह्य है। ऋषि दयानन्द का हिन्दू समाज कहना यह था कि अगर वेद को तुम अपनी संस्कृति आधार मानते हो, तो इस पैमाने को लेकर चलना हो तुम जो चाहो वह वेद नहीं है, वेद जो है वह मा होगा। इस कसौटी पर कसने से हिन्दू समाज की प्रतिशत रूढ़ियां अपने आप गिर जाती हैं। विचारधारा को प्रकट करने के लिए उन्होंने दो शब्दों प्रयोग किया। आर्ष ग्रंथ तथा अनार्ष ग्रंथ। अब संस्कृत साहित्य में इस दृष्टि को किसी ने नहीं अपना था। संस्कृत के हर ग्रंथ में जो कुछ लिखा मिलता था प्रमाणित मान लिया जाता था। ऋषि दयानन्द ने विचार को ठोकर मारकर गिरा दिया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेदों के शब्द रूढ़िज नहीं

वेदों के सम्बन्ध में ऋषि दयानन्द की दूसरी खोज यह थी कि वेद्रों के शब्द रूढिज नहीं, यौगिक हैं। यद्यपि यह विचार नया नहीं था, निरुक्तकार का भी यही कहना था। तो भी वेदों के सभी भाष्यकारों ने वैदिक शब्दों के रूढ़ि अर्थ ही किये थे। सायण, उव्वट, महीधर तथा उनके पीछे चलते हुए पाश्चात्य विद्वानों मैक्समूलर, राथ, विल्सन, ग्रासमैन ने मक्खी पर मक्खी मार अनुवाद किया था। सायण आदि एक तरफ वेदों को ईश्वरीय ज्ञान मानते थे, दूसरी तरफ उनमें इतिहास भी मानते थे जो वेदों के ईश्वरीय ज्ञान होने के सिद्धान्त से टकराता था। इस बात की उन्हें कोई चिन्ता नहीं थी। असल में सायण का भाष्य किसी गंभीर विद्वत्ता से नहीं किया गया था, वह एक विशिष्ट लक्ष्य को सामने रखकर किया गया था। दक्षिण के विजयनगरम हिन्दू राज्य के राजा हरिहर और बुक्का के वे मन्त्री थे। मुस्लिम संस्कृति राज्य में प्रतिष्ठित न हो जाये, इसलिए संस्कृत वाङ्मय का प्रसार करना मात्र इस भाष्य का उद्देश्य था। यही कारण था कि सायण या महीधर के भाष्य गहराई तक नहीं गये और असंगत बातों के शिकार रहे। वह यज्ञों का समय था इसलिए भाष्यकार समझते थे कि वेदों के अग्नि, वायु, इन्द्र आदि देवता सचमुच स्वर्ग में चले जाते हैं। पाश्चात्य विद्वानों को यह बात अपनी विचारधारा के अनुकूल पड़ती थी। उनका विचार विकासवाद पर आश्रित था। आदि में मानव जंगली था। जंगली आदमी सूर्य को, अग्नि को, वायु को देवता समझकर पूजे तो यह युक्तियुक्त प्रतीत होता है। पाश्चात्य विद्वान् कहने लगे कि वैदिक ऋषि क्योंकि जंगली थे इसलिए अनेक देवताओं को पूजते थे। इस निष्कर्ष में सायण आदि के भाष्य उनके विचार की पुष्टि करते थे।

ऋषि दयानन्द ने इस विचार को भी ठोकर मार कर गिरा दिया। वेदों से ही उन्होंने सिद्ध किया कि अग्नि आदि नाम भिन्न-भिन्न देवताओं के नहीं, एक ही परमेश्वर के ही ये भिन्न-भिन्न नाम हैं। ऋग्वेद (१/१६४/४६) में लिखा है— **'एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति अग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः'** परमात्मा एक है उसे अनेक नामों से स्मरण किया जाता है। इस एक मन्त्र से सारा का सारा विकासवाद कम से कम जहां तक वेदों का सम्बन्ध है, ढह जाता है।

तीन प्रकार के अर्थ

ऋषि दयानन्द का कहना था कि वैदिक शब्दों के तीन प्रकार के अर्थ होते हैं—आधिभौतिक, आधिदैविक तथा आध्यात्मिक। उदाहरणार्थ—इन्द्र का आधिभौतिक अर्थ अग्नि, विद्युत, सूर्य आदि है, आधिदैविक अर्थ राजा, सेनापति, अध्यापक आदि दैवीय गुण वाले व्यक्ति हैं, आध्यात्मिक अर्थ जीवात्मा, परमात्मा आदि है। इसी प्रकार अन्य शब्दों के विषय में कहा जा सकता है। इस कसौटी को सामने रखकर अगर वेदों को समझा जाये, तो न उनमें इतिहास मिलता है, न बहुदेवतावाद मिलता है, न जंगलीपन मिलता है, न विकासवाद मिलता है।

वेदों के जितने भाष्यकार हुए हैं-इस देश के तथा विदेशों के उनमें सबसे ऊंचा स्थान ऋषि दयानन्द का है। अगर वेदों को किसी ने समझा तो ऋषि दयानन्द ने। अरविन्द घोष ने लिखा है—

"In the matter of Vedic interpretation Dayanand will be honoured as the first discoverer of the right clues. Amidst the chaos and obscurity of old ignorance and agelong misunderstanding, he was the eye of direct vision. That piereed to the truth and fastened on that which was essential."

इस युग के महायोगी श्री अरविन्द का कहना है कि जहां तक वेदों का प्रश्न है दयानन्द सबसे पहला व्यक्ति था जिसने वेदों के अर्थों को समझने की असली कुंजी खोज निकाली। वेदों का अर्थ समझने के लिए सदियों से जिस अन्धकार में हम रास्ता टटोल रहे थे उसमें दयानन्द की दृष्टि ही इस अन्धकार को भेद कर यथार्थ सत्य पर जा पहुंची थी।

उन्नीसवीं शताब्दी में भारत में अनेक समाज सुधारक हुए। ऋषि दयानन्द, राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन इसी युग कीं उपज थे। वे सब एक तरफ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू समाज के पिछड़ेपन को देख रहे थे, दूसरी तरफ पश्चिमी देशों की प्रगतिशीलता को देख रहे थे। यह सब देखकर वे हिन्दू समाज को रूढ़ियों की दासता से मुक्त करना चाहते थे। ऋषि दयानन्द तथा दूसरों की विचारधारा में भेद यह था कि जहां दूसरे हिन्दू धर्म, हिन्दू संस्कृति तथा हिन्दुत्व को ही समाप्त करने पर तुल गये, वहां ऋषि दयानन्द ने हिन्दुओं को हिन्दू रखते हुए उन्हें नवीनता के नये रंग में रंग दिया। कोई वृक्ष जड़ के बिना नहीं खड़ा रह सकता है। जड़ कट जाये, तो वृक्ष गिर जाता है। जड़ को मजबूत बनाकर जो वृक्ष उठता है वही टिका रहता है।

कोई समाज अपने भूत के बिना नहीं जी स[क] भूत में पैर जमाकर भविष्य की तरफ बढ़ना पी[छे] देखना, आगे भी देखना यही किसी समाज के जीव[न] गुर है। ऋषि दयानन्द ने इसी गुर को पकड़ा था। वेदों की तरफ देखो, उसमें जमकर आगे भविष्य तरफ पग बढ़ाओ, भूत को छोड़ दोगे तो वृक्ष की कट जायेगी भविष्य को नहीं देखोगे तो उठ नहीं स[कोगे] यह ऋषि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश का सन्देश है, ऋषि दयानन्द के वेद भाष्य का सन्देश है।

"मेरा इस (सत्यार्थप्रकाश) ग्रन्थ को बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्यासत्य का निर्णय करना है। अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना समझा है।.. जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो। .... क्योंकि सत्य के बिना कोई भी साधन मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।"

"विद्वानों के विरोध से अविद्वानों में विरोध बढ़कर अनेकविध दुःख की वृद्धि और सुख की हानि होती है। इस हानि में जो कि स्वार्थी मनुष्यों को प्रिय है—सब मनुष्यों को दुःखसागर में डूबा दिया है।

❑ महर्षि दयानन्द सरस्वती

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सत्यार्थप्रकाश ने जीवन बदल दिये

□ श्री अमरस्वामी सरस्वती

मौलाना मौलवी हैदर अली बड़े आलिम फाजिल थे वह श्री पं० भोजदत्त जी आर्य मुसाफिर के पास दो महीने रहे और उनसे सत्यार्थप्रकाश का १४वां समुल्लास कुरान से मिला कर पढ़ा। दो महीने के बाद अपने बक्स में से एक बड़ा तेज छुरा निकाल कर श्री पं० जी की धर्मपत्नी के चरणों में रखकर कहा—मैं यह छुरा पंडित जी को मारने के लिए लाया था, पर साथ ही मैं तहकीक हक की तलाश में भी था, अगर हकीकत इनके साथ न देखता तो पंडित जी को मार देता। इनके मुंह से सत्यार्थप्रकाश पढ़कर मैं हकीकत का कायल हो गया हूं। अब यह छुरा आपके चरणों में रखता हूं, अब आप मेरी मां हैं।

वह मौलवी साहब शुद्ध हुए उनका नाम पं० सत्यदेव जी रखा गया। उन्होंने कई किताबें कुरान के खिलाफ लिखी थीं।

मौलवी मुहम्मद अली कुरैशी अरबी के बड़े विद्वान् थे। सत्यार्थप्रकाश पढ़कर उन्होंने इस्लाम छोड़ दिया। शुद्ध होकर वह पं० शांति स्वरूप बने कुरान बहुत अच्छा पढ़ते थे। फर्रूखाबाद और हरदोई में रहे, सारे देश में प्रचार किया मुबाहिसा किये। एक बार एक राजा को हराकर एम. एल. ए. बने। ९० वर्ष की उम्र तक समाज का काम किया। बड़े साधुवृत्ति के सज्जन थे।

गुजरांवाला (पंजाब) के मुस्लिम हाई स्कूल के हैडमास्टर मि० अब्दुल गफूर साहिब सत्यार्थप्रकाश पढ़कर आर्य बने उनका नाम पं० धर्मपाल रखा गया था।

ईरानी युवक पठान अकबर खां बीकानेर में सब इन्सपेक्टर पुलिस था, वह ठाकुर महावीर सिंह जी पुलिस अफसर से सत्यार्थप्रकाश पढ़कर आगरा में श्री पं० भोजदत्त जी आर्य मुसाफिर के पास आये। पंडित जी ने शुद्ध करके उनका नाम ठाकुर उत्तम सिंह रख दिया। पीला जनेऊ पहनकर वह बीकानेर गये, उनकी माता उर्दू बोलना नहीं जानती थीं। फारसी ही बोलती थीं। जनेऊ पहने अकबर खां को देखकर बोली—'अकबर खां तो काफिर गश्ती जुन्नार मीदारी' अकबर तू काफिर हो गया जनेऊ रखता है। जबाब में अकबर खां—नहीं ठाकुर उत्तमसिंह जी ने कहा वाल्दा!

काफिर न गश्तुम बल्कि अज कुफ्र बराम्दम्।"

मैं काफिर नहीं हुआ बल्कि कुफ्र से बाहर निकला हूं।

थानेदारी छोड़ दी और आगरा में मुसाफिर अखबार के मैनेजर बनकर रहे।

५. सत्यार्थप्रकाश पढ़कर दीन मुहम्मद स्वामी विज्ञानानन्द सरस्वती बने और ९८ वर्ष की उम्र तक घोर तप और त्याग के साथ आर्य समाज की सेवा की, विशाल संन्यासाश्रम गाजियाबाद में बना गये।

६. सत्यार्थप्रकाश पढ़कर एक मारवाड़ी युवक जगतबन्धु को घर छोड़ना पड़ा। पिता ने घर से निकाल दिया सत्यार्थप्रकाश क्यों पढ़ता है? युवक ने अमृतसर के हाल बाजार में सिलाई की मशीन की सुइयां बेचीं फिर मशीनें बेची और सेठ जगतबन्धु बने। आर्यसमाज लोहगढ़ के वर्षों प्रधान रहे।

७. रामप्रसाद बिस्मिल ने अपनी आत्मकथा में स्वयं लिखा है कि मैं सत्यार्थप्रकाश पढ़कर ही इस रूप में आया हूं।

८. घोर पौराणिक पं० लीलाधर शास्त्री को मैंने सत्यार्थप्रकाश और ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका दो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पुस्तकें दीं, उनको पढ़कर वह दृढ़ आर्यसमाजी बनें और आर्य समाज ग्वालियर के वर्षों तक प्रधान रहे।

सत्यार्थप्रकाश के प्रभाव से पुराणों के पाठ बदल गये।

बाइबिल का रूपान्तर हो गया और कुरान के मानी बदल गये।

सत्यार्थप्रकाश को बिना पढ़े और बिना समझे कोई मनुष्य पक्का आर्यसमाजी सिद्धान्ती नहीं बन सकता है।

सत्यार्थप्रकाश को जिसने पढ़ लिया और समझ लिया वह ऐसा दृढ़ सिद्धान्ती बनता है कि वह डगमगा नहीं सकता है।

बिहार में एक स्थान है राजधनवार। वहां आर्यसमाजी एवं पौराणिकों एक शास्त्रार्थ का आयोजन हुआ। आर्य जगत् की ओर से शास्त्रार्थकर्त्ता थे—ठा० अमरसिंह जी शास्त्रार्थ महारथी। पौराणिकों की ओर से थे—पं० अखिलानन्द जी कविरत्न।

पं० अखिलानन्द जी बोलने के लिए खड़े हुए। बोलते-बोलते हाथ नचा-नचा कर और अपनी ओर संकेत करके कहने लगे इस घर को आग लग गई घर के चिराग से मैं पहले आर्यसमाजी था, अब सनातनी हो गया और आर्यसमाजियों का डटकर खण्डन करता हूं, इस घर को आग लग गई घर के चिराग से।

जब पण्डित जी अपनी बात कह चुके तक ठाकुर अमरसिंह जी बोलने के लिए खड़े हुए। वे बोले—हमारे घर में मिट्टी के तेल की ढिबरी जलती थी। वह दुर्गन्ध देती थी, घर की दीवारों को भी काला करती थी, प्रकाश भी बहुत मन्द था। विद्युत का युग आया। घरों में विद्युत के बल्व जलने लगे। अपने विद्वानों की ओर संकेत करके बोले—हमारे यहां आर्यसमाज में तो आचार्य रामानन्द जी शास्त्री, पं० अयोध्या प्रसाद जी, पं० वेदव्रत जी, पं० गंगाधर शास्त्री के रूप में पांच-पांच सौ वाट के बिजली के बल्व प्रकाश कर रहे हैं। हमने मिट्टी के तेल की ढिबरी को उठाकर चौराहे पर फैंक दिया। पौराणिकों ने देखा और हमसे पूछा यह ढिबरी आपके काम की तो रही नहीं, आपकी आज्ञा हो तो हम उठा कर ले जाएं? हमने आज्ञा दे दी और वे इस ढिबरी को उठाकर ले गए। अब यह उनके घरों में दुर्गन्ध फैला रही है और उनके घरों की दीवारों को काला कर रही है।

उत्तर इतना सटीक था कि आर्य विद्वान् तो हंसी से मंच पर लोट-पोट हो रहे थे और पौराणिकों को कोई उत्तर नहीं सूझ रहा था। जनता ने करतल ध्वनि से आर्यसमाज का जयघोष किया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दयानन्द, सिख और आर्यसमाज

- ❑ डॉ० प्रशान्त वेदालंकार

सिख मत और आर्यसमाज के सिद्धान्तों में केवल सैद्धान्तिक समानता ही नहीं है, व्यावहारिक स्तर पर भी दोनों में परस्पर सौहार्द और सहयोग की भावना रही है।

महर्षि दयानन्द सन् १८७७ में पंजाब में पहुंचे थे। पंजाब में आने का निमंत्रण उनको सरदार विक्रमसिंह ने दिया था। सरदार विक्रमसिंह १८७४-७५ में बम्बई में स्वामी जी के भाषण सुन चुके थे और दिल्ली दरबार में भी उनके सम्पर्क में आये थे।

स्वामी दयानन्द ३१ मार्च १८७७ को लुधियाना पहुंचे तो सिखों के नेता सरदार जयमानसिंह ने अपने निवासस्थान पर २८ दिनों तक उनके भाषण करवाये थे और जब स्वामी दयानन्द लाहौर पहुंचे तो मुस्लिम नेता रहीम खां के मेहमान बने। उन्होंने २४ जून १८७७ को अनारकली आर्यसमाज की स्थापना की। उनके पहले मंत्री थे भाई जवाहरसिंह, जिन्होंने आर्यसमाज के ३०० सदस्य बनाये। भाई दित्तासिंह, भाई मायासिंह और भगत लक्ष्मणसिंह आदि अनेक सिखों ने आर्यसमाजों की सदस्यता ग्रहण की।

स्वामी जी ५ जुलाई १८७७ को अमृतसर पहुंचे तो ट्रिब्यून समाचार पत्र के सम्पादक दयालसिंह मजीठा ने उनका स्वागत किया और उन्हें अपने निवासस्थान पर ठहराया। स्वामी जी ने अपने ग्रंथ आर्योद्देश्यरत्नमाला की रचना भी वहीं की। श्री मजीठा के प्रयत्नों से वहां ४० रुपये किराये के कमरे में आर्यसमाज की स्थापना की गयी। उस आर्यसमाज के प्रथम मंत्री एडवोकेट बाबा नारायणसिंह थे।

स्वामी दयानन्द जब जालन्धर पहुंचे तब वहां वे सरदार सुरजीत सिंह के घर रुके और वहां उन्होंने सरदार विक्रमसिंह के घरों में भाषण दिये। आर्य कन्या पाठशाला जो आज भी चल रही है उसकी भूमि सरदार विक्रमसिंह ने ही दी थी। इसी प्रकार फिरोजपुर में स्वामी जी सरदार स्वरूप सिंह जी के घर में रुके। ४ अप्रैल १८७८ को मुलतान आर्यसमाज की स्थापना हुई। उसके प्रथम अध्यक्ष सरदार प्रेमसिंह थे। श्री क्षितीश जी ने अपने ग्रंथ स्टौर्म इन पंजाब में स्वामी दयानन्द के सिंखों के साथ गहरे सम्बन्धों पर अत्यन्त विस्तार से प्रकाश डाला। स्वामी जी ने सरदार स्वरूपसिंह की इस बात के लिए विशेष प्रशंसा की है कि उन्होंने वैदिक धर्म के प्रसार में अत्यन्त योगदान दिया। स्वामी जी की प्रेरणा से लाहौर के सरदार जवाहर सिंह ने हिन्दी सीखी।

जब स्वामी जी ने गोरक्षा के लिए अभियान प्रारम्भ किया और ब्रिटिश सरकार को देने के लिए स्मरण पत्र तैयार किया तो इसमें सिखों विशेपतः नामधारी सिख नेता सरदार इन्द्रसिंह ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

मुस्लिम प्रभावित पंजाब का स्मरण करते हुए स्वामी जी ने इस बात के लिए नानक तथा गुरु गोविन्द सिंह की प्रशंसा की है कि उन्होंने अपने अपने ढंग से पंजाब के हिन्दुओं का अस्तित्व बनाए रखा। पंच ककार की प्रथा को दयानन्द ने बुद्धिमत्ता की संज्ञा दी है, परन्तु उसे केवल वीरता व शत्रुता के विरुद्ध युद्ध-प्रयोजन के निमित्त स्वीकार किया है।

आगरा और मुलतान में आर्यसमाज ने शुद्धि आन्दोलन चलाया। मुस्लिम नेता अत्यन्त रुष्ट हुए। उस समय पंजाब खालसा के महामंत्री सरदार लालसिंह ने घोषणा की कि सारा समाज शुद्धि आन्दोलन में आर्य समाज के साथ है।

१९३९ में आर्यसमाज ने नागरिक और धार्मिक अधिकारों के लिए हैदराबाद के निजाम के विरुद्ध आन्दोलन शुरू किया तो सिखों ने उनका पूरा साथ दिया। यहां तक कि ननकाना साहिब गुरुद्वारा समिति

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ने वहां एक जत्था भी भेजा। संतनगर के मंत्री हरभजन सिंह ने स्वयंसेवक भेजे। लाहौर के नेता श्री मानसिंह गामा के नेतृत्व में भी एक सत्याग्रही जत्था हैदराबाद गया। गुरु गोविन्द सिंह की निम्नलिखित कविता का गान उस सत्याग्रह में सिखों के लिए विशेष रूप से प्रेरक रहा।

जो तुम सिख हमारे आरज
देवो सीस धरम के कारज

१८८५ में लाहौर से आर्य पत्रिका का प्रकाशन हुआ तो उसके प्रथम सम्पादक सरदार अर्जुनसिंह बने जो शहीद भगत सिंह के दादा थे। सरदार अर्जुन सिंह ने वैदिक धर्म से सम्बद्ध अनेक ग्रंथों की रचना की। क्या यह आश्चर्य और प्रसन्नता की बात नहीं कि सर्वप्रथम सरदार छज्जू सिंह ने लाइफ एण्ड टीचिंग्स ऑफ स्वामी दयानन्द शीर्षक से १९०३ में अंग्रेजी में स्वामी दयानन्द की जीवनी लिखी थी।

लाला लाजपत राय ने एक स्थान पर लिखा है कि भगत सिंह के पिता आर्य प्रतिनिधि सभा लाहौर के प्रबन्धक थे और उनके सभी पुत्रों ने डी० ए० वी० कालेज और आर्यसमाजी विद्वानों से शिक्षा प्राप्त की। भगत सिंह को सारे संस्कार आर्यसमाज से ही प्राप्त हुए। वस्तुतः प्रारम्भ से लेकर आज तक अनेक सिख शिशु और युवक आर्यसमाज की शिक्षा-संस्थाओं में शिक्षा और देश और धर्म की प्रेरणा प्राप्त करते रहे हैं।

पर यह कथा केवल सिखों की दयानन्द व आर्यसमाज के सहयोग तक ही सीमित नहीं है। आर्यसमाज ने भी सदा सिखों के विविध आन्दोलनों में अपना सहयोग प्रदान किया। जब गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति ने भ्रष्ट महन्तों से गुरुद्वारों को बचाने का आन्दोलन प्रारम्भ किया तो कूटनीतिज्ञ ब्रिटिश सरकार ने घोषणा की कि यह महन्तों की व्यक्तिगत सम्पत्ति है, तब अकालियों ने अहिंसक सत्याग्रह प्रारम्भ किया। ब्रिटिश सरकार ने उसका विरोध किया। अकालियों ने अजनाला (अमृतसर) गुरुद्वारे के भाग से जब लकड़ी काटी तो उनके विरुद्ध मुकदमा दायर किया गया और उन्हें दण्ड दिया। तब सिखों को एक आन्दोलन क पड़ा था। सिखों ने सभी हिन्दुओं से सत्याग्रह को स बनाने के लिए अपील की। तब स्वामी श्रद्धानन्द ने सबसे आगे बढ़कर उनकी सहायता की। वे गु अमृतसर पहुंचे और स्वर्ण मन्दिर में सभा को सम्बो करते हुए कहा यह संघर्ष केवल सिखों का संघर्ष बल्कि प्रत्येक भारतीय का संघर्ष है। उन्होंने सत्याग्र भाग लिया तो ब्रिटिश सरकार ने उन्हें गिरफ्तार लिया। वे अमृतसर की मियांवाली जेल में डेढ़ वर्ष रहे। उनकी रचना बन्दी घर के विस्तृत अनुभव लिखी गयी। जेल में सिख उनसे आशीर्वाद प्राप्त थे। नवम्बर में गुरुनानक और दिसम्बर में गुरु गो सिंह का जन्म दिन मनाया गया तो स्वामी जी ने भाषण में गुरु गोविन्द सिंह को राज-ऋषि कहा। जे छूटने पर वे अमृतसर पहुंचे तो सिखों ने उनका स्वा किया। उन्हें सीधे स्टेशन से स्वर्णमन्दिर ले गये अकाल तख्त से उनसे भाषण देने की प्रार्थना की ग

१९३५ में गुरुद्वारा शहीदगंज के संघर्ष के का सारा सिख समाज व्यग्र हो उठा वे अपना मुक लाहौर उच्च न्यायालय में बहुत समय से लड़ रहे तब आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान प्रसिद्ध वक दीवान बद्रीदास ने सिखों का सहयोग किया। उन्हें प्रयत्नों से अंग्रेज न्यायाधीश को सिखों के पक्ष में अ फैसला सुनाना पड़ा। सिखों ने राय बहादुर बद्रीदास स्वर्ण मन्दिर में निमंत्रित करके उनका स्वागत कि उन्हें भेंट स्वरूप ३० हजार रुपये की विशाल धन देनी चाही तो उन्होंने उसे लेने से इन्कार कर दि उन्होंने कहा था—मैंने केवल अपना कर्त्तव्य का नि किया, यह मैंने प्राचीन शहीदों का स्मरण करने के किया है।

आर्य समाजी लेखक डॉ० धर्मान्नत सिंह ने अ पुस्तक वैदिक गुरुमति में लिखा है कि आर्य मं पुष्पावली में उल्लिखित नानक के ये शब्द—त दरि दाना बीना में मछली कैसे अन्त लह और नवमगु राम सिमर एहै तेरे काज हैं शब्द उन्होंने पहली इसी पुष्पावली में देखे थे। इसी स्थान पर उन्होंने मह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हंसराज के ज्येष्ठ भ्राता लाला मुलखराज भल्ला के उस ट्रैक्ट का उल्लेख किया है जिसमें एक सुरीली कविता धर्म हेतु गुरु तेगबहादुर जी दिल्ली में शीश दिया, दर्ज थी।

यह भी उल्लेखनीय है कि ट्रम्प (१८८३) के पश्चात् जपुजी का अंग्रेजी भाष्य आर्य समाजी विद्वान् बाबा छज्जू सिंह ने सन् १८८३ में प्रकाशित किया था। आर्य समाजी लेखक डॉ० सर गोकुल चन्द नारंग ने १९०८ में लन्दन में श्री गुरुगोविन्द सिंह के जन्मोत्सव पर एक व्याख्यान दिया था।

यहां यह भी उल्लेखनीय है कि देश में ब्रिटिश शासन के समय अधिकांश लोग पाश्चात्य होने लगे तो एक ओर आर्य समाज और दूसरी ओर गुरुद्वारे में इसका विरोध किया गया और लोगों को भारतीय बने रहने की प्रेरणा दी गयी। दोनों ने ही ईसाइयत से देश को बचाने का प्रयत्न किया।

आर्य समाज का ध्येय क्या है—कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। इस वाक्य के अनुसार सभी प्राणी एक ही परमात्मा के पुत्र हैं अतः मनुष्य मनुष्य में किसी प्रकार का भेद नहीं किया जा सकता। न क्षेत्रीय आधार पर, न जाति अथवा वर्ण के आधार पर। इस सिद्धान्त मे आर्यसमाज का किसी भी वर्ग से द्वेष भाव का प्रश्न नहीं है। वह सभी को समान दृष्टि से फैलाने का पक्षधर है।

नानक ने जब कहा नानक दुखिया सब संसार तो उसमें वैदिक मत और परोपकार की भावना थी। उसका उद्देश्य भी प्राणिमात्र का कल्याण था। नानक ने भी प्राणी-प्राणी में कोई भेद नहीं किया था। वे सबको समान दृष्टि से देखने के पक्षधर थे। सबको समान उन्नति दोनों का ही समान संकल्प है।

यह सत्य है कि संगठन के विकास के लिए अनेक बार छोटी बुद्धि के कुछ लोग दूसरे संगठन के विरोध मोल लेते हैं पर सिख व आर्य समाज के अधिकारी विद्वान् उनके व्यवहार को उचित नहीं मानते और उन्हें केवल अपने संगठन के विकास में लगाने का प्रयत्न करते हैं।

आइये, हम सिख मत और आर्यसमाज दोनों के समान उद्देश्य को ध्यान में रखकर उनके उद्देश्यों के प्रचार में जुट जाएं।

कुछ यात्री रेल में यात्रा कर रहे थे। अधिकांश मुसलमान थे। एक पण्डित जी थे। एक आर्य विद्वान् भी सहयात्री थे। रेल किसी स्टेशन पर रुकी। लोग पानी पीने के लिए उतरे। पण्डित जी भी उतरे। भीड़ बहुत थी, पण्डित जी पानी नहीं ले सके। दो-तीन स्टेशनों पर ऐसा ही हुआ। भोजन का समय हो गया। मुसलमानों ने अपनी-अपनी रोटियां निकाल लीं और पण्डित जी से भी भोजन करने के लिए कहा। पण्डित जी मुसलमानों का भोजन कैसे करते? संकोच से बोले—"आज एकादशी है, मेरा व्रत है।" एक मुसलमान ने पूछा—"एकादशी क्या होती है?" पण्डित जी कुछ बोले इससे पहले ही एक मुसलमान बोल उठा—"यह रोज़े की बीबी होती है।" मुसलिम बन्धु खिलखिला कर हंस पड़े। पण्डित जी खीसें निपोर कर रह गए। आर्य विद्वान् इसे सहन नहीं कर सके और बोले—"मौलाना यहीं कैसे रुक गए, आगे भी तो कहो।" मौलाना बोला—"अगली बात आप कह दीजिए।" आर्य विद्वान् ने कहा—"यह एकादशी बीवी तो रोज़े की ही है, परन्तु रखते इसे हिन्दू ही अपने घर में हैं सारे मुसलमानों की बोलती बन्द हो गई।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सच्चे सिख की पहचान

(१) ओं सतनाम।

जपुजीग्रंथ साहिब

प्रणवो आदि एकाकारा।
जल थल महियल कियो पसारा॥

अकालस्तुति गुरुगोविन्द सिंह दशमग्रंथ

परमेश्वर सर्वव्यापक व निराकार है, उसका मुख्य नाम 'ओम्' है, उसका जप जो करता है वह सच्चा सिख है।

पातंजल योगदर्शन एवं वेद के वचनों का ही यह सार है। देखिये

तज्जपस्तदर्थ भावनम्॥
तस्य वाचकः प्रणवः॥ *योग०*
ओम् क्रतो स्मर्। (यजु०) इत्यादि।

(२) ओंकार वेद निरमय।
चारों वेद होए सचियार॥
अखण्ड ग्रंथ भुवि वेद पाठ।
वेद पाठ मति पापा खाए॥

श्रीग्रंथ साहिब पृ० ४५०

चारों वेद ईश्वर की वाणी हैं, जो उनका श्रद्धापूर्वक पाठ करते तथा जीवन में उतारते हैं वे सच्चे सिख हैं।

(३) धन-धन माता देवकी,
जिन घर जामया कमलापति।
जसरथ राये नन्द राजा, रामचन्द्र नामा।

श्री ग्रंथसाहिब, रामकलि नामदेव

इसके अनुसार जो श्रीराम तथा श्रीकृष्ण पर श्रद्धा रखते हैं और उनको अपना पूर्वज मानकर गौरव अनुभव करते हैं, वे सच्चे सिख हैं।

(४) होम जग उरध तप पूजा।
कोटी तीर्थ स्नान कीजा।

श्रीग्रंथ साहिब मा० म० १.२६

केशव हवन करावन बैठ गुरु आहुति देते।
या विधकर सतगुरु निज कारज आनन्दपुर
दिन आये आरज॥

श्री पन्थ प्रकाश पृ० २०

अपने गुरुओं के आदेशानुसार जो वेदोक्त हवन श्रद्धा से करते हैं, वे सच्चे सिख हैं।

(५) हरये नमस्ते भ्रमस्ते नमः
हरिकरत नहीं दुःख जगह।

गौ० श० ८ श्रीग्रंथसाहि

नमस्ते अजाते। नमस्ते अपाते।

जाप साहिब श्री गुरु गोविन्द सिं

जो आपस में मिलते समय एक दूसरे का सत्कार 'नमस्ते' कहकर करते हैं, वे सच्चे सिख होते हैं।

(६) मिटे कष्ट गुअन छुटे खेद भारी।
यही देह आग्या तुरकन गहि खपाऊ,
गऊ घात का दोष जग से मिटाऊं॥

गुरु गोविन्द सिंह दशमग्रं

जो अपने गुरुओं के वचनों के अनुसार गाय माता की रक्षा करते हैं वे सच्चे सिख होते हैं।

(७) जो कोई होत भयो स्याना।
तिन-तिन अपनो पंथ चलाना।
प्रभु के पंथ न कोई चले।
पेड़ पात आपन ते जले॥

श्री गुरु गोविन्द सिंह रचित विचित्रनाटक

जो विभिन्न गुरुडमों में फंसकर नकली भगवानों के चक्र जाल से अपने को बचा पाते हैं वे सच्चे सिख होते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शिक्षा के दिशानायक दो महारथी

महात्मा हंसराज और महात्मा मुन्शीराम

❑ पं० क्षितीश वेदालंकार

३० अक्टूबर १८८३ को अजमेर में ऋषि दयानन्द के भौतिक शरीर के परित्याग के पश्चात् नेताओं ने जब विचार किया कि कोई ऐसा ऋषि स्मारक तैयार किया जाए जो उनकी भावनाओं के अनुरूप हो और उनके बताये आदर्शों के परिपालन में सहयाक हो, तब उनका ध्यान भी शिक्षा की ओर ही गया। पंजाब के आर्य नेताओं ने जब ऋषि की स्मृति को चिरस्थाई बनाने के लिए सार्वजनिक सभा में दयानन्द ऐंग्लो वैदिक स्कूल और कालेज की स्थापना का प्रस्ताव प्रस्तुत किया तो आर्य जनता में उत्साह का संचार हुआ और इस निमित्त जब धन की अपील की गयी तो तत्काल ६ हजार रु० एकत्र हो गये जिसकी तुलना इस समय में तीन लाख रुपये के बराबर की जा सकती है। यह दान प्रायः मध्यमवर्ग के लोगों द्वारा किया गया था जिसमें स्त्रियों की संख्या भी काफी थी। इस प्रस्ताव को अन्य समाजों के भी विचारार्थ भेज दिया गया और धन एकत्र करने के लिए एक उपसमिति बना दी गयी।

धन संग्रह के लिए जो उपसमिति बनाई गई थी, उसको जितना सहयोग मध्यम वर्ग के लोगों ने दिया उतना संभ्रान्त और उच्च कुल के लोगों ने नहीं दिया। परिणामस्वरूप जुलाई १८८५ तक केवल ग्यारह हजार रु० ही एकत्र हो सके। इतनी राशि भी बीस मास के परिश्रम का परिणाम थी। इससे कुछ लोगों में निराशा की भावना घर करने लगी।

तभी अकस्मात् एक ऐसी घटना घटी जिसने समस्त आर्यजनता में उत्साह की बिजली सी दौड़ा दी। ३ नवम्बर १८८५ को लाहौर आर्यसमाज की अन्तरंग सभा को लाला हंसराज का एक पत्र प्राप्त हुआ जिसमें उन्होंने उक्त प्रस्तावित संस्था के लिए अपनी सेवा समर्पित करने का निश्चय प्रकट किया और साथ ही यह भी लिखा कि मैं अपनी इस सेवा के बदले कोई पारिश्रमिक या वेतन नहीं लूंगा। यह समाचार जब आर्य जनता तक पहुंचा तब योजना के संचालक तो इस अद्भुत त्याग से आत्मविभोर हो उठे और जनसाधारण नयी उमंग से भर गया। लाला हंसराज जैसा होनहार तुरन्त बी. ए. पास कर स्नातक बना युवक जिसे सरकार में अन्यत्र कहीं भी अच्छी से अच्छी सर्विस मिल सकती थी और जो विलासतापूर्ण जीवन की ओर सहज ही आकर्षित हो सकता था तथा अपने परिवार के लिए भी वैसे ही सुख साधन जुटा सकता था उसके लिए यह त्याग का साधना पथ अपनाना, प्रेय को छोड़कर श्रेय की ओर चलना, सचमुच ही असामान्य घटना थी और इससे जनता में उत्साह की लहर दौड़नी स्वाभाविक थी।

१ जून १८८६ को दयानन्द ऐंग्लो वैदिक स्कूल का काम प्रारम्भ हो गया। प्रथम सप्ताह के अन्त तक ३०० विद्यार्थी स्कूल में भर्ती हो गये। जनता में इस स्कूल के लिए इतना उत्साह था कि जून मास बीतते न बीतते विद्यार्थियों की संख्या ५५० तक पहुंच गयी। महर्षि के स्मारक के रूप में स्थापित यह स्कूल अन्य स्कूलों से भिन्न था। उस समय अन्य स्कूलों में हिन्दी और संस्कृत का कोई स्थान नहीं था। जबकि इस स्कूल में इन दोनों भाषाओं को प्रमुख स्थान दिया गया था। विद्यालय का वातावरण धार्मिक था और छात्रों को वैदिक धर्म तथा आर्यसमाज की विचारधारा से निकट सम्पर्क का अवसर सुलभ था। अन्य स्कूलों की अपेक्षा इस स्कूल का परीक्षा परिणाम भी बहुत उत्कृष्ट था और यहां के विद्यार्थी अपनी अनुशासन प्रियता के लिए सर्वत्र सराहे जाते थे। अनुशासन प्रियता की यह धारा आज भी डी० ए० वी० में ज्यों की त्यों अक्षुण्ण है। यह आन्दोलन जिस तेजी से प्रगति कर रहा था और लोकप्रिय हो रहा था,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उसी का परिणाम हुआ कि जून १९८८ में कालेज विभाग भी खोल दिया गया।

इस आन्दोलन को सफल बनाने में और इसके लिए धन एकत्र करने में जितना परिश्रम पं० गुरुदत्त विद्यार्थी ने किया, कदाचित किसी अन्य ने नहीं किया। वे व्याख्यानों में इसके लिए अपील करतेहुए कहा करते थे कि बिना ब्रह्मचर्य के सामाजिक जीवन दुःखमय हो रहा है। ब्रह्मचर्य की ओर तब तक प्रवृत्ति नहीं होती जब तक वेदादि शास्त्रों का अध्ययन न किया जाए। इस विद्यालय से सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि उसमें धर्म शास्त्रों और धार्मिक शिक्षा को प्रमुख स्थान दिया जायेगा। वे व्याख्यानों में इन विद्यालयों और महाविद्यालयों द्वारा गौतम और कणाद उत्पन्न करने की बात भी कहा करते थे। जब पं० गुरुदत्त जैसा वक्ता हो और गौतम कणाद बनाने की योजना हो, तब धन एकत्र करने में क्या कमी रहती।

परन्तु दृढ़ आर्यसमाजी इस विद्यालय में केवल संस्कृत पढ़ाने मात्र से संतुष्ट नहीं थे। वे चाहते थे कि ऋषि दयानन्द के मन्तव्य के अनुसार अष्टाध्यायी पढ़ाने पर विशेष बल दिया जाये। क्योंकि व्याकरण ही प्रमुख वेदांग है जिससे वेदादि शास्त्रों के मर्म तक पहुंचा जा सकता है। बिना व्याकरण के गम्भीर शास्त्रों का अध्ययन सम्भव नहीं। परन्तु बी. ए. और एम. ए. में पंजाब यूनिवर्सिटी के नियमानुसार जो अन्य निर्धारित विषय रखे गये थे, उनके रहते अष्टाध्यायी को प्रमुखता देना सम्भव नहीं था, क्योंकि अष्टाध्यायी के पठन-पाठन के लिए विशेष परिश्रम अपेक्षित है। पं० गुरुदत्त विद्यार्थी यह भी चाहते थे कि डी० ए० वी० कालेज कमेटी के बजट में यह प्रावधान किया जाए कि हिन्दी, प्राचीन संस्कृत और वेदों के अध्ययन को प्रोत्साहन दिया जाएगा। वे यह भी चाहते थे कि कालेज में एक वैदिक विभाग अलग से खोला जाए जिसमें महाभाष्य, निरुक्त, निघण्टु, कात्यायन कोष, पिंगल काव्यालंकारसूत्र, वाल्मीकि रामायण, महाभारत, मनुस्मृति, ज्योतिष गणित, न्यायदर्शन, वैशेषिकदर्शन, सांख्यदर्शन, वेदान्तदर्शन, मीमांसादर्शन और दसों उपनिषदों का अध्ययन करवाया जाये। पर डी० ए० वी० कालेज कमेटी के अन्य स[...] इस महत्त्वाकांक्षी योजना से पूर्ण रूप से सहमत नहीं [...] सके। फलतः मतभेदों की वृद्धि होती गयी।

फिर भी डी० ए० वी० कालेज कमेटी ने [...] गुरुदत्त विद्यार्थी और उनके साथियों के सुझाव के अनु[...] महाविद्यालय विभाग में संस्कृत और अंग्रेजी को अनिवा[...] किया और संस्कृत की पाठविधि में अष्टाध्यायी, मनुस्मृ[...] वेदांगप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, निरुक्त, न्यायद[...] तथा अन्य दर्शन तथा एम. ए. में महाभाष्य, मीमांसाद[...] उपनिषद्, ऋग्वेद और यजुर्वेद के कुछ सूक्त रखे। निस्स[...] यह पाठविधि अत्यन्त उच्च स्तर की थी, परन्तु यह त[...] लागू की जा सकती थी जब पंजाब विश्वविद्यालय द्वा[...] स्वीकृत हो, क्योंकि तब तक डी० ए० वी० काले[...] यूनिवर्सिटी से सम्बद्ध हो चुका था। पंजाब विश्वविद्याल[...] ने महाविद्यालय विभाग में संस्कृत को वैकल्पिक विष[...] के रूप में रखा था, पर उसमें लौकिक साहित्य का [...] प्राधान्य थ, आर्ष साहित्य का नहीं। इसलिए डी० ए[...] वी० कालेज की पाठविधि में प्राचीन संस्कृत को सम्मिलि[...] करना सम्भव नहीं हो सका। फलतः असंतोष बना र[...] बल्कि और बढ़ गया। पंजाब के आर्यसमाजी क्षेत्र में [...] इस मतभेद की गूंज सुनाई देने लगी। शिक्षा सम्ब[...] विवाद के अलावा मांसाहार के सम्बन्ध में भी मतभे[...] उसमें जुड़ गया। पं० गुरुदत्त विद्यार्थी के रहते यह विवा[...] उग्र रूप धारण न कर सका। पर बाद में कालेज पार्[...] और गुरुकुलपार्टी या मांस पार्टी और घासपार्टी [...] कल्चरपार्टी और महात्मापार्टी के नाम से आर्यसमा[...] दो दलों में बंट गया। गुरुकुलपार्टी के समर्थक डी० ए[...] वी० सोसायटी से अलग हो गये, तो सोसायटी [...] अधिकारियों को अपने विचारों के अनुसार डी० ए[...] वी० संस्थाओं को विकसित करने की छूट मिल गयी।

डी० ए० वी० कालेज की पाठविधि से ज[...] आर्यसमाज के एक वर्ग में असन्तोष तीव्रतर हो गया [...] उन्होंने एक ऐसी संस्था की स्थापना के लिए आन्दोल[...] प्रारम्भ कर दिया जिसमें संस्कृत, आर्ष ग्रंथों और वेदा[...] शास्त्रों की शिक्षा की समुचित व्यवस्था हो और जिस[...] पढ़े विद्यार्थी आर्यसमाज के अच्छे उपदेश बन स[...]

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इसलिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की स्थापना के समय उसके उद्देश्यों में उपदेशक तैयार करने के लिए एक संस्था खोलना भी शामिल कर लिया गया। इस उद्देश्य की पूर्ति के निमित्त एक आर्योपदेशक पाठशाला स्थापित की गयी।

इस वैदिक पाठशाला में संस्कृत और शास्त्रों की पढ़ाई को बेशक प्रमुखता दी गयी थी, पर वह भी महर्षि के अभिमत के पूरी तरह अनुकूल नहीं थी।

मुंशीराम का कहना था 'आर्यसमाज गुण कर्मानुसार वर्णव्यवस्था को मानता है। बिना आश्रम व्यवस्था के (जिसमें जन्मना जाति को कोई महत्त्व नहीं दिया गया हो), वर्ण व्यवस्था कायम नहीं की जा सकती। आश्रमों पर ही वर्ण निर्भर है। जब गुरुकुल नहीं तो आश्रम पद्धति का उद्धार कैसे हो?

महात्मा पार्टी के समर्थकों में भी गुरुकुल प्रणाली को अव्यावहारिक मानने वालों की कमी नहीं थी। जंगलों में अपने बच्चों को कौन भेजेगा? बिना मां-बाप के बच्चे कैसे रहेंगे? केवल संस्कृत पर जोर देना भी जीवकोपयोगी नहीं होगा, फिर उसके लिए पैसा कहाँ से आएगा आदि-आदि। पर मुंशीराम की योजना का उत्साहपूर्वक स्वागत करने वालों की भी कमी नहीं थी। शुरू-शुरू में सहयोग देने वालों में जो कुछ लोग थे उनमें विदर्भ में अकोला जिले के लातूर नामक नगर के जमींदार श्री शिवरत्न सिंह वर्मा ने अपने चचेरे भाई श्री गोविन्द सिंह वर्मा की ओर से गुरुकुल के लिए दस हजार रु० देने और अपने परिवार के तीन बालक गुरुकुल में प्रविष्ट कराने की घोषणा की। इससे मुंशीराम को बहुत बल मिला और गुरुकुल खोलने का उनका निश्चय और दृढ़ हो गया। लातूर के इस जमींदार परिवार ने महात्मा मुंशी राम को अपने यहां बुलाकर हाथी पर बैठाकर उनकी शोभायात्रा निकाली और दस हजार रु० भेंट किये। मुंशीराम ने अपने सद्धर्मप्रचारक पत्र द्वारा गुरुकुल सम्बन्धी आन्दोलन को तीव्र कर दिया। विभिन्न आर्यासमाजों की ओर से आर्य प्रतिनिधि सभा को यह आग्रह प्राप्त होने लगा कि गुरुकुल जल्दी से जल्दी खोला जाए। जिस तरह कभी डी० ए० वी० आन्दोलन के समय आर्य जनता स्वपनाविष्ट हो गयी थी, उससे भी अधिक स्वप्नाविष्ट इस गुरुकुल आन्दोलन से हो गयी। अन्ततः २६ नवम्बर १८९८ को पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा ने गुरुकुल पद्धति का एक विद्यालय खोलने का प्रस्ताव पास किया और मुंशीराम को उसकी योजना तैयार करने का काम सौंपा जो उन्होंने शीघ्र पूरा कर दिया।

तब मुंशीराम ने भीष्म प्रतिज्ञा की जब तक मैं ३० हजार रु० एकत्र नहीं कर लूंगा तब तक घर में पांव नहीं रखूंगा और सचमुच ही अपना बिस्तर लेकर उन्होंने जालन्धर की आर्यसमाज में डेरा डाल दिया। घर वालों ने समझा कि शायद परिवार की किसी बात से नाराज होकर उन्होंने इस तरह घर में कदम न रखने का निश्चय किया है, क्योंकि तब मुंशीराम की पत्नी का स्वर्गवास हो चुका था को मनाने समाज मन्दिर पहुंचे। पर मुंशीराम ने अपनी भावना समझाते हुए अपनी प्रतिज्ञा का उल्लेख किया और कहा कि केवल अपना प्रण पूरा करने के लिए मैंने ऐसा किया है।

जिस समय गरुकुल जैसी चीज का कहीं अस्तित्व नहीं था, उसके नाम से भी लोग परिचित नहीं थे और उसे आकाश कुसुम समझते थे, तब मुंशीराम गले में भिक्षा की झोली डालकर घर से निकले, पंजाब भर में चक्कर काटते रहे। उन्होंने २६ अगस्त १८९९ के दिन जालन्धर से प्रस्थान किया और ८ अप्रैल १९०० को अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर वापस लौटे, तो लगभग सात मास की इस कठोर तपस्या के बाद अपनी झोली में चालीस हजार रु० लेकर लौटे, जो आज के हिसाब से बीस लाख रुपये बैठेगा। अपनी इस यात्रा से उन्होंने धन ही एकत्र नहीं किया, प्रत्युत अपने व्याख्यानों में गुरुकुल सम्बन्धी योजना पर प्रकाश डालते हुए लोगों में उसके प्रति उत्साह पैदा किया। अब गुरुकुल का आन्दोलन पंजाब के बाहर भी आर्य जनता की चर्चा का विषय बन गया। मुंशीराम की धन एकत्र करने में इस असाधारण सफलता से सभा के अधिकारी बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने लाहौर में उनकी शोभायात्रा निकाल कर समाज मन्दिर में श्रद्धापूर्वक उनका अभिनन्दन किया। अब

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गुरुकुल की स्थापना में कोई बाधा शेष नहीं रही।

हरिद्वार के पास गंगा के पूर्वी तट पर पर्वत की उपत्यका में १४०० बीघा क्षेत्रफल वाला कांगड़ी नामक ग्राम है, जो नजीबाबाद निवासी मुंशी अमनसिंह की मिल्कियत थी। उसका अधिकांश भाग वनाच्छादित था। उत्तर में शिवालिक पर्वतमाला और पश्चिम में गंगा की नीलधारा 'उपह्वरे गिरीणां' का प्रतिरूप था। मुंशीराम का गुरुकुल अरण्यक आश्रम का रूप ले सकता था। मुंशी अमनसिंह ने यह कांगड़ी ग्राम गुरुकुल के लिए दान करने का संकल्प कर लिया। उन्होंने स्थानीय आर्यसमाज के माध्यम से अपना प्रस्ताव पंजाब सभा के पास भेजा, सभा ने उसे सधन्यवाद स्वीकार कर लिया। २२ अक्टूबर सन् १९०१ को दान स्वीकार किया गया और सभा ने आगामी होली की छुट्टियों में (२४-२५ मार्च १९०२) गुरुकुल के उद्‌घाटनोत्सव की घोषणा कर दी। आवश्यक तैयारी के लिए महात्मा मुंशीराम वहां पहुंच गये।

महात्मा जी ने गुरुकुल के लिए अपना तन-मन-धन न्यौछावर करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। गुरुकुल के लिए वकालत छोड़ी। गुरुकुल खुलते ही अपना पुस्तकालय गुरुकुल को दे दिया। १९०४ में अपना सद्‌धर्म प्रचारक प्रेस भी गुरुकुल को दे दिया, जिसकी ८ हजार रुपये कीमत थी जो उस समय बहुत अधिक राशि मानी जाती थी। १९११ में उन्होंने जालन्धर की अपनी शानदार कोठी भी गुरुकुल को दान दे दी। महात्मा मुंशीराम का यह एक प्रकार सर्वमेध यज्ञ था। वे गुरुकुल से अपने लिए एक भी पैसा नहीं लेते थे, अपनी जो भी भौतिक सम्पत्ति थी, वह सब गुरुकुल को दान कर दी थी। गुरुकुल के अध्यापक या कर्मचारी नाममात्र का वेतन लेते थे। बाद में मुंशी अमनसिंह ने कांगड़ी ग्राम के अलावा अपनी सब पूंजी भी गुरुकुल को अर्पित कर दी जो उस समय ११ हजार रुपये थी, पर आज के हिसाब से वह राशि ५ लाख से कम नहीं बैठेगी।

गुरुकुल के ऐसे आदर्श त्यागमय उदाहरण की चर्चा सुनकर लोगों का उसके प्रति आकर्षण बढ़ता ही जाता था। धीरे-धीरे प्रवेशार्थी बालकों की संख्या बढ़ने लगी। प्रवेश चुनाव द्वार होता था, इसलिए आने वाले बालकों में से केवल चौथाई बालक ही प्रविष्ट हो[illegible] थे। जिन माता-पिता के बालकों को प्रवेश नहीं मि[illegible] था, वे बड़े मायूस होकर लौटते थे।

धीरे-धीरे गुरुकुल के उत्सवों की लोकप्रियता [illegible] बढ़ी कि भारत भर में दूरस्थ प्रदेशों से भी बड़ी संख्[illegible] लोग आने लगे। बाद में तो यह संख्या इतनी बढ़[illegible] कि गुरुकुल का उत्सव उत्तर भारत का सबसे बड़ा [illegible] बन गया। जन साधारण के अलावा राष्ट्रकर्मी [illegible] बुद्धिजीवी लोग भी अधिकाधिक संख्या में आने [illegible] महात्मा मुंशीराम बिना पुलिस और बिना किसी सरकारी सहयोग के उत्सव पर आये इन हजारों [illegible] के निवास आदि की ऐसी सुचारु व्यवस्था करते सरकारी अधिकारी दंग रह जाते। उत्सव में दानदात[illegible] की भी ऐसी धूम रहती कि धन के लिए अपील हो[illegible] दानियों की लाइन लग जाती, महिलाएं अपने आभ[illegible] तक उतार कर देतीं। कुछ गुरुकुल प्रेमी तो प्र[illegible] बाहर से ही धन एकत्र करके स्वयं गुरुकुल भेजते [illegible] सचमुच ही बीसवीं सदी के प्रथम चरण में गुरुकु[illegible] जितनी लोकप्रियता अर्जित कर ली उसे देश में नव[illegible] का प्रतीक माना जा सकता है।

सन् १९१२ में गुरुकुल का पहला दीक्ष[illegible] समारोह हुआ। जिस तरह गुरुकुल में प्रवेश के [illegible] वेदारम्भ संस्कार किया जाता था, उसी तरह अब स्ना[illegible] बनने पर दीक्षान्त संस्कार की व्यवस्था की गयी। उपनि[illegible] के आधार पर इस संस्कार की विधि तैयार की [illegible] नव स्नातकों को 'विद्यालंकार' की उपाधि दी गयी। गुरु[illegible] की अपनी पाठविधि थी, अपनी परीक्षाएं थीं, [illegible] उपलब्धियां थीं और अंग्रेजों द्वारा संचालित प्र[illegible] सरकारी यूनिवर्सिटी के समानान्तर एक अलग प्र[illegible] की राष्ट्रीय शिक्षा पद्धति को स्वीकार किया गया जिसमें विदेशी सरकार से सर्वथा असहयोग तो था पर ज्ञान विज्ञान की दृष्टि से भी कहीं किसी प्रकार कमी नहीं थी। उस समय के बड़े से बड़े नेता [illegible] शिक्षाशास्त्री भी राष्ट्रभाषा के माध्यम से उच्च [illegible] देने की कल्पना नहीं कर सकते थे, पर गुरुकुल ने सफल करके दिखाया था। गुरुकुल कांगड़ी अपने ढं[illegible]

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक स्वतंत्र विश्वविद्यालय बन गया था, जिसकी डिग्रियों का सरकार की दृष्टि में कोई महत्त्व नहीं था। पर देश की जनता में, और खासकर आर्य जनता में, उसका बड़ा आदर था। लोग यह विश्वास करते थे कि गुरुकुल कांगड़ी के विद्यार्थी और स्नातक जहां शिक्षा और विद्या की दृष्टि से किसी सरकारी यूनिवर्सिटी के ग्रेजुएट से कम नहीं होंगे, वहां सदाचार और नैतिकता की दृष्टि से उनसे बहुत श्रेष्ठ होंगे। इसके अतिरिक्त उनमें राष्ट्रीयता की भावना कूट-कूट कर भरी होगी।

जब १९१२ में गुरुकुल के वार्षिकोत्सव पर प्रथम दीक्षान्त समारोह हुआ और दो स्नातकों को विद्यालंकार की उपाधि का संस्कृत में प्रमाण पत्र दिया गया तो वहां उपस्थित हजारों नर-नारियों की आंखों में हर्ष की अश्रुधाराएं बह निकलीं। उस अवसर पर महात्मा मुंशीराम ने नव स्नातकों को और जनता को सम्बोधित करते हुए कहा कि परमात्मा की कृपा से आर्य समाज द्वारा रचे गये इस ब्रह्मचर्य आश्रम रूपी महान यज्ञ का पहला चरण आज समाप्त हो रहा है। आर्य जाति का ऐसा कौन सा सदस्य है जिसे सहस्रों वर्षों से लुप्त हुए इस दृश्य का आज प्रातः दर्शन कर प्रसन्नता न हो रही हो। गुरुकुल के स्नातको! तुम इस गुरुकुल रूपी वृक्ष के पहले फल हो। सारे सभ्य संसार की आंखें तुम पर लगी हैं। परमात्मा आशीर्वाद दे कि तुम संसार में धर्म और शान्ति फैलाने के साधन बन कर अपने कुल के यश को चारों तरफ फैलाओ। तुम्हारा कर्त्तव्य इसलिए और अधिक है कि आगे आने वाले स्नातक तुम्हारा ही अनुकरण करेंगे। उनके लिए तुम ही आदर्श होंगे। मैं आज आर्य समाज को भाग्यशाली समझता हूं कि जिसके प्रयत्नों को आज सफलता प्राप्त हुई है। इस यज्ञमण्डप में उपस्थित देवियो और सज्जनो! आप सबसे मेरी प्रार्थना है कि आप स्नातकों को आशीर्वाद दें, जिससे वे अपने धर्म और अपने देश के यश को देश-देशान्तर में पहुंचाने में कृतकार्य हों। उस समय गुरुकुल से आर्य जनता जो आशा कर रही थी, उसका कुछ अनुमान आचार्य प्रवर के इन शब्दों से हो सकता है। इस समय तक गुरुकुल एक पूर्ण स्वायत्त संस्था और बस्ती का रूप धारण कर चुका था जिसके निवासियों की संख्या एक हजार के लगभग थी। विद्यालय विभाग का पर्याप्त विस्तार हो चुका था। विशाल मरुभूमि में शाद्वल की तरह समुद्र में टापू की तरह, यह एक विचित्र आर्य उपनिवेश था जिसकी ख्याति दिगन्तव्यापी होती जा रही थी। कांगड़ी नाम का वह छोटा सा ग्राम गुरुकुल का नाम साथ जुड़ जाने से इतनी व्यापक ख्याति प्राप्त कर लेगा यह किसने कल्पना की थी? आर्य जाति ने उस युग में जो स्वप्न लिया था वह यथार्थ के धरातल पर उतर आया था और यह सौभाग्य कांगड़ी ग्राम को मिला था।

महात्मा हंसराज और महात्मा मुंशीराम शिक्षा क्षेत्र के इन दो दिशानायक महारथियों ने किस प्रकार अपना त्यागमय जीवन डी० ए० वी० और गुरुकुल आन्दोलन को सफल बनाने में लगा दिया, वह भारतीय शिक्षा के इतिहास का अद्भुत पहलू है। सच तो यह है कि कोई भी आदर्शवादी संस्था तभी तक पुष्पित पल्लवित होती है जब तक उसके संचालक स्वयं आदर्शमय जीवन औरों के सामने उदाहरण के लिए उपस्थित करते हैं। नदी के प्रवाह के साथ बहना बहुत सरल होता है, पर उस प्रवाह को मोड़ देना सरल नहीं है। यहीं उनका महापुरुषत्व पता लगता है। इन दोनों महारथियों ने जो आदर्श क्रियान्वित किया, वह उसी रूप में वर्तमान में नहीं रह सका। अब न डी० ए० वी० स्कूल वैसे रहे, न गुरुकुल वैसा रहा। अब कानवेंट स्कूलों की नकल पर डी० ए० वी० पब्लिक स्कूलों का जोर है, जिसमें व्यावसायिकता प्रधान है और गुरुकुल कांगड़ी भी विशेषता विहीन एक सामान्य यूनिवर्सिटी मात्र बनकर रह गया है। आदर्श अपने स्थान पर है। पर समय का प्रवाह कितना उद्दाम है, इसकी कल्पना उस कांग्रेस से भी की जा सकती है जो महात्मा गांधी जैसे आदर्शवादी व्यक्ति के चले जाने के पश्चात् आज हमें दिखाई दे रही है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शिक्षा का महत्त्व

□ स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती

श्रद्धेय स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज ने शिक्षाविषयक यह वक्तव्य १९६२ में सांसद् के रूप में लोकसभा में दिया था, इसकी प्रासंगिकता आज भी कम नहीं हुई है।

—प्रधान सम्पादक

हरिण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

उपाध्यक्ष महोदय! शिक्षा एक बहुत अनिवार्य विषय है। शिक्षा के बिना मनुष्य बिना सींग और पूंछ का पशु है। परन्तु कुछ सज्जन यही समझते हैं कि जो आधुनिक शिक्षा है वही शिक्षा है। दो सौ वर्ष पहले जब इस देश में आंग्लभाषा का प्रचलन नहीं था तो क्या यहां के लोग अशिक्षित थे? सात सौ वर्ष पहले जब उर्दू-फारसी नहीं थी तो क्या यहां के लोग पढ़ना-लिखना नहीं जाते थे? नवीनता की चकाचौंध में प्राचीनता को आंखों से ओझल करना कोई बुद्धिमत्ता नहीं।

पुरानी शिक्षा हमें समता का पाठ पढ़ाती है जबकि आज की शिक्षा ने विषमता की खाई को बढ़ा दिया है। जिन लोगों ने हमें संसद् के अन्दर भेजा आज ऊपर से सूर्य एवं नीचे से जमीन उनके ऊपर आग उगल रहे हैं जबकि हम उनके सेवक यहां वातानुकूल भव्य भवनं में मौज उड़ा रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में तो क्या बड़े-बड़े शहरों में भी गर्म पानी पीना पड़ता है और यहां चारों तरफ कूलर लगे हुए हैं। करोड़ों व्यक्ति रात को पेट पर पट्टी बांधकर सोते हैं उनके बच्चे भूख से बिलबिलाकर मर जाते हैं। तन ढकने को वस्त्र नहीं। क्या यही है हमारी नवीन शिक्षा? कल्चरल प्रोग्राम के नाम पर देश के लड़के-लड़कियों को नचाया जाता है। इससे देश का कौन सा निर्माण हो रहा है।

आज के छात्रों को पढ़ाया जाता है कि आर्य लोग बाहर से आए थे, वे गोमांस खाते थे। इस तरह बातें पढ़ाकर बच्चों का दिमाग क्यों खराब किया रहा है।

आज हरिजनों को आर्थिक सहायता गरीबी नाम पर देकर गरीबों का मज़ाक उड़ाया जा रहा क्या केवल हरिजन ही गरीब होता है? ब्राह्मण, ठा वैश्य गरीब नहीं होते? आप जाति-पांति को खत्म क चाहते हैं, परन्तु वोट की राजनीति के कारण जाति को बढ़ावा देना कहां तक उचित है?

आज की शिक्षा व्यवस्था में आदि से अन्त ईश्वर नाम की कोई चीज़ नहीं है, बच्चों को नाि बनाया जा रहा है। क्या कोई वस्तु बिना बनाए सकती है? इतना सुन्दर विश्व, मनमोहक शरीर अपने आप बन गया? आपके विज्ञान में लड़कों पढ़ाया जाता है कि सूर्य चलता है, चन्द्रमा चलता पृथ्वी चलती है। क्या कोई वस्तु बिना चलाए चल स है? जब रेल, वायुयान, मोटर आदि वाहन बिना च नहीं चल सकते तो इतना बड़ा ब्रह्माण्ड बिना च कैसे चल सकता है? इसलिए मैं आपसे कहना चाहत कि यदि आप देश को वास्तव में शिक्षित बनाना चा हैं तो शिक्षा में प्राचीनता, नवीनता एवं आध्यात्मि का समन्वय करना होगा।

आज शिक्षा दी जा रही है धर्म कुछ नहीं, ई कुछ नहीं। अपनी सभ्यता और संस्कृति का उप उड़ाया जा रहा है। रिश्वत एवं भ्रष्टाचार का बोलब है। ऐसी विषम परिस्थिति में बच्चे उच्छृङ्खल नहीं ब तो और क्या बनेंगे? प्राचीन शिक्षा बताती है—

भयादस्य अग्निस्तपति भयादस्य सूर्यः।
भयादिन्द्रश्च वायुश्च मृत्युर्धावति पंचमी॥

अर्थात् सारा संसार परमपिता परमात्म

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नियमन एवं संचालन में चल रहा है। विद्यार्थी को जब इस बात का भान करा देंगे कि व्यक्ति जो कुछ करता है उसका फल उसको अवश्यमेव भोगना पड़ता है तो वह दुष्कृत्यों से बचा रहेगा। आज की शिक्षा में दीक्षित नवयुवक एवं नवयुवतियां ही दुनिया भर में अनाचार करते हैं। क्लबों में नंगा कौन नाचता है? ब्लैक मार्केटिंग कौन करता है? मांस और अण्डे कौन खाता है? रिश्वत कौन लेता है? आप इसे शिक्षा समझते हैं, मैं इसे कुशिक्षा कहता हूं।

आज विद्यालयों में महात्मा गांधी को पढ़ाए जाने की सिफारिश संसद् में की जाती है, मैं इसका विरोधी नहीं परन्तु महात्मा गांधी को जहां से सत्य और अहिंसा की शिक्षा मिली उसी योगदर्शन को ही क्यों न पढ़ाया जाए? वेदादि शास्त्रों को पाठ्यक्रम में स्थान क्यों नहीं दिया जाता? आज यह तो पढ़ाया जाता है कि पं० जवाहर लाल ऐसे थे अमुक ऐसे थे परन्तु इस बात की शिक्षा क्यों नहीं दी जाती कि आपका माता-पिता एवं देश के प्रति क्या कर्त्तव्य है।

आज शिक्षा के नाम पर पढ़ाया जाता है कि प्राचीन काल में आर्य लोग गोमांस खाया करते थे। यह लज्जाजनक उपदेश मेरे कोमल बच्चों को दिया जा रहा है। क्या यह शिक्षा है? बच्चों को ऐसी शिक्षा देनी चाहिए जिससे समानता की भावना बढ़े। आज रहन-सहन, खान-पान, मान-सम्मान सभी में विषमता ही विषमता है। नौकरशाही की अहम्मन्यता के कारण राष्ट्र के भावी कर्णधारों का निर्माता पेट पर पट्टी बांध कर सोता है, उसे महीनों वेतन नहीं मिलता। जब अध्यापक की आत्मा दुःखी है तो वह बच्चों का क्या निर्माण करेगा?

मैंने सीमित समय में जो चन्द एक बातें कही हैं उनका उत्तर मुझे अंग्रेजी में दिया जाएगा। मैं पूछना चाहता हूं कि आखिर अंग्रेजी से इस तरह का मोह क्यों रखा जा रहा है। जब अंग्रेज चले गए तो इसको भी क्यों नहीं जाने देते? आप देश के बच्चों को आदर्श नागरिक बनाने का यत्न करें। पुरातन शिक्षा प्रणाली को आप लाएं और इस देश के बच्चों को आप सही तौर पर शिक्षित करें जिससे यह देश फिर एक बार अपने प्राचीन गौरव को प्राप्त कर उन्नति के चरम शिखर पर जा सके।

है पहचान स्वतन्त्र देश की उसकी अपनी प्यारी भाषा,
उससे ही उन्नति सम्भव है, वही बनी जन-जन की आशा।
अंग्रेजी का ज्ञान अधूरा अंग्रेजी का ज्ञान उधारा,
निज भाषा से सब सम्भव है, यदि हो निश्चय प्रबल हमारा॥

यदि वास्तव में हिन्दुस्तान को एक राष्ट्र बनाना है, तो चाहे कोई माने या न माने राष्ट्रभाषा तो हिन्दी ही बन सकती है।

—महात्मा गान्धी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शराब आदमी को पीती है

❑ सुश्री ममता

आयुर्वेदशास्त्र की शार्गधर संहिता में लिखा है— **बुद्धिं लुम्पति यत् द्रव्यं मदकारी तदुच्यते** अर्थात् जो द्रव्य बुद्धि का विनाश करे, उसे मदकारी कहते हैं। इससे मद क अर्थ स्पष्ट होता है। संसार में मद कई प्रकार का होता है—धन का, रूप का और विद्या का, लेकिन सबसे हानिकारक मद्य होता है। मद्य और मांस को प्राचीन धर्मग्रंथों में यक्ष और रक्ष का भोजना बताया गया है, अतः मानव के लिए इनको निषिद्ध बताया जाता है। सर्वप्रथम १९६४ में ताराचन्द्र समिति की रिपोर्ट में यह तथ्य उजागर हुआ था कि हमारे देश में रुपए में चालीस पैसे केवल मदिरा पान करने पर ही खर्च हो जाते हैं। उसके बाद अहमदाबाद में एक अध्ययन किया गया जिससे पता चला कि युवा पीढ़ी मद्य-निषेध की बात को स्वीकार नहीं करती। कहा तो यह भी जाता है कि कानूनन मद्यपान को रोकना नागरिक मूल अधिकारों का हनन है। फिर भी मद्य निषेध के लिए देश में अनेक कदम उठाये गये हैं।

वेतन-दिवस को मधुशालाओं में बंदी, शुष्क दिवस, निपिद्ध क्षेत्रों की घोषणा, सरकारी कर्मचारियों के लिए कार्यालय समय में प्रतिबन्ध तथा पूर्ण नशाबन्दी घोषित किये जाने के बारे में समय-समय पर कुछ न कुछ होता रहा है, किन्तु मदिरापान की बुराई मिटाए नहीं मिटी। कुछ इलाकों में तो दवाओं के नाम पर शराब की बिक्री होती है। इण्डियन ड्रग्स एक्ट के अन्तर्गत उन्हें रोका नहीं जा सकता, किन्तु प्रयोग के आधार पर यह निष्कर्ष निकले हैं कि अल्कोहल का प्रयोग ऊर्जा तो देता है, जिससे थोड़ी देर के लिए अधिक कार्यक्षमता का अहसास, मस्ती या तन्द्रा छा सकती है, किन्तु इससे आन्तरिक अवयव नष्ट होने लगता है। मदिरा स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है इस तथ्य से इन्कार नहीं किया जा सकता। कुछ इलाकों में चोरी-छिपे अवैध मदिरा तैयार करने के लिए खमीर उठाने की जो प्रक्रिया अपनाई जाती है, वह अत्यन्त घृणास्पद होती है। तेजी बढ़ाने के लिए उसमें नौसादर, ताम्बे के सिक्के, बैटरी सेल, सड़े-गले फल, मांस, काकरोच ओर मुर्गी की बीट आदि भी मिला दी जाती है। पकड़े जाने के भय से इसका भण्डारण भी गन्दे से गन्दे स्थानों पर किया जाता है ताकि पुलिस और आबकारी विभाग के अधिकारी की नजर से बचाया जा सके। मिथाइल अल्कोहल तो इतना घातक होता है कि वह पीने वाले को अपंग, अन्धा या प्राणहीन कर सकता है, अतः इस नशे की बीमारी से दूर रहना ही श्रेयकर है।

लोग अब मदिरा के स्थान पर टिंचर का प्रयोग करने लगे हैं। विकृत स्प्रिट (मिथाइल अल्कोहल) मिलाकर जो मिश्रण बनता है उसकी सौ ग्राम मात्रा एक बोतल का नशा करने की सामर्थ्य रखती है। यह विकृत स्प्रिट करीब बीस रुपए लीटर मिलती है। खुदरा दुकानों पर यद्यपि लिखा होता है कि यह विष है, किन्तु पीने वाले नहीं मानते। शराब की अपेक्षा यह मादक तरल काफी सस्ता पड़ता है, अतः डिनेचर्ड स्प्रिट की कुल जितनी मात्रा बिकती है उसका २० प्रतिशत उपयोग मादक पेय के रूप में किया जाता है जो कि अक्सर जानलेवा साबित होता है। शराब में मिलावट का हाल यह है कि सीलबन्द बोतलों में भी मिलावटी तथा नकली मदिरा के मामले पकड़े जाते हैं।

उत्तर प्रदेश में आबकारी आयुक्त द्वारा चेतावनी देते हुए पिछले दिनों सभी थोक व फुटकर डिनेचर्ड स्प्रिट की दुकानों पर तुरन्त बिक्री बन्द करने के आदेश दिये गये थे, क्योंकि जांच करने पर कई क्षेत्रों में डिनेचर्ड स्प्रिट में मिथाइल अल्कोहल का मिश्रण पाया गया। मिथाइल अल्कोहल एक जानलेवा विष है। जिसके

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

घूंट पीने से भी मृत्यु हो सकती है। इसलिए अवैध शराब, स्प्रिट, थिनर आदि कदापि नहीं पीना चाहिए और यदि कहीं इसकी बिक्री होती हो तो तत्काल जिलाधिकारी को सूचना देनी चाहिए। ताकि जहरीली शराब का सिलसिला रोका जा सके।

प्रायः मद्यपान के शौकीन और विरोधी ही परस्पर अपने-अपने धन्धे व पक्षों के समर्थन में लम्बी चौड़ी बहस करते हैं। एक से बढ़कर एक तर्क पेश करते हैं। इसलिए आज के दौर में यद्यपि मदिरापान करना या न करना भी अच्छे खासे विवाद का मुद्दा है, किन्तु मद्यपान एक बुराई अवश्य है। एक कहावत है कि पीने से ज्यादा पीकर बहकना जुर्म है। साथ ही साथ मद्यपान हमारे नैतिक मूल्यों और भौतिक साधनों का शोषण करने के लिए भी उत्तरदायी है। आर्थिक विषमता के इस युग में जहां एक ओर सम्पन्न वर्ग में एक से एक मंहगी सुरा का सेवन किया जाता है, वहीं दूसरी ओर मध्यम और अल्प आयवर्ग से जुड़े शौकीन अपना गम दूर करने के नाम पर जो शराब के रूप में तरल पदार्थ पीते हैं वह जाने-अनजाने ही अक्सर उनके जीवन के लिए चुनौती बन जाती है।

मदिरा शरीर में पहुंच कर रक्तसंचार को तेज कर देती है, जिसका प्रभाव विभिन्न हिस्सों पर पड़ता है। सिर में भारीपन, आंखों में लाल डोरे, बहकी जबान और डगमगाते कदम देखकर अंदाज लगाया जा सकता है कि अमुक व्यक्ति ने पी रखी है। लेकिन यह सब सीमा से अधिक होने पर होता है। इसलिए अधिकतर लोग एक निश्चित सीमा के अन्दर ही मद्यपान करते हैं। यह बात अलग है कि प्रारम्भ में पीने वाले का स्वास्थ्य अच्छा हो या स्फूर्ति महसूस हो। लेकिन अन्ततः मदिरापान का स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव होता है। शराब पीने से मस्तिष्क के अमूल्य कोषों को भी क्षति पहुंच सकती है। डिप्रेशन, सिर दर्द और निर्णय क्षमता में कमी आना मद्यपान से होने वाली हानि के खास लक्षण हैं। मदिरालयों में बढ़ती भीड़ के साथ मद्यपान करने वालों में बढ़ती बीमारियों तथा मौत की घटनाओं से लगता है कि अब शराब आदमी को पी रही है। रक्त में तेजी के साथ बहाव होने के कारण त्वचा लाल हो सकती है। आगे चलकर नसों में ढीलापन आ सकता है। मदिरापान का सर्वाधिक कुप्रभाव हमारे यकृत पर पड़ता है, क्योंकि उसे अत्यधिक कार्य करना पड़ता है। उसकी झिल्ली कमजोर हो जाती है। रक्त के बढ़े एल्कोहलिक स्तर को घटाने के लिए गुर्दे तेजी से कार्य करते हैं, ताकि मूत्र के साथ-साथ मद्य का विष जल्दी शरीर से बाहर निकल जाए। शरीर में ताप अधिक हो जाने से पाचन क्रिया गड़बड़ा जाती है, अतः यदि भोजन अच्छा मिल जाए तब तो शरीर को ईंधन मिल जाता है अन्यथा धीरे-धीरे दौर्बल्य बढ़ता जाता है और पुष्टता के अभाव में क्षयरोग की शुरूआत हो सकती है। आजकल बिकने वाली अधिकतर मदिरा हमारे देश में शीरे (मोलासिस) से बनती है। शीरा मैल के रूप में चीनी-मिलों से प्राप्त होता है। डिस्टीलरी में पहले उससे एल्कोहल बनाया जाता है, फिर उस एल्कोहल से तरह-तरह की दवाइयां, बीयर, शराब, व्हिस्की आदि बनती है। इन सभी में एल्कोहल का प्रतिशत अलग-अलग होता है। यद्यपि सैद्धान्तिक रूप से शीरे के अलावा अन्य चीजों का भी इस्तेमाल शराब बनाने में होता है।

यद्यपि मदिरा से उत्तेजना बढ़ती है, किन्तु वह क्षणिक होती है और मस्तिष्क के साथ शरीर का तालमेल बिगड़ जाने के कारण इन्द्रियां ठीक प्रकार से कार्यक्षम नहीं रह पातीं, अतः नशे की हालत में कोई ठीक कार्य नहीं हो पाता। आमतौर पर पेट बढ़ने लगता है। मद्यपान के दुष्परिणामों से परिचित होते हुए भी एक बार इसके चंगुल में फंसकर निकलना मुश्किल हो जाता है। थकान मिटाने, दुख-दर्द भूल जाने या फिर प्रतिष्ठा प्रदर्शन के लिए हम इस सामाजिक बुराई को जानबूझकर गले लगा लेते हैं जो बाद में आदत बन जाती है। इसी कारण मदिरापान को विनाश का द्वार कहा जाता है। इसका नशा घर-गृहस्थी को बरबाद कर देता है।

जाह्नवी से साभार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मनु का पश्चात्ताप

□ डॉ० श्यामसिंह 'शशि'

मनु ने समाज को समझा था
बाहर भीतर से झांका था
गुण-कर्मों के आधारों पर
चारों वर्णों में बांटा था
गुण-कर्म बदल जाते थे जब
ये वर्ण बदल जाते थे तब
यदि शूद्र कर्म उत्तम करता
तो वह भी ब्राह्मण कहलाता
विद्या के बल पर कोई भी
उत्तुंग-श्रृंग पर चढ़ जाता
कर्त्तव्य विमुख आचारहीन
द्विज शूद्रों में परिगणित हुए
मनु की इस कर्म-व्यवस्था से
युग-युग के चिन्तक चकित हुए
कालान्तर में परिभाषाएं बदलीं
सब कुछ था बदल गया
पूरे समाज में शनैः शनैः
विष जाति वर्ग का फैल गया
कुछ विषपायी आये तो थे
पर लक्ष्य अधूरा छोड़ गए
अनुयायी मठ पर बैठ गए
विपरीत रास्ते मोड़ दिए।
मनु ....
मैंने कब कहां व्यवस्था दी
है जाति जन्म पर आधारित?
मैंने कब कहां ऊर्ध्वगामी
प्रगतिशील है शूद्र पतित?
मैंने कब कहा पतित ब्राह्मण
होगा न शूद्र, हो विरत कर्म?

मैं बार-बार कहता आया
वरणेय कर्म वरणेय धर्म।
मैंने न कहा बांटो समाज
खण्डों को करो पुनः खण्डित।
मैंने न जाति-कुल-गोत्र दिए
युग-युग तक चिर महिमामण्डित।
मैंने कब कहा कि
नारी और शूद्रों को
अधिकार नहीं है पढ़ने का?
श्रुतियों को सुनने का
मनन का?
मैंने कब कहा कि
खाना जूठन
अधिकार अन्त्यजों को देना?
कब कहा
न दण्डित हो ब्राह्मण
अपने दुष्कर्मों के कारण?
मैंने कब कहा धर्मसम्मत
है उचित अन्त्यजों का शोषण?
मनु स्मृतियों में खोए थे
मानव ने आकर बतलाया—
हे आदि पुरुष, द्रष्टा-स्रष्टा
यह कैसा रूपान्तर आया?
तुमने जो वर्ण व्यवस्था दी
अब मरण-व्यवस्था घृणित हुई
अब वर्ण नहीं, जन्मीं विकसीं
कितनी जाति से जाति नई
तोड़ा मानव को जी भरकर
जोड़ा केवल विघटन टूटन

देखो निज वर्ण-व्यवस्था का
ढलता यौवन गलता जीवन
देखो ओ, दिव्य नियामक तुम
उस अश्रुमुखी को एक बार
सौन्दर्य पुंज ममता पूरित
होकर भी जो है धूल-क्षार
उसकी पुकार उसकी गुहार
है अन्तराल से गूंज रही
भर्राये कण्ठों से उसने
कितनी गाथा अनकहे कही
क्या कहती पत्नी-मां-भगिनी
अपने कानों को खोल सुनो
मैं चरण पादुका तुच्छ दीन
आजीवन दासी स्वत्वहीन
मां से करते विश्वासघात
भैया, कैसे तुम हृदयहीन!
'मारा-मारा चीत्कार हुआ
मर गया दास शोषित एक नर
था जला दिया जिन्दा उसको
अभिजात वर्ग के प्रभुओं ने
बालक बनते बंधुआ मजूर
नारी प्रजनन का सुलभ यन्त्र
क्रय-विक्रय का बाजार गरम
मनु कैसा तेरा न्याय-तन्त्र?
माताएं भरती हैं सिसकी
लज्जा लुटती जलती बस्ती
खाई वर्गों की है बढ़ती
अनगिन उपवर्गों में बंटती।
चीत्कार तलक अब मूक हुए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

केवल आहें ही आहें हैं
कुछ शूद्र चले आते हैं
मनु के सम्मुख

एक

सुनो मनु
मैं वेदज्ञाता हूं
मूक और बधिर दीन
द्विजों की भाषा में
किन्तु हूं शूद्र हीन
एक दिन दे रहा था
उपदेश आश्रम में
इसे अपराध मान
क्रूर राजदण्ड मिला
खौलता ज्वलित तेल
कान में उंडेल दिया
और मेरी जिह्वा को
छलनी कर काट दिया!

दो

देखो मैं अपंग मनु,
दोनों हाथ टूट गए
मेरा अपराध-दोष?
बहुत बड़ा दोष था!
मैंने एक विप्र पर
दण्ड का प्रहार किया
विप्र आततायी क्रूर
हत्यारा पापिष्ठ वह
लोगों की आंखों में
किन्तु धर्मनिष्ठ था
इसी बात पर मनु
मेरे हाथ कटे
अन्याय का विरोध
भला अन्त्यज करे!

तीन

मेरी कथा सुनो मनु,
और भी विचित्र है
अनजाने अनचीन्हे
मेरे भाग्नेय से
छू गई एक नारी
द्विज गोत्र कुल की
अपनी ही भूल से
दण्ड का विधान हुआ
कुपित तथाकथित
कुलीन वर्ग ने उसे
छेद दिया अंग-अंग
प्रखर किरच से!

चार

एक दिन की बात कहूं
किसी एक द्विज को
मेरे अग्रज ने
दे डाली गाली थी
क्योंकि पिटवाया उसे
क्रूरता से बिन बात
दण्ड का विधान हुआ
जीभ काट ली जाए
देखो गूंगा है यह!

पांच

बंधुआ मजूर हूं मैं
स्वामी का कथन है कि
जन्मा हूं मैं उसकी
सेवा के निमित्त बस
और जुता हुआ हूं
कोल्हू के बैल-सा
उसके लिए ही
दिन-रात मृत्यु तक!

छः

मैं अस्पृश्य अछूत हूं

सात

मैं निषाद सूत हूं

आठ

मुझको त्रेता युग ने मारा

नौ

द्वापर भी तो था हत्यारा

दस (नारी स्वर)

युग-युग की नारी को तुमने
बांधा झूठी मर्यादा में
अग्नि में रोज़ परीक्षा ली
पति के मरने पर हमें चिता
में जीवित झोंका जाता था
कैसा था क्रूर समाज जिसे
सतियों का धर्म बताता था
गूंजे कुछ दस्युओं के स्वर
मनु, क्या नहीं हुआ
हमारे साथ
कभी काट दी जिह्वा
कभी पांव
और कभी हाथ
कहीं जला दिये गए
हमारे भाई एक साथ
क्या नहीं बना सकते थे तुम
केवल एक जाति
और केवल एक वर्ग
यह अमानुषिक रीति
तो न होती आज।
कुछ और तीव्र ध्वनियां
'मारो-मारो'
'भागो-भागो'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'मारा-मारा'
'भागा-भागा'
युवा स्वर (आक्रोशपूर्ण)
'सुनोगे इन चीत्कारों को'
'मानवता की हाहाकारों को'
नहीं-नहीं तुम तो निष्ठुर हो'
'अधम हो पापी हो!'
'तुम्हारी स्मृति को हम
आग में जलायेंगे'
और जन समाज-हित
विधान नव बनायेंगे!
टूटने लगा था धैर्य
मनु पूर्ण पुरुष का
अंगूलियां ठूंस लीं
कानों में
चीख उठे
नहीं-नहीं
झूठ सब झूठ है
नहीं मेरी वाणी यह
क्षेपक है किसी के ये
मेरी नहीं व्यवस्था यह
किसी छद्मनाम मनु
ने यह कहा होगा!
कथन ये मेरे यदि
तो किसके हैं शब्द ये—
शूद्रो ब्राह्मणतामेति
ब्राह्मणश्चेति शूद्रताम्
क्षत्रियाज्ञातमेवन्तु
विद्याद्वैश्यातथैव च
मेरे वंशज
मैंने ही कहा था यह
शूद्र कुलोत्पन्न जन
बन सकता है ब्राह्मण

गुण कर्म आधार पर
आचार शुद्धाचार पर
और उसी भांति कोई
ब्राह्मण, क्षत्रिय अथवा
वैश्य कुलोत्पन्न जन
कहलायेगा शूद्र
निज कर्म के आधार पर
किन्तु मुझे दुःख आज
कुव्यवस्था देखकर
स्वार्थी पंडितों ने
अर्थ का अनर्थ किया
गलत अनुवाद सब
गलत हुई टीकाएं
प्रक्षिप्त श्लोक गढ़े
और गलत भाषाएं
किसने दुरुपयोग किया
मेरे पद नाम का
मेरे ही समाज ने
मेरे 'मनु' नाम का
मानता हूं मुझसे
भूल एक यह हुई
कर्म-विभाजन हेतु
वर्ण की व्यवस्था दी
काश यह व्यवस्था भी
स्थापित न करता मैं
तो आज समाज
इतने
भागों में बंटता नहीं!
और शूद्र राम का
किसी द्विज रावण का
वध यों होता नहीं
पुरोहितवाद
मेरे बाद की उपज है
और हां याद आया

मेरी स्मृति में
एक सूक्त और भी था
नियोग प्रथा पर चलो
पत्नी को अधिकार था
पर पुरुष समागम का
यदि पति अयोग्य हो
और इसी भांति कहा मैंने
किसी सतयुग में
'नारी जनना तुम
दस सन्तानों को
पर क्या तुम
चले सभी सिद्धान्तों पर?
क्योंकि ये थे किसी
अन्य युग के लिए
नहीं इस युग हेतु
और नहीं दोहराऊंगा
इन उक्तियों को
अगले किसी युग में
धर्म सब बदलते हैं
युग के अनुकूल ही
बहुजन हिताय और
बहुजन सुखाय सदा।
मैंने कहा था
धर्म के हैं लक्षण दस
जो नहीं उतारते
इन्हें अपने जीवन में
शूद्र हैं वे सभी
मानव, तुम्हें सौंप गया था
मैं नव समाज को
ओह, किया तुमने क्या
मैंने नहीं चाहा जो
तुम्हें वही रास आया
त्रुटियां तुम्हारी थीं
भुगत रहा हूं मैं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और जल रहा हूं अब
धधकती आग में
ज्वाला पश्चात्ताप में
युग-युग जलूंगा मैं
फिर किसी युग में
जन्मेगा कोई मनु
बनायेगा विधान नया
मानव समाज का
लड़ेगा अन्याय से

विषमता मिटाने को
समता लाने को
अपने रक्त की
अन्तिम बूंद तक
मनु ने नकार दीं स्मृतियां
बोले—
मैंने जो युग अनुकूल कहा
तुमने अपनी टीकाओं में
उसको युग के प्रतिकूल किया

बदलो ये घृणित घिनौने अंश
अपने युग की भाषा बोलो
जीवन के बस दस द्वारों पर
धर्मों की परिभाषा बोलो
हर धर्म देश का होता है
अनुसार समय से ढलता है
सच्चा है धर्म वही जग में
मानवता के हित पलता है।

जगद्गुरु कौन?

मेहतर ने आद्य शंकराचार्य से पूछा—

"आर्य! मैं यह जानना चाहता हूँ कि आप किससे घृणा करते हैं? शरीर से, आत्मा से या कर्म से?"

आचार्य ने प्रश्नों को ध्यान से सुना। मेहतर फिर बोला, "क्या आत्मा से? आत्मा तो शुद्ध ब्रह्मतत्त्व है वह तो निर्विकारी है।

आचार्य ने कहा—"मैं आत्मा से घृणा नहीं करता।

"तो शरीर से? हाँ यह अवश्य घृणित पंचतत्त्वों से बना हुआ है। पृथ्वी अनन्त मलिनताओं की केन्द्र है। जल में अनन्त जीव और जीवाणु वास करते हैं और उसमें मल-मूत्र करते हैं। अग्नि सर्वभक्षी है। वायु में पृथ्वी पर सड़ने वाले दूषित द्रव्यों की दुर्गन्ध मिली हुई है और आकाश भी इनसे खाली नहीं है। इन्हीं तत्त्वों से हमारी देह बनी हुई है। ऐसी अवस्था में इससे घृणा होना अनिवार्य है, किन्तु इन द्रव्यों से तो आपका भी शरीर बना हुआ है और जब आप इससे घृणा करते हैं तब इसे स्वयं क्यों धारण किए हुए हैं?"

"नहीं, मैं शरीर से भी घृणा नहीं करता।" आचार्य ने उत्तर दिया।

"तब आप कर्म से घृणा करते होंगे, किन्तु सुना है कि बिना कर्म के तो निस्तार नहीं होता, कर्म करने में ही जीवन की सार्थकता है। कर्मत्याग तो महान् खेदजनक कार्य होगा। मेरे इस कर्म को त्याग देने से गन्दगी फैलेगी और उससे असंख्य रोगाणु उत्पन्न होंगे, जिनसे जीव मात्र का अकल्याण हो सकता है। इसलिए मेरे लिए ऐसा करना सम्भव नहीं। मैं जान-बूझ कर ऐसी भूल नहीं कर सकता। क्या आप यह चाहते हैं कि मैं भी कर्म को घृणित समझूं और लोगों को रुग्ण होने का अवसर दूँ?

आचार्य ने उसके शब्दों को सुना और उनमें भरे हुए तत्त्वज्ञान को समझा। वे विचार में इतने गहरे लीन थे कि उन्हें पता ही न रहा कि वे गंगा स्नान के लिए आयें हैं। उनका सिर मन ही मन मेहतर के चरणों पर गिर पड़ा उनके मुख से निकल पड़ा "भगवन्! निःसन्देह मैं भूलता हूँ कर्म से घृणा करना भी अज्ञान है आपने आज मेरा अज्ञान दूर कर दिया। सचमुच जगद्गुरु मैं नहीं, आप ही है।"

लोगों ने इस दृश्य को आश्चर्य से देखा-मेहतर के चरणों में इतना बड़ा विद्वान् गिरा पड़ा है।

शंकराचार्य लौट पड़े। शिष्यों ने पूछा "आचार्य! गंगा स्नान?"

"नहीं, मैं स्नान कर चुका। आज तो ऐसा स्नान हुआ है, जो कभी बड़े भाग्य से ही प्राप्त होता है।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वर्णव्यवस्था, जातिप्रथा और आरक्षण

❑ प्रो० बलराज मधोक

आदि काल से मानव समाज के सम्यक् विकास के लिए काम का बंटवारा होता आ रहा है हर व्यक्ति सभी काम नहीं कर सकता। इसलिए जो गुण, कर्म, स्वभाव से जिस क्षेत्र के लिए अधिक उपयुक्त हो उसे वह चुन लेना चाहिए और उसे पूरा करने में दक्षता प्राप्त करनी चाहिए ताकि उसे और समाज को उसके विशिष्ट गुण का अधिकतम लाभ मिल सके। यही वैदिक वर्ण व्यवस्था का हेतु और आधार था। चारों वर्णों के चार अवयवों मस्तिष्क, भुजाएं, कटि और पावों के साथ तुलना करके वैदिक ऋषियों ने सभी वर्णों की मूल एकता, उनकी एक दूसरे पर निर्भरता और उनमें निहित कार्य विभाजन का तार्किक और वैज्ञानिक आधार और औचित्य बताया था। भारतीय हिन्दू समाज के सर्वांगीण विकास में गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर बनी इस वर्ण व्यवस्था की शुरू से महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। परन्तु कालान्तर में इस वर्ण व्यवस्था में कुछ विकृतियां आने लगीं। सम्भवतः बौद्धिक काम करने वाले ब्राह्मण वर्ण अथवा वर्ग के कुछ लोगों की इस वर्ण के साथ जुड़ी हुई प्रतिष्ठा में निहित स्वार्थ पैदा हो गया। इसलिए उन्होंने गुण, कर्म, स्वभाव के स्थान पर जन्म पर अधिक बल देना शुरू किया। इस प्रकार लचीली परिवर्तनशील वैदिक वर्ण व्यवस्था ने अपरिवर्तनीय जातिप्रथा का रूप ले लिया।

अन्तर्जातीय विवाहों तथा विदेशियों को आत्मसात करने के परिणाम स्वरूप मूल चार वर्णों ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के अन्तर्गत नई जातियां और उपजातियां पैदा होने लगीं। फलस्वरूप इस वर्ण व्यवस्था का रूप और बदल गया तथा लोग जन्म के आधार पर विभिन्न उपजातियों और पेशों के साथ भी जुड़ने लगे। विदेशी तुर्क और मुगल काल में उनके सत्ता केन्द्रों के पास "जिम्मी" के रूप में रहने वाले हिन्दुओं से [illegible] मैला उठाना जैसे काम करवाने लगे। इस प्रकार के लोग जिसमें कई ब्राह्मण और क्षत्रिय परिवारों के भी थे, भंगी कहे जाने लगे। इस प्रकार एक नई उपज[illegible] शुरू हो गई।

आरक्षण नीति का मूल

विदेशी ब्रिटिश शासकों ने फूट डालो और रा[illegible] करो की नीति का अनुसरण करते हुए पहले मुसलमा[illegible] को राष्ट्र की मुख्य धारा से काटने के लिए उनके [illegible] अलग मतदान और नौकरियों में आरक्षण की नी[illegible] अपनाई। बाद में उन्होंने यह नीति हिन्दू समाज [illegible] तोड़ने के लिए अपनाई! १९२१ में उन्होंने केशधा[illegible] सिखों को आरक्षण दिया और १९३२ में शूद्र वर्ग [illegible] अन्तर्गत दलितों को, जिन्हें गांधी ने 'हरिजन' नाम दि[illegible] था, पर इसे लागू करना चाहा, परन्तु गांधी जी के अन[illegible] के कारण यह चाल कारगर न हो सकी। स्वतंत्रता [illegible] बाद ऐसी जातियों और उपजातियों को अनुसूचित [illegible] में रखकर उनके लिए दस वर्ष कये लिए विधान म[illegible] और नौकरियों में आरक्षण की व्यवस्था संविधान में [illegible] कर दी गई। डॉ० भीमराव अम्बेडकर का यह सुविचा[illegible] मत था कि आरक्षण दलितोद्धार का प्रभावी उपाय न[illegible] है। जब तक हरिजन आरक्षण की वैशाखी पर खड़े र[illegible] तब तब उनमें न आत्मविश्वास पैदा हो सकेगा और [illegible] वे अपने पांव पर खड़े होने की क्षमता पैदा कर सक[illegible] इसलिए उनके द्वारा बनायी गई रिपब्लिक पार्टी के घो[illegible] पत्र में यह स्पष्ट लिखा था कि यह पार्टी जन्म [illegible] जाति के आधार पर आरक्षण बन्द करेगी।

परन्तु आरक्षण नीति के कारण हरिजनवर्ग [illegible] वोट बैंक बन गया। जिनका लाभ सत्तारूढ़ कांग्रेस [illegible] को मिलने लगा। इसलिए इसका आरक्षण नीति [illegible] बनाये रखने में निहित स्वार्थ पैदा हो गया। [illegible] सरकार आरक्षण की अवधि दस-दस वर्ष के लिए ब[illegible] चली गई। इस आरक्षणनीति के कारण अनुसूचित जा[illegible] में भी एक वर्ग का निहित स्वार्थ पैदा हो गया। वह [illegible]

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

छोटा सा वर्ग है, परन्तु आरक्षण के सभी लाभ इस वर्ग के परिवारों में केन्द्रित होकर रह गये हैं। अनुसूचित जातियों के नाम पर मिलने वाले अधिकांश लाभ कुछ परिवारों तक सीमित हो गये हैं। इसलिए उनका न केवल आरक्षण में अपितु पिछड़ेपन में भी स्वार्थ पैदा हो चुका है।

मंडल आयोग का गठन

चौधरी चरणसिंह ने कांग्रेस से अलग होने के बाद किसानों और देहातों के उत्थान के नाम पर जाट-यादव, कुर्मी इत्यादि उपजातियों को संगठित करके अपना राजनीति आधार बनाने का सफल प्रयत्न किया।

जनता सरकार बनने पर चौधरी चरणसिंह के कहने पर सरकार ने संविधान की धारा ३४० के अन्तर्गत पिछड़े लोगों के उत्थान के लिए बिन्देश्वरी मंडल की अध्यक्षता में एक आयोग बनाया जिसे मंडल आयोग कहा जाता है। इसने १९८० में अपनी रिपोर्ट दी। इसमें इसने जाटों को छोड़कर देहातों में रहने वाली सभी जातियों, यादव, कुर्मी इत्यादि को पिछड़ी जातियां घोषित किया और उन्हें सरकारी नौकरियों में २७ प्रतिशत आरक्षण देने की सिफारिश की।

इस कमीशन ने १९३१ की जनगणना को अपना आधार बनाया। इस आयोग के पांच सदस्यों में से चार तथाकथित पिछड़ी जातियों के थे और पांचवां सदस्य एक अनूसूचित जाति का था। जिस जानकारी के आधार पर यह रिपोर्ट बनायी गयी वह न केवल अधूरी थी, अपितु अधिकृत भी नहीं थी। इसलिए इस आयोग के निर्णय बहुत कुछ तदर्थ चरित्र के हैं। यह रिपोर्ट दस वर्ष तक मन्त्रालय की अलमारियों में बन्द रही। किसी ने इस पर ध्यान नहीं दिया। परन्तु वी० पी० सिंह ने नया जनाधार और नये वोट बैंक के निर्माण के लिए ७ अगस्त, १९९० को अकस्मात् मंडल आयोग की सिफारिशों पर अमल करने की घोषणा कर दी। इससे पूर्व उन्होंने न अपने सहायक दलों से विचार विमर्श किया और न विपक्ष को विश्वास में लिया।

विपरीत प्रतिक्रिया

तथाकथित फारवर्ड जातियों की नई पीढ़ी विशेष रूप से विद्यार्थियों पर इस नई आरक्षण नीति का प्रतिकूल प्रभाव पड़ना अनिवार्य है। इसलिए उनके द्वारा इस नीति का विरोध अनपेक्षित नहीं है। पर विरोध इतना उग्ररूप लेगा और इतने युवक आत्मदाह करेंगे, इसका शायद किसी को भी अनुमान नहीं था। इस कारण मंडल आयोग की रिपोर्ट पर पुनर्विचार करने की मांग सब जगह उठ रही है।

अभी तक जो सुझाव दिए गए हैं वे निम्नलिखित हैं :

१. मंडल कमीशन रिपोर्ट को रद्द किया जाये। २. नई आरक्षण नीति सम्बन्धी आदेश पर अमल स्थगित करके सभी राजनैतिक दलों से विचार विनिमय करके कोई मध्य मार्ग निकाला जाए। ३. पिछड़ेपन का आधार जाति को न बनाकर आर्थिक स्थिति को बनाया जाए और उसके लिए आर्थिक पिछड़ेपन की कोई तर्कसंगत कसौटी तय की जाए। ४. प्रमुख समाजशास्त्रियों, अर्थशास्त्रियों और विधिवेत्ताओं की एक समिति मंडल कमीशन रिपोर्ट पर गहराई से अध्ययन और मूल्यांकन करे और इनकी रिपोर्ट आने तक कोई निर्णय न लिया जाए।

इन सुझावों को मान लेने से स्थिति कुछ सुधर सकती है। परन्तु यह समस्या का स्थायी हल नहीं, समस्या की जड़ है जन्म और जाति के आधार पर पिछड़ेपन को आंकना। वास्तविकता यह है कि हर वर्ग में जाति में ही नहीं वरन बहुत से परिवारों में भी आर्थिक दृष्टि से आगे बढ़े हुए और पिछड़े हुए लोग मिलते हैं। सामाजिक न्याय के लिए आवश्यक है कि ऐसे सभी लोगों को ऊपर उठाने का प्रयत्न किया जाए।

समाधान क्या हो?

परन्तु इससे अधिक आवश्यकता इस बात की है कि जन्म के आधार पर किसी को ऊंचा या नीचा मानने की प्रवृत्ति बदली जाए। यह तभी सम्भव हो सकता है जब जन्म के आधार पर जाति प्रथा पर सीधा प्रहार किया जाए और गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर लोगों का वर्गीकरण किया जाए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने यह काम शुरू किया था और आर्य समाज ने इसे आगे बढ़ाया था। फलस्वरूप तथाकथित शूद्र परिवारों में जन्मे लोग पंडित और पुरोहित बनने लगे और देश में एक सामाजिक क्रान्ति आने लगी। आर्य समाज में शिथिलता आने और जन्म के आधार पर जाति प्रथा के राजनीतिकरण और इसे बनाए रखने में राजनैतिक स्वार्थ पैदा होने के कारण वह सामाजिक क्रान्ति आगे नहीं बढ़ पाई। इसे पुनः गति देने की आवश्यकता है।

शिक्षा में समान अवसर प्रदान करने और उसे सामाजिक एकता और राष्ट्रीय एकजुटता का माध्यम बनाने के लिए शिक्षा और प्रशासन का माध्यम भारतीय भाषाओं के सम्यक् विकास और उनमें तालमेल पैदा करने के लिए देवनागरी लिपि को समानलिपि और संस्कृत को मूल भाषा के रूप में प्रोत्साहन दिया जाये और सभी भारतीय भाषाओं में नए और तकनीकी [शब्द] संस्कृत से ही लिये जाएं क्योंकि संस्कृत ही उन [भाषाओं को] जोड़ने वाली कड़ी है।

साधारण स्कूलों का स्तर ऊंचा उठाया जाये [इसके] लिए आवश्यक है कि ऐसे पड़ोसी स्कूलों की व्यवस्था [की] जाए जिसमें एक पड़ोस के सभी बच्चे चाहे वे राजा [के] हों या रंक के समान शिक्षा पाएं। जब धनी लोगों [के] बच्चे स्कूल जायेंगे तो वे इनका स्तर ऊंचा करने में [भी] रुचि लेंगे।

जब तक शिक्षा पद्धति में इस प्रकार का आ[मूल] परिवर्तन नहीं होता तब तक वर्तमान पब्लिक स्कूलों [में] ५० प्रतिशत स्थान निर्धन और पिछड़े परिवारों के मे[धावी] बच्चों के लिए आरक्षित किए जाएं। ऐसे बच्चों का [व्यय] सरकार और इन स्कूलों में पढ़ने वाले धनी बच्चों [के] अभिभावक मिल कर वहन करें।

मनु ने समाज को समझा था
बाहर भीतर झांका था
गुण कर्मों के आधारों पर
चारों वर्णों को बांटा था
गुण कर्म बदल जाते थे जब
ये वर्ण बदल जाते थे तब

यदि शूद्र कर्म उत्तम करता
तो वह भी ब्राह्मण कहलाता
विद्या के बल पर कोई भी
उत्तुंग-श्रृंग पर चढ़ जाता
कर्त्तव्य-विमुख आचारहीन
द्विज शूद्रों में परिगणित हुए

मनु की इस कर्म व्यवस्था से
युग-युग के चिन्तक चकित हुए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यों के सोलह संस्कार

❑ आचार्य ज्ञानेश्वर आर्य

जिस क्रिया से शरीर, मन और आत्मा उत्तम हो उसको संस्कार कहते हैं। संस्कार किसी वस्तु के पुराने स्वरूप को बदल कर उसे नया स्वरूप दे देता है। जैसे सुनार अशुद्ध सोने को अग्नि में तपाकर उसे शुद्ध बना देता है, वैसे ही वैदिक संस्कृति में उत्पन्न होने वाले बालक को संस्कारों की भट्ठी में डालकर उसके दुर्गुणों को निकाल कर उसमें सद्गुणों को डालने का प्रयास किया जाता है, इसी प्रयत्न को संस्कार कहते हैं।

चरक ऋषि ने कहा है—**'संस्कारो हि गुणान्तराधानमुच्यते'** अर्थात् पहले से विद्यमान दुर्गुणों को हटाकर उनकी जगह सद्गुणों का आधान करने को संस्कार कहते हैं। बालक का जब जन्म होता है तब वह दो प्रकार के संस्कार अपने साथ लेकर आता है। एक प्रकार के संस्कार तो वे हैं, जिन्हें वह जन्म-जन्मान्तरों से अपने साथ लाता है, दूसरे प्रकार के संस्कार वे हैं, जिन्हें वह अपने माता-पिता के संस्कारों के रूप में वंश परम्परा से प्राप्त करता है। ये अच्छे भी हो सकते हैं, बुरे भी हो सकते हैं। संस्कारों द्वारा मानव के नव निर्माण की योजना वह योजना है, जिसमें बालक को ऐसे वातावरण से घेर दिया जाए जिसमें अच्छे संस्कारों को पनपने का अवसर प्राप्त हो और बुरे संस्कारों को वे चाहे पिछले जन्मों के हों, चाहे माता-पिता से प्राप्त हुए हों, चाहे इस जन्म में पड़ने वाले हों, उन्हें निर्बीज कर दिया जाए। हमारी अन्य योजनाएं भौतिक योजनाएं होती हैं, पर संस्कारों की योजना आध्यात्मिक योजना है। वैदिक संस्कृति का मूल ध्येय उस मानव का आध्यात्मिक निर्माण करना है जिसके लिए बांध बांधे जाते हैं, नहरें खोदी जाती हैं।

जो देश उन्नति करने लगता है, वह योजनाओं का तांता सा बांध देता है, कोई पंचवर्षीय योजनाएं बनाता है, कोई दस वर्षीय। परन्तु क्योंकि हमारी दृष्टि आधिभौतिक जगत् तक सीमित है, इसलिए हमारी योँजनाओं का उद्देश्य बांध बांधना, नहरें खोदना, सड़कें बनाना तथा रेलें बिछा देना मात्र रह जाता है। हम भौतिकवादी दृष्टिकोण के कारण समझे बैठे हैं कि मानव का सबसे बड़ा प्रश्न रोटी का प्रश्न है। रोटी का प्रश्न हल हो गया, तो दुनिया के सब प्रश्न हल हो गए। बांधों-नहरों से उत्पादन बढ़ गया, तो दूसरी कोई समस्या नहीं रही। भौतिकवादी समझ में मानव भूख-प्यास का पुतला है, इसके सिवाय कुछ नहीं। वैदिक विचारधारा मानव को शरीर मात्र नहीं मानती। इसमें संदेह नहीं कि बांध बांधने, नहरें खोदने, सड़कें बनाने तथा रेलें बिछाने की योजनाएं भी चलनी चाहिए। परन्तु आध्यात्मिक दृष्टि से ये योजनाएं अत्यन्त प्रारम्भिक योजनाएं हैं, मानव के नव निर्माण की वैदिक दृष्टि से आधारभूत योजना का श्रीगणेश भी नहीं।

वैदिकसंस्कृति की वास्तविक योजना, वह योजना जिसके लिए इस संस्कृति ने जन्म लिया, संस्कारों द्वारा मानव का नव निर्माण करना है। हम बांध बांधते हैं, नहरें खोदते हैं, सड़कें बनाते तथा रेलें बिछाते हैं। परन्तु वह मानव जिसके लिए यह सब कुछ करते हैं, वह कहां है? रेलों का तांता बिछ जाए, मोटरें घर-घर पहुंच जाएं, ज़मीन के चप्पे-चप्पे पर पानी चला जाए, उत्पादन असीम हो जाएं, परन्तु इन सबका उपयोग करने वाला मानव अगर सच्चा न हो, ईमानदार न हो, दूसरों के दुःख में दुःखी और सुख में सुखी होने वाला न हो, दुराचारी हो, भ्रष्टाचारी हो, व्यभिचारी हो, तो ये रेल-मोटर, ये नहरें और ये बांध किस काम आएंगे? और क्या ऐसा हो नहीं रहा? क्या चारों तरफ चकाचोंध

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कर देने वाले वैभव की बढ़ती के साथ-साथ उस मानव का जिसके लिए यह सम्पूर्ण वैभव खड़ा किया जा रहा है, दिनों दिन पतन नहीं हो रहा? मानव कहां है? कहां है वह मानव जिसमें मानवीयता हो? वह मानव जो प्रलोभनों के प्रचण्ड बबंडर उठ खड़े होने पर उसे तिनकों की तरह परे फेंक दे? वैदिक संस्कृति की सबसे बड़ी योजना, और उस योजना का केन्द्र बिन्दु, संस्कारों द्वारा मानव का नव निर्माण है।

वैदिक संस्कृति ने मानव के निर्माण की योजना को तैयार किया था। इसी योजना को सफल बनाने के लिए संस्कारों की पद्धति को प्रचलित किया था। संस्कारों से ही तो मनुष्य बनता है। आत्म-तत्त्व, जन्म-जन्मान्तरों में किस-किस प्रक्रिया में से गुज़रा है? हर जन्म में इस पर संस्कार पड़ते हैं, अच्छे या बुरे-यही तो इस जन्म की, पिछले जन्मों की और अगले जन्मों की कहानी है। इस संस्कृति में मनुष्य जन्म का उद्देश्य शुभ संस्कारों द्वारा 'आत्म-तत्त्व' के मैलं को धोना है, उसे निखारते जाना है। पिछला मैल कैसे धोया जाए, और नया रंग कैसे चढ़ाया जाए? यह सब कुछ इस जन्म के संस्कारों द्वारा ही तो हो सकता है। इस जन्म में बंधकर ही तो आत्म तत्त्व पकड़ में आता है। बर्तन हाथ से पकड़कर मंजता है, आत्मा का शरीर में बंधकर मैल धुलता है, मानव शरीर में बंधकर ही उस पर शुभ संस्कारों का नया रंग चढ़ता है। जिस समय जिस क्षण आत्मा मानव शरीर के बन्धन में पड़ा उसी समय से उसी क्षण से वैदिक संस्कृति उस पर उत्तम संस्कार डालना शुरू कर देती है, और उस क्षण तक डालती चली जाती है जब तक आत्म तत्त्व शरीर को छोड़कर फिर तिरोहित नहीं हो जाता।

आत्मा जब-जब शरीर में आता है, तब-तब वैदिक संस्कृति की व्यवस्था में संस्कारों की श्रृंखला से उसे ऐसा घेर दिया जाता है, जिससे उस पर कोई अशुभ संस्कार पड़ने ही नहीं पाता। संस्कार तो पड़ने ही हैं, कोई व्यवस्था नहीं होगी तो अच्छों के स्थान में बुरे संस्कार ज़्यादा पड़ते जाएंगे, मानव का निर्माण होने के स्थान में मा[illegible] का बिगाड़ होता चला जाएगा। व्यवस्था होगी तो संस्[illegible] का नियमन होगा, अच्छे संस्कार पड़ें, बुरे न पड़ें, [illegible] बात का नियंत्रण होगा तो मनुष्य लगातार मनुष्य ब[illegible] जाएगा, स्वयं उठता जाएगा, समाज को उठाता जाए[illegible] वैदिक संस्कृति की जो विचारधारा है उसके अनु[illegible] यह जन्म, पिछले जन्म व अगले जन्म यह सब संस्[illegible] द्वारा आत्म-शोधन का सिलसिला है, संस्कारों की लगा[illegible] चोट से 'आत्म-तत्त्व' पर पड़े मैल को धो डालने [illegible] प्रयत्न है।

वैदिक संस्कृति में मनुष्य को बिल्कुल बदल [illegible] उसमें आमूल-चूल परिवर्तन करने का जो प्रयास कि[illegible] जाता है, उसमें दो-चार नहीं सोलह संस्कार हैं। [illegible] संस्कारों का क्रम से नाम निम्न प्रकार है।

१. गर्भाधान संस्कार
२. पुंसवन संस्कार
३. सीमन्तोन्नयन संस्कार
४. जातकर्म संस्कार
५. नामकरण संस्कार
६. निष्क्रमण संस्कार
७. अन्नप्राशन्न संस्कार
८. चूड़ाकर्म संस्कार
९. कर्णविध संस्कार
१०. उपनयन संस्कार
११. वेदारम्भ संस्कार
१२. समावर्तन संस्कार
१३. विवाह संस्कार
१४. वानप्रस्थ संस्कार
१५. संन्यास संस्कार
१६. अन्त्येष्टि संस्कार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रेरणा स्त्रोत महर्षि दयानन्द

□ डॉ॰ भारत भूषण पुरंग

इतिहास साक्षी है कि जीवन की छोटी-छोटी घटनाओं से संवेदनशील व्यक्तियों के जीवन की दिशा बदल जाती है। हम प्रतिदिन रोगी, वृद्ध और मृत व्यक्तियों को देखते हैं, हमारे हृदय पर इसका क्षणिक प्रभाव ही रहता है परन्तु ऐसी घटनाओं को देखकर महात्मा बुद्ध को वैराग्य हो गया। पेड़ों से फलों को धरती पर गिरते हुए किसने नहीं देखा, परन्तु न्यूटन ही ऐसा व्यक्ति था जिसने इसके पीछे छिपे कारण को समझा और गुरुत्वाकर्षण के नियम का आविष्कार किया। प्रतिदिन कितने ही शिवभक्तों ने शिव मन्दिर में शिव की पूर्ति पर उछल-कूद मचाते और मिष्ठान्न का भोग लगाते चूहों को देखा होगा परन्तु केवल देव दयानन्द के मन में ही यह जिज्ञासा जागृत हुई कि क्या यही सर्वशक्तिमान्, सच्चे महादेव हैं? इस घटना से प्रेरणा पाकर किशोर मूलशंकर सच्चे शिव की खोज के लिए अपनी प्यारी मां और पिता को छोड़कर घर से निकल पड़े।

मूलशंकर सच्चे शिव की खोज में नर्मदा के घने वनों, योगियों-मुनियों के आश्रमों, पर्वत, निर्झर, गिरिकन्दराओं में भटकता रहा। अलखनन्दा के हिमखंडों में क्षतविक्षत होकर वह मरणासन्न तक हो गया परन्तु उसने अपने लक्ष्य को पाने का प्रयास नहीं छोड़ा। चौबीस वर्ष की आयु में पूर्णानन्द सरस्वती से संन्यास की दीक्षा लेकर मूलशंकर दयानन्द बन गए। अन्ततः इन्हीं की प्रेरणा से वे प्रज्ञाचक्षु दण्डी विरजानन्द के पास पहुंचे और तीन वर्ष तक श्रीचरणों में ज्ञानाग्नि में तपकर गुरु की प्रेरणा से मानवमात्र के कल्याण एवं वेदों के उद्धार के लिए तथा अज्ञान, अन्धकार और समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने के लिए कार्यक्षेत्र में उतर पड़े।

उस समय भारत में मुगल साम्राज्य का सूर्य अस्ताचल की ओर अग्रसर हो रहा था और अंग्रेजों का आधिपत्य सम्पूर्ण भारत पर हो चला था। स्वामी दयानन्द इस विदेशी प्रभुत्व से अत्यधिक क्षुब्ध थे जिसकी अभिव्यक्ति सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास में हुई है। उन्होंने लिखा कि देश के लोग निष्क्रियता और प्रमाद से ग्रस्त हैं लोगों में परस्पर विरोध का वातावरण है और विदेशियों ने हमारे देश को गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ है इसलिए देशवासियों को अनेक प्रकार के दुःख भोगने पड़ रहे हैं। यह ऐसा समय था जब देश में सर्वत्र अज्ञान का अन्धकार व्याप्त था, जनमानस अन्धविश्वासों और कुरीतियों से ग्रस्त था। अंग्रेजों ने भारतीय सभ्यता और संस्कृति को नेस्तानाबूद करने के लिए मैकाले की शिक्षानीति को लागूकर भारतवासियों में हीन भावना का संचार कर दिया था। निराश देशवासी पश्चिमी राष्ट्रों की भौतिक समृद्धि की चकाचौंध से प्रभावित होकर अपने गौरवशाली अतीत, धर्म, संस्कृति और जीवन के नैतिक मूल्यों से विमुख हो रहे थे। इसलिए उन्हें पाश्चात्य जीवन प्रणाली के अनुकरण में ही अपना हित मालूम होता था। ऐसी विकट परिस्थितियों में महर्षि ने आर्य समाज की स्थापना करके जर्जर, निष्प्राण हिन्दू समाज में प्राण फूंकने का कार्य किया तथा उसकी धार्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना को उद्बुद्ध करने का प्रयास किया। उन्होंने हिन्दू समाज की विकृत वर्णव्यवस्था को सुधारने, नारी जाति की दुर्दशा को देखकर उनमें शिक्षा का प्रसार करने तथा अछूतों को हिन्दू समाज की मुख्यधारा में लाने और इस्लाम एवं ईसाइयत में हिन्दुओं के धर्मान्तरण को रोकने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया।

ऋषि के जीवन का मुख्य उद्देश्य वेदों का उद्धार और उनका प्रचार करना था। वे चाहते थे कि वेद-ज्ञान भारत तक ही सीमित न रहे अपितु सम्पूर्ण विश्व में उसका प्रचार हो। उन्होंने कभी भी स्वयं को साम्प्रदायिक मतमतान्तरों के संकीर्ण दायरे में सीमित नहीं रखा। उनका कहना था कि वेदों का ज्ञान किसी एक धर्म, जाति, सम्प्रदाय या देश के लिए नहीं है अपितु सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण के लिए है। इसीलिए उन्होंने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' अर्थात् सम्पूर्ण विश्व को श्रेष्ठ बनाने का संदेश दिया। उनके लिए तो सारा संसार उनका परिवार था। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' उनका आदर्श वाक्य था। उन्होंने मानवमात्र के कल्याण के लिए और धर्म के सच्चे स्वरूप के प्रकाश के लिए 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना की। यहां एक बात विशेष महत्त्व की है कि उन्होंने व्यापक राष्ट्रीय हित को ध्यान में रखते हुए अपने अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश की रचना न तो गुजराती भाषा में की जो उनकी मातृभाषा थी और न ही इसके लिए संस्कृत भाषा का आश्रय लिया जिसके वे उद्भट्ट विद्वान् थे। उन्होंने इसकी रचना आर्यभाषा अर्थात् हिन्दी भाषा में की जिसे वे देश की ऐसी भावी राष्ट्रभाषा के रूप में देख रहे थे जो देश को एकता के सूत्र में बांधने का कार्य करेगी। इसीलिए उन्होंने अपने सभी तैंतीस ग्रंथों की रचना हिन्दी भाषा में की।

भारतीय समाज को महर्षि के योगदान का उल्लेख करते हुए पंजाब केसरी लाला लाजपतराय ने कहा, "हम यह नहीं कहते कि दयानन्द को ही सारी क्रान्ति का श्रेय मिलना चाहिए परन्तु हम यह अवश्य कह सकते हैं कि जिन शक्तियों और कारणों ने इस क्रान्ति को पैदा किया उनमें स्वामी दयानन्द सर्वश्रेष्ठ स्थान पाने के अधिकारी हैं।

भारत के स्वाधीनता संग्राम में लोकमान्य तिलक ने 'स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है' का नारा बुलन्द किया। परन्तु इससे भी पूर्व दादाभाई नौरोजी ने 'स्वराज्य' शब्द का प्रयोग किया था परन्तु कितने लोग जानते हैं कि नौरोजी बम्बई में श्यामजी कृष्ण वर्मा के निवास स्थान पर आर्यसमाज के सत्संगों में सम्मिलित होते थे और उन्होंने वहीं सत्यार्थ प्रकाश से 'स्वराज्य' शब्द ग्रहण किया।

गुरु शिष्य परम्परा में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेताओं में श्री रानाडे, महर्षि दयानन्द के शिष्यों में से एक थे। श्री रानाडे के शिष्य गोपाल कृष्ण गोखले थे। इसी क्रम में श्री गोखले के शिष्य महात्मा गांधी और सरदार पटेल थे। अतः कहा जा सकता है कि भारतीय क्रान्ति के आदि स्रोत देव दयानन्द ही थे। महर्षि के शिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा और उनके शिष्यों में लाला हरदयाल, मदनलाल धींगड़ा, भाई परमानन्द और वीर सावरकर थे। यदि हम श्याम जी कृष्ण वर्मा को इस क्रान्ति के जनक या पिता मानें तो महर्षि दयानन्द को इस क्रान्ति का पितामह कहना होगा।

महात्मा गांधी ने महर्षि के बारे में कहा था "वे हिन्दुस्तान के आधुनिक ऋषियों, सुधारकों श्रेष्ठ पुरुषों में से एक थे। उनका ब्रह्मचर्य, कार्यकुशलता आदि गुण लोगों को मुग्ध करते थे। उनके जीवन का प्रभाव हिन्दुस्तान पर बहुत पड़ा है। मैं जैसे-जैसे आगे बढ़ता हूं वैसे-वैसे मुझे महर्षि का बताया मार्ग दिखाई देता है। ब्रिटिश साम्राज्य स्थापित होने के बाद जनता के साथ सीधे सम्पर्क रखने का मार्ग महर्षि दयानन्द ने खोज निकाला था। इसका श्रेय महर्षि दयानन्द और उसकी आर्य समाज को जाता है। महर्षि तथा उसके समाज ने अनेक कुरीतियों को दूर करने का प्रयत्न किया। उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा, स्त्री-शिक्षा तथा दलितोद्धार आदि कभी न भुलाए जा सकने वाले राष्ट्र की महान् सेवा के कार्य किए। मुझे आर्य समाज बहुत प्रिय है। महर्षि दयानन्द के इस पवित्र देशोपकारी कार्य का कभी भी अपमान होगा तो मैं उसे महापाप समझूंगा।"

योगीराज अरविन्द घोष ने देव दयानन्द का वर्णन करते हुए कहा, "उन विलक्षण महापुरुषों की पंक्ति में जो भावी पीढ़ियों को भारतीय पुनर्जागरण के शीर्ष स्थान पर दिखाई देगा, एक ऐसा व्यक्ति भी होगा जो अपनी अनोखी विशिष्टता के कारण सबसे अलग दीख पड़ेगा क्योंकि वह जैसे अपने व्यक्तित्व में अद्वितीय है वैसे ही अपने कार्य में भी। जब मैं ईश्वर की इस दुर्जेय कृति को देखता हूं तो मेरी दृष्टि में लगातार श्रम, संघर्ष, विजय और सफलताओं के चित्र घूम जाते हैं और उन्हें देखकर मैं कह उठता हूं "दयानन्द! तू सचमुच ज्योतिपुंज है परमात्मा की कृति का अनुपम योद्धा महापुरुष और संस्थाओं का निर्माता है तू।" स्वामी दयानन्द को आधुनिक भारत का निर्माता मानते हुए भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन ने स्वीकार किया कि "भारतीय संविधान पर सबसे अधिक छाप आर्य समाज की है। जिन बातों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लिए आर्य समाज ने आन्दोलन किया, आज वे सब भारतीय संविधान का अंग बन चुकी हैं। इसके अतिरिक्त ऋषि दयानन्द से बढ़कर आधुनिक भारत का निर्माता और किसे कहा जा सकता है?"

स्वामी दयानन्द के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए सरदार पटेल ने कहा था, "स्वामी दयानन्द जी के राष्ट्रप्रेम, उनके क्रान्तिकारी हृदय, उनकी हिम्मत, उनके ब्रह्मचर्य जीवन का मैं सदा उपासक रहा हूं। समाज की सभी कुरीतियों और बुराइयों के विरुद्ध उन्होंने क्रान्ति घोष किया था। यदि स्वामी जी न होते तो हिन्दू समाज की क्या हालत होती, इसकी कल्पना करना कठिन है।"

आज देश में जो भी कार्य चल रहे हैं, उनका मार्ग स्वामी जी वर्षों पूर्व प्रशस्त कर गए थे। शताब्दियों में विरले ही ऐसे महापुरुष आते हैं। समाज में जब बुराइयां घर कर जाती हैं, तभी ईश्वर ऐसी विभूतियों को भेजता है। ऐसे महापुरुष कभी मरते नहीं, वे अमर होते हैं। उनका जीवन हमारे लिए आदर्श बन जाता है।

प्रत्येक राष्ट्रभक्त देशवासी का कर्त्तव्य है कि वह ऋषि के जीवन से प्रेरणा ग्रहण करके महर्षि के द्वारा आरम्भ किए कार्य को पूरा करने के लिए एक बार फिर कटिबद्ध हो जाए। हम अपनी शक्ति एवं सामर्थ्य के अनुसार नई योजनाएं आरम्भ करके उन्हें पूरा करें। हमें स्त्रियों में निरक्षरता को समाप्त करने, उन्हें समाज में उचित स्थान दिलाने के लिए प्रयत्न करना चाहिए। समाज के दलित वर्ग एवं पिछड़े और गुमराह भाइयों को गले लगाकर समाज में उन्हें प्रतिष्ठित स्थान दिलाना चाहिए। यही हमारी महर्षि के प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी।

मनुर्भव जनया दैव्यं जनम् ॥ ऋग्वेद १०/५३/६

वेद में ईश्वर का आदेश है हे व्यक्ति मनुष्य बन, मननशील बन।

१. अपने सुख-दुःख, हानि-लाभ के तुल्य अन्य प्राणियों के सुख-दुःख, हानि-लाभ को मान। अपने जीवन को उत्तम बनाकर अपनी सन्तान और शिष्य को उत्तम बना।
२. शुद्ध ज्ञान, शुद्ध कर्म, शुद्ध उपासना के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति को अपना जीवन उत्तम बनाना चाहिए।
३. संसार का सबसे बड़ा उपकार यह है कि समाज को दिखायें कि वेदों में बताये गये आदर्श जीवन में उतारे जा सकते हैं। इसके बिना समाज का पतन रुक नहीं सकता।
४. ईश्वर से उचित सम्बन्ध बनाने के लिए कर्त्तव्यों को करना और अकर्त्तव्यों को छोड़ना आवश्यक है।
५. ईश्वर की व्यवस्था में सत्य की ही जीत होती है। मनुष्य कृत व्यवस्था में अन्याय भी होता है, अतः झूठ जीतता प्रतीत होता है। अन्तिम जय पराजय तो ईश्वर के न्यायालय में ही होती है। जीत का अर्थ है मोक्ष की प्राप्ति, हार का अर्थ है मोक्ष की अप्राप्ति।

—श्री स्वामी सत्यपति परिव्राजक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कर्मफल टारे नहीं टरै

□ आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री

किये हुए कर्मों का फल अवश्य मिलता है। शुभ कर्मों का फल शुभ होता है, दुष्कर्मों का फल दुःख होता है।

जब तक किये हुए कर्मों का फल भोग न लिया जाये, तब तक कर्म नष्ट नहीं होता। जगत् कितना प्यारा शब्द है। जगत् को समझ लें तो फिर दुःख कहां? वेदों में भी जगत् शब्द आया है। जैसे

ईशावास्यमिदं सर्वम् यत्किञ्च जगत्यां जगत्।

जगत् का अर्थ है— ज=जन्म लेना। गत=चले जाना, शब्द ही बताता है कि यह संसार क्या है, आना और जाना ही तो जगत् है। मनुष्य इस जगत् में कर्म करने में स्वतंत्र है। परन्तु फल पाने में परतन्त्र है। वह जहां जाये, कुछ भी खाये, जहां विचरे, वह स्वतन्त्र है।

जैसे विद्यार्थी ११ महीने तक परिश्रम करता है, लगन से अध्ययन करता है। परीक्षा हॉल में प्रश्नोत्तर लिख रहा है, तब भी वह स्वतन्त्र है। उस समय छात्र गलत उत्तर भी लिख रहा होता है तो कोई नहीं टोकता। परन्तु जब उत्तर पुस्तिका की जांच होती है, तब सही उत्तर का सही परिणाम और गलत उत्तर दिया हो तो उसे अनुत्तीर्ण घोषित कर दिया जाता है।

यहां पर विद्यार्थी परीक्षा देने में स्वतंत्र है, परन्तु फल पाने में परतंत्र है। ठीक इसी प्रकार जीवात्मा भी कर्म करने में स्वतंत्र है, परन्तु फल पाने में पराधीन है।

पाठकवृन्द! कर्मफल तो मिलता ही है, हां परिणाम में भले ही देर हो, परन्तु मिलता जरूर है।

स्मरण रहे, जीव एक चेतन शक्ति है जो सारे प्राणियों में रहकर कर्म करता है और सुख दुःख भोगता है। ईश्वर सर्वज्ञ है, जीव अल्पज्ञ है। ईश्वर विभु हैं, जीव अणु है। ईश्वर व्यापक है, जीव व्याप्त है। ईश्वर स्वामी है, जीव सेवक है। मनु कहते हैं :-

मानसं मनसैवायमुपभुङ्क्ते शुभाशुभम्।
वाचा वाचाकृतं कर्म कायेनैव च कायिकम्॥

(अयम्) यह जीव (मानसं शुभ+अशुभं क... मनसा+एव) मन से जिस शुभ वा अशुभ कर्म को करत... है उसको मन, (वाचाकृतं वाचा) वाणी से किये को वाणी (च कायिकं कायेन+एव) और शरीर से किये को शरीर से (उपभुङ्क्ते) सुख दुःख भोगता है।

शरीरजैः कर्मदोषैर्याति स्थावरतां नरः।
वाचिकैः पक्षिमृगतां मानसैरन्त्यजातिताम्॥

(नरः) जो नर (शरीरजैः कर्मदोषैः स्थावरतां याति) शरीर से चोरी, परस्त्रीगमन, श्रेष्ठों को मारने आदि दुष्टकर्म करता है, उसको वृक्ष आदि स्थावर का जन्म (वाचिकैः पक्षिमृगताम्) वाणी से किये पाप कर्मों से पक्षी और मृग आदि तथा (मानसैः अन्त्यजातिताम्) मन से किये दुष्ट कर्मों से चण्डाल आदि का शरीर मिलता है।

हे मानव! तू जीवन में शुभकर्म कर, धर्माचरण सदाचरण का सहारा ले, यही तुझे इस लोक में तथा परलोक में भी शान्ति प्रदान करेंगे।

जो व्यक्ति सत्कर्म करता है वह संत बन जाता है। जिस कार्य को करने से हर्ष, उत्साह, निर्भयता तथा साहस हो वही श्रेष्ठ कर्म है तथा जिससे डर, लज्जा, शंका होती है उस कार्य को कदापि नहीं करना चाहिए।

आने का दिन एक है, जाने का दिन एक।
इन दो दिनों के बीच में, काम करो कोई नेक।

व्यक्ति को भाग्य के भरोसे नहीं बैठना चाहिए अपितु कर्म करते रहना चाहिए। नादान हैं वे जो वक्त के सहारे बैठते हैं। समझदार वह है जो वक्त आने से पहले अपनी धारा बना लेते हैं।

कृ धातु से कर्म बना है। जिसका अर्थ है—करना। वर्णमाला जब छोटे बच्चों को पढ़ायी जाती है तब कहा जाता है—कलम के क, खरगोश के ख, गणेश के ग, घ...

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क घ आदि। वर्णमाला का यह क्रम वैज्ञानिक है। पहले क उसके बाद ख आता है। इसका रहस्य है क=काम करोगे, तब ख=खाओगे। कमाओगे नहीं तो फिर अन्न कहां से मिलेगा?

वेद आदेश देता है कि हे मनुष्य! तू कर्मों को करता हुआ सौ वर्ष पर्यन्त जीने की कामना कर। संस्कृत में हाथ के लिए 'कर' शब्द आया है। जिसका सरल अर्थ है, कर्म करो, यदि इस शरीर से शुभ कर्म नहीं किये, तो अगले जन्म में ये अमूल्य मानव शरीर मिलने वाला नहीं है।

अतः तू आलस्य त्यागकर, पुरुषार्थ कर! कभी आपने सोचा कि यमराज को मृत्यु नाम से स्मरण क्यों करते हैं?

आलंकारिक वर्णन में गाथायें आती हैं कि मृत्यु भैंसा पर सवारी करती है।

इसका रहस्य यह है कि भैंसा बहुत प्रमादी होता है। न तो वह गर्मी को सह सकता है, न सर्दी को। थोड़ी सी गर्मी लगी नहीं कि भैंसा कीचड़ में जा बैठता है।

इसीलिए याद रखो, आलसी व्यक्ति के सिर पर सदा मौत विराजमान रहती है।

आज इस देश की जितनी हानि दुर्जनों की दुर्जनता से हो रही है उससे कहीं ज्यादा हानि सज्जनों की निष्क्रियता से हो रही है।

जब कोई व्यक्ति मरने की स्थिति में होता है डाक्टर भी जवाब दे देते हैं कि अब ये हमारे वश का नहीं। तो उसे खाट से उतारकर धरती पर लिटा देते हैं। कभी आपने चिन्तन किया इसका क्या रहस्य है? वेदमन्त्रानुसार जो व्यक्ति कर्म करते हुए शरीर छोड़ते हैं वे मुक्ति को प्राप्त करते हैं। विचार का निर्वाह करने के लिए मरणासन्न व्यक्ति को धरती पर लिटा देते हैं। यह संदेश दिया जाता है कि यह व्यक्ति काम करते-करते मरा है। प्रमाद से नहीं।

कभी-कभी हम कर्मफल के समय दुःखी हो जाते हैं। आदमी कहता है कि मैंने जीवन में कभी पाप नहीं किया, सदा परोपकार किया, फिर मैं इतना कष्ट क्यों भोग रहा हूं। याद रहे, जो दुःख मिल रहा है वह पूर्वजन्मों के दुष्कर्मों का फल है। प्रभु की न्याय व्यवस्था उचित है। २ और २ चार होते हैं। यह अटल सिद्धान्त है।

एक आशु कवि हुए। उनका जीवन त्यागमय, यज्ञमय बीता, परन्तु वृद्धावस्था के समय उनको कोढ़ हो गया। दयनीय स्थिति थी। न चल पाना, न बैठ पाना, न बोल पाना। शरीर से मवाद निकल रहा है। इतने भयानक कष्ट को धैर्यपूर्वक झेल रहे थे। कुछ विद्वान् उनके दर्शन करने गये। उनके शरीर के कोढ़ तथा कष्ट को देखते हुए वे विद्वान कहने लगे—हे कविवर! आप भगवान से प्रार्थना क्यों नहीं करते कि—हे प्रभो! मुझे तू मुक्ति दे। कवि कहने लगे—मैं ऐसी प्रार्थना कभी नहीं करूंगा। ठीक है पूर्वजन्मों के कुछ दुष्कर्मों का फल इस जन्म में मुझे भोगना पड़ रहा है जितना कष्ट है रोग है, सब मैं इसी शरीर से ही भोगना चाहता हूं। शेष रखना नहीं चाहता। ताकि जब मेरा पुनर्जन्म हो तब मेरा शरीर स्वस्थ, सुन्दर, नीरोग हो। कोई रोग फटकने न पाये।

इसलिए हे मनुष्य! प्रतिकूल परिस्थिति में भी कष्टों का सामना करना, ठोकर मिले तो घबराना नहीं।

मुश्किलें दिल के इरादे आज़माती हैं।
स्वप्न के पर्दे निगाहों से हटाती हैं।
हौसला मत हार गिरकर ओ मुसाफिर।
ठोकरें इंसान को चलना सिखाती हैं॥

जो कुछ कर्म किए भाई तैने साथ चलेंगे सब तेरे
कंचन काया भस्मी हो जाए काल-कराल फिरै घेरे
मात-पिता सुत नारी रे बन्धु मतलब से तेरे मेरे
वृक्ष-वाटिका सागर-सरिता बन पर्वत में हों डेरे

—श्री स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

श्रेष्ठता के आठ लक्षण

❑ डॉ० आनन्द सुमन

उसी मनुष्य का जीवन सार्थक है, जिसके जीवन में श्रेष्ठता है। श्रेष्ठ जीवन के लक्षण अनेक प्रकार से गिनाये गये हैं किन्तु आर्याभिविनय में जो आठ लक्षण गिनाये गए हैं, वे ही निर्दोष और निर्विवाद हैं। जिस मनुष्य में ये आठ लक्षण विद्यमान है, वही मनुष्य श्रेष्ठ है। जिसमें ये लक्षण नहीं है, वह श्रेष्ठ नहीं है। अतः इन आठ लक्षणों पर विचार करना आवश्यक है।

१. **अत्यन्त प्रेम** :- पहला लक्षण है—प्रेम। प्रेम मानवता की सुगन्ध है। जिस मनुष्य के हृदय में प्रेम है, वही श्रेष्ठ है। वही अन्यों के प्रति दया, न्याय, सहयोग और उपकार करता है। वही सबको अपना समझता और सुख देता है। वही सबके लिए जीता और वही वास्तव में जीता है। वह भारतवासी और यूरोपवासी, स्त्री और पुरुष, बालक और वृद्ध अपना और पराया, खरगोश और हाथी, सबको अपना समझता है। वह मानव मात्र और प्राणि मात्र से प्रेम करता है। ऐसे प्रेम से भरा हृदय ही ईश्वर की अनुभूति करा सकता है। वेद में भी कहा गया है—"**मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे**" (यजुर्वेद अध्याय ३६, मन्त्र १८)। हम सब एक-दूसरे को मित्र की अर्थात् प्रेम की दृष्टि से देखें। यही दृष्टि सर्वोत्कृष्ट दृष्टि है। परमात्मा सब जीवों से प्रेम करता है। मनुष्य के रूप में आदर पाने वाले माता, पिता, गुरु, भाई, मित्र, अतिथि आदि भी प्रेम के कारण आदर पाते हैं। पशु-पक्षी भी प्रेम की भाषा समझते हैं। अतः हम सबसे प्रेम करें, निरंतर प्रेम करें, अत्यन्त प्रेम करें।

२. **धर्मात्मा** :- श्रेष्ठता का दूसरा लक्षण है—धर्मात्मा। साधारण मनुष्य धर्म और अधर्म दोनों ही कर बैठता है। उसकी सामान्य रुचि तो धर्म में होती है। किन्तु वह इन्द्रियों के वशीभूत होकर तमोगुणी वृत्ति के पीछे चलकर अथवा लोभ-मोह आदि के कारण अधर्म में फंस जाता है। यह कल्याण का मार्ग नहीं है। कल्याण तो धर्मात्मता अर्थात् सदा धर्म ही करने में है। वही मनुष्य श्रेष्ठ है, जो सदा धर्म का आचरण करे और कभी भी धर्म से हटकर अधर्म में न पड़े। वस्तुतः धर्म ही मनुष्यता का आधार है। "**आहारनिद्राभयमैथुनं च समानमेतत्पशुभिर्नराणाम्। धर्मो हि तेषामधिको विशेषो धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः।**" (हितोपदेशः अध्याय१, श्लोक २५)। आहार, निद्रा, भय, और विहार करना तो पशुओं और मनुष्यों में एक समान है किन्तु धर्म का सम्बन्ध हिन्दू, मुस्लिम, सिख व ईसाई होने से नहीं है। हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि तो सब मनुष्य ही हैं और सब मनुष्यों का एक ही धर्म है। इसे मानव धर्म अथवा वैदिक धर्म कह सकते हैं। धर्म का तात्पर्य है—सत्य, न्याय, कर्त्तव्य, सेवा, उपासना, तप, दान, यज्ञ आदि शुभ कर्म करना। धर्म के पथ पर निरन्तर चलना बड़ा कठिन काम है। किन्तु स्थायी सुख-शान्ति की प्राप्ति भी इसी से होती है। अतः धर्मात्मता धारण करना भी अभीष्ट है।

३. **विद्या** :- तीसरा लक्षण है विद्या। शास्त्रों में विद्या को कामधेनु कहा गया है अर्थात् वह गाय जो समस्त इच्छायें पूर्ण करती हैं। विद्या की प्राप्ति के लिए ईश्वर, जीवन और प्रकृति के स्वरूप को जानना आवश्यक है। इन तीनों के विषय में इतने विरोधी विचार प्रचलित हैं कि संसार के लोग दिग्भ्रमित हो गए हैं। कोई कहता है ईश्वर नहीं है, कोई कहता है जगत् ही सब कुछ है। कोई कहता है जीव ईश्वर का अंश है, कोई कहता है जीव ही ईश्वर हो जाता है। वस्तुतः ईश्वर, जीव और प्रकृति पृथक्-पृथक् हैं। ये तीनों तत्त्व अनादि और अनन्त हैं। इनमें प्रकृति जड़ है। जीव चेतन, अल्पज्ञ, कर्त्ता-भोक्ता और बंध मोक्ष में आने वाला है। ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, सर्वज्ञ, सृष्टिकर्ता, निराकार, कर्मफलदाता और नित्य शुद्ध बुद्ध-मुक्त स्वभाव है। इन तीनों के स्वरूप को यथावत जानना विद्या और न जानना अविद्या है। विद्या दो प्रकार की होती है—भौतिक और अध्यात्म विद्या।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"**अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते**" (यजुर्वेद अध्याय ४०, मन्त्र १४)। भौतिक विद्या से सांसारिक दुख दूर होते हैं और अध्यात्म विद्या से मोक्ष की प्राप्ति होती है। जिस राष्ट्र में भौतिक विद्या की उपेक्षा होती है, वहां सांसारिक सुख, उन्नति एवं समृद्धि नहीं होती। जिस राष्ट्र में अध्यात्म विद्या की उपेक्षा होती है, वहां मानसिक सन्तोष, शान्ति एवं आनन्द नहीं होता। मनुष्य को सुख एवं सन्तोष, उन्नति एवं शान्ति, समृद्धि एवं आनन्द दोनों ही चाहिए। अतः पूर्ण विद्या की प्राप्ति अभीष्ट हैं।

४. **सत्संग :**– श्रेष्ठता का चौथा लक्षण है—सत्संग। सत्संग उसे कहते हैं, जिसमें मनुष्य सद्पुरुषों के साथ बैठकर सद्विचार और सत्कर्म करता है। इससे विद्या में शुचिता आती है और मनुष्य का अभिमान दूर होता है। उसका व्यवहार सुधरता है और दार्शनिकता एवं व्यावहारिकता में संतुलन बनता है। उसमें उपकार की भावना बलवती होती है और वह अपने-अपने लिए न जीकर सबके लिए जीने का यत्न करता है। यदि मनुष्य विद्वान् बन जाए और सत्संग न करे तो वह अपनी विद्या से दूसरों को पूर्ण लाभ नहीं पहुंचा सकता। सत्संग द्वारा ज्ञान को कर्म में बदला जाता है। "**जाड्यं धियो हरति कथय किन्न करोति पुंसाम्।**" (भर्तहरिः नीतिशतक, श्लोक २३)। सत्संग अर्थात् सज्जनों की संगति, बुद्धि की जड़ता को दूर करती है, वाणी को सत्य से सींचती है, सम्मान को बढ़ाती है, पाप को दूर करती है, चित्त को प्रसन्न करती है, कीर्ति को चारों दिशाओं में फैलाती है, कहो यह मनुष्यों के लिए क्या नहीं करती?

५. **सुविचारता :**– पांचवां लक्षण है—सुविचारता। मनुष्य के मन में अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के विचारों का आवागमन रहता है। अच्छे विचार उत्थान की ओर और बुरे विचार पतन की ओर ले जाते हैं। मनुष्य के हृदय की भूमि इतनी उपजाऊ है कि उसमें अच्छे और बुरे दोनों ही विचारों के बीच अंकुरित हो जाते हैं। उसे चाहिए कि बुरे विचार के बीजों को अंकुरित होने से पहले उखाड़ फेंके और अच्छे विचार के बीजों को भली-भांति अंकुरित होने दे। ईर्ष्या, द्वेष, निंदा, चुगली, क्रोध, नास्तिकता, धर्मान्धिता आदि कुविचारों के बीज कुकर्म को जन्म देते हैं। शिष्टता, नम्रता, अनुशासन, कर्त्तव्यपरायणता, पारिवारिक सौमनस्य, देश प्रेम, विश्व बन्धुत्व आदि सुविचारों के बीज सत्कर्म को जन्म देते हैं। मनुष्य की श्रेष्ठता इसमें है कि वह सुविचारिता को सदा बनाये रखे।

६. **निर्वैरता :**– छठा लक्षण है—निर्वैरता। मनुष्य के स्वभाव में प्रेम एवं घृणा दोनों ही हैं। प्रेम के कारण वह परिवार एवं समूह बनाकर रहता है। घृणा के कारण वह संघर्षों में उलझा रहता है। प्राचीन काल का देवासुर संग्राम, मध्यकाल के सैनिक युद्ध और वर्तमान काल के साम्प्रदायिक दंगे इसी संघर्ष का परिणाम हैं। इन संघर्षों का बाह्य रूप भले ही बदलता रहे, वैर की आन्तरिक भावना तो एक ही है। इसी वैर की भावना को अपने मन से निकाल देना निर्वैरता है। मनुष्य अपने जीवन की सीमित अवधि को देखे। इसमें से कितना समय वैर-विरोध में व्यर्थ चला जाता है? मनुष्य को शेर, हाथी, मगर और सर्पों से उतना कष्ट नहीं पहुंचता जितना स्वयं मनुष्य से पहुंचता हैं। यह कैसी मनुष्यता है कि मनुष्य, मनुष्य को ही शत्रु समझे। इस शत्रुता का निराकरण आवश्यक है। माना कि दूसरे की शत्रुता पर हमारा वश नहीं, किन्तु हम अपने मन में किसी के प्रति शत्रुता न रखें। "**अक्रोधेन जयेत् क्रोधमसाधुं साधुना जयेत्।**" (विदुरनीतिः अध्याय ७, श्लोक ७२)। क्रोध को अक्रोध से और दुष्टता को साधुता से जीतो। वैर का बदला वैर से देना सराहनीय नहीं। वैर का बदला प्रेम से देना सराहनीय है। यह निर्वैरता महान् पुरुषों का आवश्यक लक्षण है।

७. **जितेन्द्रियता :**– सातवां लक्षण है—जितेन्द्रियता। इन्द्रियां करण अर्थात् साधन हैं। इनसे ज्ञान की प्राप्ति, कर्म का व्यवहार एवं सुख का उपभोग किया जाता है। किन्तु ऐसा तभी तक होता है जब तक यह अनुशासन में रहते हैं। जब ये अनियंत्रित हो जाती हैं तो मनुष्य को दुख एवं पतन के भंवर में डाल देती हैं। ये उसे रसों के पीछे खींच ले जाती हैं और रसों के पीछे दौड़ता मनुष्य अपने से दूर जाकर अन्ततोगत्वा नष्ट हो जाता है। इन्द्रियों का दास होकर मनुष्य पाप एवं अपराध में फंस जाता है और अन्यों के लिए दुःखदायी बन जाता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इन्द्रियों का स्वामी होकर ही मनुष्य बल, ज्ञान, उन्नति एवं सुख की प्राप्ति कर सकता हैं। इन्द्रियां निर्बल न हों, बलिष्ठ हों, किन्तु नियंत्रित भी हों। **"इन्द्रियाणां तु सर्वेषां यद्येकं क्षरतीन्द्रियम्। तेनास्य क्षरति प्रजा दृतेः पात्रादिवोदकम्॥"** (मनुस्मृतिः अध्याय २, श्लोक ७४)। सब इन्द्रियों में यदि एक भी इन्द्रिय अपने विषय में आसक्त रहने लगती है तो उसी के कारण मनुष्य की बुद्धि ऐसे नष्ट हो जाती है, जैसे मशक में छिद्र होने पर सारा पानी बहकर नष्ट हो जाता है। अतः सभी इन्द्रियों पर नियंत्रण करना आवश्यक है। यही जितेन्द्रियता श्रेष्ठ जीवन का आधार तैयार करती है।

८. **प्रत्यक्षादि प्रमाण :-** संसार में सैकड़ों मत-मतान्तर प्रचलित हैं। लोग इन पर मनमाने ढंग से अथवा आनुवंशिक रूप से विश्वास करते हैं। इससे लोगों के विश्वास परस्पर विरोध बन गए हैं। जो बहुधा संघर्ष करा देते हैं। यह विडम्बना है कि मनुष्य अपने विश्वास के लिए प्राण देने को तो उद्यत हो जाता है, किन्तु यह परिश्रम नहीं करता कि उसका विश्वास सत्य है अथवा मिथ्या। वस्तुतः विश्वास से पहले किसी सिद्धान्त की समुचित परीक्षा करनी चाहिए। परीक्षा में खरा उतरे, तभी उस पर विश्वास किया जाए। खरा न उतरे तो उसे त्याग दिया जाए। यह परीक्षा पांच प्रकार से होती है– (१) जो ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव एवं वेद के अनुकूल हो, वह सत्य और उससे विरुद्ध असत्य है। (२) जो सृष्टि क्रम के अनुकूल हो, वह सत्य और उससे विरुद्ध असत्य है। (३) आप्त अर्थात् सत्यवादी धार्मिक विद्वान् का वचन सत्य और उसके विरुद्ध असत्य है। (४) अपने आत्मा की पवित्रता के अनुकूल सत्य और उसके विरुद्ध असत्य है। (५) प्रत्यक्ष (इन्द्रियों का सीधा अनुभव), अनुमान (प्रत्यक्ष के आधार पर इतिहास), अर्थापत्ति (कारण के बिना कार्य नहीं होता), सम्भव (संसार में क्या सम्भव है और क्या असम्भव है) एवं अभाव (अस्तित्व में होना व न होना), जो इन कसौटियों पर खरा उतरे वह सत्य और उससे विरुद्ध असत्य है। इस प्रकार सत्य और असत्य का निश्चय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना चाहिए। यही न्याय है। यह श्रेष्ठता का आठवां लक्षण है। जो मनुष्य तद्नुसार चलता है, वही श्रेष्ठ है।

मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दुःख और हानि-लाभ को समझे, अन्यायकारी बलवान् से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं की चाहे वे महा अनाथ, निर्बल और गुणरहित क्यों न हों उनकी रक्षा उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती, सनाथ महाबलवान् और गुणवान् भी क्यों न हों तथापि उनका नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करें।

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत भारतीयों का है

□ श्री भानुप्रताप शुक्ल

भारत में ही नहीं, अमेरिका में भी आर्यों के भारत आगमन, आर्य-द्रविड़ संघर्ष, हिन्दुओं और हिन्दुत्व को लेकर एक बार पुनः विवाद छेड़ा गया है। इस विवाद में उलझने के पूर्व यह जानना जरूरी है कि भारत राष्ट्र पुरातन और इसकी चेतना सनातन है। आर्यत्व ही इसकी मूल राष्ट्रीयता ओर अजस्र सांस्कृतिक धारा है, अपने आप में एक सत्यापित प्रमेय। इसकी स्थापना हेतु मैं गवाही या प्रमाण देने के पक्ष में नहीं हूं। और कम से कम किसी भी विदेशियों और उनके मानसपुत्रों को तो हर्गिज नहीं। वैसे भी गवाही की जरूरत तब पड़ती है, जब या तो सत्य धुंधला अथवा पक्ष कमजोर होता है। फिर भी इस देश को पश्चिमी चश्मे से देखने वाले विदेशी बुद्धिजीवियों को यदि कोई बात बतानी और समझानी हो, तो गवाही और उसमें भी विदेशी गवाही उनके लिए बहुत मायने रखती है। परम्परागत ऐतिहासिक एवं स्वयं के अनुभव को भी वे प्रामाणिक नहीं मानते। यह उनकी जड़ता और जड़ मानसिकता का लक्षण है। यही हालत हमारे देश के कुछ उन बुद्धिजीवियों की भी है, जो 'हिन्दू' (आर्य) कहने भर से शर्मशार हो उठते हैं जैसे कि यह अपने आप में गाली हो। जो लोग आर्य (हिन्दू) राष्ट्र की यथार्थता और व्याख्या को दकियानूसी एवं प्रतिक्रियावादी मानते हैं, जिन्हें इस देश के अतीत में ऐसा कुछ भी नहीं दिखाई देता, जिस पर गर्व और गौरव किया जा सके, उन्हें यह बताना जरूरी हो जाता है कि जिसके बारे में उनकी अपनी सोच इतनी धुंधली और अपराधबोध से ग्रस्त है, उसी राष्ट्र तथा उसी अक्षय सनातन संस्कृति और सभ्यता के बारे में विदेशी पुराविदों और इतिहासकारों की क्या मान्यता है।

अट्ठारहवीं शताब्दी के एक जर्मन विद्वान् डोम का कहना है, 'भारत, सभ्यता की जन्मस्थली है। यह मानव जाति के जीवन का पालना है।' वोल्टेयर कह गये हैं, 'मुझे पूरी तरह यकीन है कि पश्चिम में खगोलशास्त्र और ज्योतिषशास्त्र का आज जो भी ज्ञान मौजूद है वह गंगा की घाटियों से आया है।' विलीयम मैंकिनतोश ने लिखा है, 'अतीत में यह देश ज्ञान एवं प्रज्ञा के क्षेत्र में इतना समृद्ध था कि ग्रीक के दार्शनिक यहां आकर अपना ज्ञानवर्धन करते थे। फ्रांस का प्रकृति विज्ञानी पियरे सोनेरट का यह विश्वास है 'भारत एक ऐसा देश था, जहां दुनिया के सभी स्थानों से लोग शिक्षित और दीक्षित होने के लिए आते थे।' जर्मन एवं फ्रांसीसी विद्वानों को छोड़िये, ब्रिटिश इतिहासकार विलयम डिगवाई ने भी १९०१ में लिखा था 'बहुत पहले नहीं मात्र आज से सौ-डेढ़ सौ साल पहले, अकेला बंगाल पूरे ब्रिटेन से ज्यादा समृद्ध था। यह ध्यान देने योग्य बात है कि ब्रिटेन में औद्योगिक क्रान्ति की शुरुआत १७५७ के पलासी युद्ध में अंग्रेजों की विजय के साथ शुरु हुई। १७६० में शुरु हुई इस औद्योगिक क्रान्ति में बंगला से लूटे गये धन का सर्वाधिक योगदान था। स्वाभाविक था कि यदि हमें भारत के लोगों को इस समृद्ध एवं वैभवशाली अतीत तथा इतिहास का बोध कराया गया होता, तो आगे चलकर वह राष्ट्रीय पुनरुत्थान एवं जागरूकता का कारण बनता, जो निश्चय ही उपनिवेशवादी अंग्रेजों के साम्राज्यवादी हितों के विरुद्ध जाता। अस्तु! भारत की परम्पराओं और उपलब्धियों पर पर्दा डालकर उसके इतिहास को विकृत करना, सनातन जीवन मूल्यों को तोड़ना, इसकी जड़ों को काटना और इस देश के मन को घायल करना आवश्यक था। यह कार्य तब तक सम्भव नहीं था जब तक इस देश के वाङ्मय, सभ्यता, संस्कृति और इतिहास को तोड़ा-मरोड़ा न जाना। ये दोनों ऐसे सूत्र हैं, जो किसी भी देश और समाज की गौरवशाली परम्परा को निरंतरता प्रदान करते हैं।

सच तो यह है कि भारत में आर्य आक्रमण जैसी कोई घटना कभी घटित ही नहीं हुई। आर्यों के बाहर से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आने और आक्रमण की ऐतिहासिक स्थापना, साम्राज्यवादी अंग्रेज इतिहासकारों की शरारत और कुछ जर्मन प्रतिक्रियावादियों के दिमाग की उपज है। अंग्रेज साम्राज्यवादियों ने भारत में अपने आक्रमण को वैध ठहराने हेतु इसका उपयोग किया। इसमें वस्तुनिष्ठता नाम की न कोई चीज थी और न है। आज तक इतिहास सम्मत एक भी ऐसा प्रमाण नहीं मिला है, जो यह साबित करता हो कि आर्य भारत में बाहर से आई एक जाति थी, जिसका द्रविड़ों के साथ युद्ध हुआ था यदि आर्यों-द्रविड़ों के बीच सचमुच कोई युद्ध हुआ होता तो उसके कहीं कुछ निशान या ध्वंशावशेष होते। भारत पर आर्यों के आक्रमण के सिद्धान्त के प्रतिपादकों का मानना है कि आर्यों ने वेदों की रचना द्रविड़ों को उत्तरी भारत मे भगाने के बाद की। किन्तु वेदों में ऐसा कुछ भी नहीं मिलता। दक्षिण भारत के साहित्य और वाङ्मय में भी इसका कोई उल्लेख नहीं है। इसके ठीक विपरीत दो हजार वर्ष पुराने संगम साहित्य में दक्षिण के चोल एवं चेरी शासक स्वयं को राम के वंशज और सूर्यवंशी मानकर गर्व का अनुभव करते थे। चोल शासक करीकला, वैदिक धर्म एवं तमिल साहित्य का भक्त था। पल्लवों ने कांची को अपनी राजधानी बनाया था जो उस समय संस्कृत अध्ययन का सबसे बड़ा केन्द्र था। संगम साहित्य परम्परा दक्षिण की सबसे पुरानी साहित्य परम्परा है। अगस्त्य ऋषि को इस साहित्य का जनक माना जाता है। यदि आर्यों एवं द्रविड़ों में कोई युद्ध हुआ होता, तो दक्षिण के साहित्य में इसकी प्रतिक्रिया में अवश्य ही कुछ न कुछ लिखा गया होता। मेरी जानकारी में ऐसा कोई भी प्राचीन अधिकृत ग्रंथ आजतक प्रकाश में नहीं आया है, जिसमें आर्यों के आक्रमण और द्रविड़ों के साथ युद्ध का प्रामाणिक आख्यान या उल्लेख हो। आर्य यदि सचमुच बाहर से आए होते, तो क्या उनकी स्मृति में वहां की कोई वस्तु नहीं थी, जिसको वे संजोकर रखते और अपने लेखन में उसका उल्लेख करते। हर समुदाय, हर जाति अपनी पुरानी यादों को संजोकर रखना चाहती है। किन्तु ऐसा कोई भी साहित्यिक अथवा अन्य प्रमाण नहीं मिलता है, जिसमें उन्हें भारत से इतर नदी, पहाड़ अथवा नगरों का वर्णन किया हो और उससे अपने पुरातन रिश्तों को जोड़ा हो।

आर्यों के आक्रमण एवं द्रविड़ों के पलायन के सिद्धान्त का प्रतिपादन, सबसे पहले विशप कॉडवेल ने किया था। उनका मानना था कि आर्यों से पहले द्रविड़ों ने, जो बलूचिस्तान के आसपास रहते थे, उत्तरी भारत पर आक्रमण करके अपना शासन स्थापित किया। किन्तु इसको सिद्ध करने के लिए उनके पास कोई भी प्रमाण नहीं था। यह बात उन्होंने सिर्फ भाषाई समानता के आधार पर कही थी, जबकि द्रविड़ भाषा जैसी कोई सुव्याख्यायित एवं स्पष्ट भाषा या चीज नहीं है। सच्चाई यह है कि अंग्रेजों और उनके गुलाम शिष्यों ने जानबूझकर भारतीय इतिहास को तोड़-मरोड़ कर पेश किया। दुर्भाग्यवश इनके मानस पुत्रों ने उसे उसी रूप में स्वीकार भी कर लिया। १९२०-२२ के पहले, जब हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की खुदाई नहीं हुई थी, यह सच प्रभावी ढंग से चलता-चलाया जाता रहा। किन्तु खुदाई के बाद जब भारतीय सभ्यता का प्रकाशमान रूप उभरने लगा तो अंग्रेजों ने हमें यह बताना शुरू कर दिया कि यह सभ्यता वैदिक सभ्यता से पहले की सभ्यता थी, यह अब तक की अपनी खुराफात और गलती को ढकने वाली बात थी। तब से आज तक पुरातत्त्वीय क्षेत्र में बहुत अधिक प्रगति हुई है। आर्य सम्बन्धी स्थापनाओं में भी कई प्रकार के बदलाव किए गए। किन्तु आज भी हमें अंग्रेजों द्वारा निर्मित वही इतिहास पढ़ाया जा रहा है, जिसका एकमात्र उद्देश्य हमें हमारी पहचान न होने देकर, आत्महीनता का बंदी बनाकर रखना है। यदि भारत के अतिरिक्त कोई और आजाद देश होता तो अपने इतिहास का पुनर्लेखन करके उसके गौरवपूर्ण और ऐश्वर्यशाली पक्ष को उजागर करता। अपने देशवासियों को उस परम्परा और इतिहास से अवगत कराता, जो किसी भी दृष्टि से न तो प्रतिक्रियावादी है, न प्रतिगामी और न अंधयुगीय।

इतिहास सिद्ध यह अनुभव ध्यान देने योग्य है कि जो देश अपनी भाषा, अपने इतिहास, अपनी परम्परा, अपनी संस्कृति और अपने शास्त्र से कटता जाता है,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उसके विघटन या उसकी समाप्ति में ज्यादा देर नहीं लगती। भारत की अति पुरातन, किन्तु सनातन संस्कृति को बौना करने का प्रयास सफल नहीं हो पा रहा है, तो इसका कारण यह नहीं कि यहां के तथाकथित विद्वान्, विदुषी, बुद्धिजीवी, इतिहासज्ञ और राजनेता इसे लेकर सतर्क और इसके प्रति प्रतिबद्ध हैं, अपितु इसलिए कि यह देश आम आदमी के मन और प्राण में बसा हुआ है। उसके व्रत, त्यौहार, रीति-रिवाज, कथा-कीर्तन पूजा-अनुष्ठान किसी न किसी रूप में भारतीय संस्कृति की अहसास-ज्योति उसके मन में जलाये हुए हैं। नहीं तो भारत और भारतीय संस्कृति का अब तक नामशेष हो गया होता। भारत का 'निरक्षर शिक्षित', साक्षर अशिक्षितों की तुलना में अधिक जानकार, संवेदनशील, प्रतिबद्ध और प्रासंगिक है। वह देश की माटी भावदृष्टि से जिस गहरे अहसास के साथ जुड़ा हुआ है, उसके कारण भारत का राष्ट्र-सत्य एक न एक दिन अपनी सम्पूर्ण छटा, प्रतिभा और प्रमाण के साथ अवश्य प्रतिष्ठित होगा। किन्तु इस अन्तराल में पश्चिमी षड्यंत्र का शिकार होकर हम अपने आप को इतना विभक्त एवं इतना अधिक चोटिल कर चुके होंगे कि जिसे भरने में कई दशक लग सकते हैं।

किसी संस्कृत-ग्रंथ वा इतिहास में नहीं लिखा कि आर्य लोग ईरान से आये और यहां के जंगलियों से लड़कर जय पा के, निकाल के इस देश के राजा हुए, पुनः विदेशियों का लेख कैसे माननीय हो सकता है?

अन्य देशवासी राजा हमारे देश में न हों तथा हम लोग पराधीन कभी न रहें।

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य समाज और उसकी आवश्यकता

❑ वैद्य महेन्द्रपाल सिंह आर्य

आर्य समाज एक संस्था है, आन्दोलन है न कि कोई सम्प्रदाय अथवा धर्म। आर्य समाज का प्रमुख कार्य है विश्व के सारे मानवों को "आर्य" बनाकर, विश्व में सदाचार, नैतिकता, वेदविहित ज्ञान को संसार में प्रकाशित करना और संसार का उपकार करना, सत्य विद्या और सत्य का प्रचार-प्रसार करना, अविद्या को समाप्त करना और शिक्षा का विस्तार करना, राष्ट्रनिर्माण की भावना को समुन्नत करना, केवल अपने तक ही नहीं अपितु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझना। मैं यहां तक कह सकता हूं कि यदि आर्य समाज के १० नियमों को आरम्भ से ही भारत सरकार अपनाती तो विधान बनाने की आवश्यकता नहीं रहती और सारे भारतवर्ष में एक ही कानून लागू होता। आर्य समाज तो सदैव वेद की मान्यताओं को स्वीकार करता है और अपनी प्रार्थना सदैव बहुवचन में करता है **'सर्वे भवन्तु सुखिनः' सर्वे सन्तु निरामयाः'** फिर यह आवश्यक हो जाता है कि हम सभी वैसा ही आचरण भी करें परन्तु सिद्धान्त को मान लेना, व्यवहार में न लाना यही हमारी अधोगति का कारण बना।

आर्य समाज का संगठन इतना विशाल संगठन है जो अब केवल भारतवर्ष ही नहीं अपितु विश्व के कोने-कोने में इसकी लगभग ५००० शाखाएं-प्रशाखाएं पल्लवित पुष्पित हो रही हैं। और फिर ऐसा क्यों न हो जब कि उसके एक-एक मन्तव्य में विश्व के कल्याण की भावना उद्वेलित हो रही है।

किसी भी संस्था को देखने से पहले उसके संस्थापक को भी देखना हमारा उद्देश्य बन जाता है। मूलशंकर से बने महर्षि दयानन्द को समझने के लिए तो हमें उनकी जीवनी पढ़नी होगी तभी हम समझ पाएंगे कि वह महान् संत, दिव्य द्रष्टा क्या था? कितनी तपश्चर्या के बाद अपनी विचारधारा को "सत्यार्थ प्रकाश", "ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका", "संस्कारविधि" अपने मूल ग्रंथों में लिखा। यही नहीं, समस्त मानव मात्र को एक सूत्र में पिरोने हेतु वैदिक विचारधारा का मंथन कर सबको एक साथ चलो, एक साथ बोलो, सभी के साथ एक सा विचार रखो, वेद किसी एक के नहीं, मनुष्यमात्र की कल्याणी वाणी है **"यथेमां वाचं कल्याणीमवदानि जनेभ्यः"** की बात को उठाकर संसार को संगठन सूत्र दिया और आर्य समाज जैसी संस्था की सर्वप्रथम बम्बई में अप्रैल, १८७५ में स्थापना की। अपना उत्तराधिकारी आर्य समाज को ही बनाया। कोई गुरु परम्परा नहीं डाली। आज यद्यपि लोग विभिन्न सम्प्रदायों से, जातियों में, धर्म के नाम पर बंटे हुए हैं परन्तु किसी में साहस नहीं जो आर्य समाज के मन्तव्यों के सम्मुख ठहर सके। आज भारत सरकार के संविधान में यदि यथार्थ दृष्टि से देखा जाए तो कहना होगा, यह सब कुछ तो आर्य समाज से ही उद्धृत है। चाहे भाषाविदों की दृष्टि से शब्दों में कुछ हेरफेर हो। आज भी यदि लोग अपने अहम को हटा दें तो पाएंगे, सरसता का पुट जिसमें होगा, वैदिक नाद **"मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।"** महर्षि दयानन्द ने यजुर्वेद भाष्य में इस मन्त्र का अर्थ इस प्रकार से किया है :-

"हे अविद्या रूपी अन्धकार के निवारक जगदीश्वर! जिससे सब प्राणी मित्र की दृष्टि से मुझको अच्छी प्रकार से देखें, मैं भी मित्र की दृष्टि से सब प्राणियों को देखूं। इस प्रकार हमलोग परस्पर मित्र की दृष्टि से देखें। इस विषय को हम में दृढ़ कीजिए।"

वेद ने इस मन्त्र में मैत्री भावना का सन्देश दिया है, वेद की कामना है, शुभ इच्छा है कि विश्व के सब मनुष्यों में सद्भावना, मैत्री भावना, विश्व बन्धुत्व की भावना फैले, मनुष्य मात्र में स्नेह सम्बन्ध कैसे सुदृढ़ हों, हमें इस पर विचार करना है। मनुष्य को मनुष्य से पृथक् करने, परस्पर लड़ाने वाले, ईर्ष्या-द्वेष और घृणा फैलाने वाले कारण हैं। महाद्वीप, देश, प्रान्त, सम्प्रदायगत भेद, रंग, व्यवसाय, भूमि, सम्पत्ति, धन और पदवी। इसका बस एक ही उपाय है—वेद इसका समाधन करता है। वेद ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करने का आदेश देता है और फिर सर्वव्यापकत्व पर बल देता है और बाद में पितृत्व

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और मातृत्व को स्वीकार किया है। ईश्वर के पितृत्व और भूमि के मातृत्व को स्वीकार करके वेद ने मनुष्यों को एक ही परिवार के सदस्य मानकर उनको घृणा और वैमनस्य से पृथक् रहकर मानसिक एकता का उपदेश किया है। वेदों में विश्व शान्ति का उपदेश है। आर्य समाज को वेद का सन्देश, बलशाली बनकर, घर-घर पहुंचाना होगा। आर्य समाज के नियमों को सही रूप से उद्धृत कर समस्त मानवों को समझाना होगा। मिथ्यावाद, दुराग्रह से हटकर सत्य को ही मानना और मनवाना होगा। हमें सम्प्रदायवाद से हटकर धर्म के वास्तविक अर्थ, विचार को जन-जन तक पहुंचाना होगा। सच्चे आर्य बनकर, सम्पूर्ण विश्व को आर्य बनाने का उद्घोष **"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"** हम दे सकेंगे। जब हम आर्य समाज के १० नियमों का सही अर्थ में स्वयं पालन करेंगे और दूसरों को बता सकेंगे। वेद वैदिक धर्म ही आर्य समाज का यथार्थ है जिसमें संसार का उपकार करने का लक्ष्य निहित है।

आर्य समाज रूपी संस्था महर्षि दयानन्द की वैचारिक क्रान्ति ही है जिसका संक्षेप में अवलोकन करें :-

(१) **वैदिक धर्म**—सच्चे धर्म का स्वरूप है। ऐसा जीवनदर्शन जो शाश्वत सत्यों के आधार पर प्रगति का मार्ग खोलता है।

(१) ईश्वर जीव प्रकृति अनादि है अर्थात् त्रैतवाद का मण्डन।

(२) एक ईश्वर पूजा-ईश्वर कोई व्यक्ति नहीं, निराकार, सर्वशक्तिमान शक्ति है। ईश्वर और मनुष्य के बीच किसी पैगम्बर या मसीहा की आवश्यकता नहीं।

(३) वेद स्वत: प्रमाण हैं। आर्ष ग्रंथों का प्रचार-प्रसार करना।

(४) भाग्य केवल ईश्वरेच्छा नहीं, पुरुषार्थ और कर्म की स्वतंत्रता है।

(५) सब प्रकार की समानता तथा व्यक्तिगत और सामाजिक लाभ एक दूसरे से पूरक हैं।

(२) **सामाजिक क्रान्ति**—जन्मगत, जातिपाति, छुआछूत, बाल विवाह, पर्दा, दहेज प्रथा, मद्य-मांस तथा अन्य मादक पदार्थों का त्याग, अन्तर्जातीय विवाह, विधवा विवाह, स्त्री शिक्षा, विदेश भाषा, बन्धन आदि कुरीतियों को तोड़ना, शिक्षा का प्रचार-प्रसार करना।

(३) **राजनैतिक क्रान्ति**—भारत में राजनैनिक चेतना और राष्ट्रीयता की भावना उत्पन्न करने में सामाजिक, धार्मिक आन्दोलनों में प्रमुख योगदान आर्य समाज ने ही दिया। सन् १८७५ में कांग्रेस के जन्म से १० वर्ष पहले स्वराज्य का पहला उद्घोष स्वामी दयानन्द ने ही अपने अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में किया। विदेशी राज्य चाहे माता-पिता के समान ही पालन-पोषण क्यों न करे परन्तु स्वदेशी राज्य सबसे बढ़कर होता है। स्वदेशी वस्तुओं का स्वयं व्यवहार किया और स्वदेशी आन्दोलन को जन्म दिया। स्वाधीनता आन्दोलन में स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपत राय, भाई परमानन्द, राम प्रसाद बिस्मिल, श्याम जी कृष्ण वर्मा, भगत सिंह, आजाद जैसे जुझारू नेता आर्य समाज ने ही दिये। आर्य समाज ने ही स्वतंत्रता आन्दोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया। यदि यह कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी कि कांग्रेस में ७० प्रतिशत से भी अधिक लोग आर्य समाज के ही थे। १९३९ का हैदराबाद सत्याग्रह इसका प्रमाण है। महर्षि दयानन्द ने ही १८५७ में गुप्त रहकर देश के राजा-महाराजाओं को देश स्वतंत्रत कराने की प्रेरणा दी और १८७५ में आर्य समाज की स्थापना कर स्वभाषा (हिन्दी) स्वदेश स्वसंस्कृति, स्वखान-पान का मूलमन्त्र दिया जिसके द्वारा राष्ट्र प्रेम देश आगे चलकर वर्ष १९४७ में स्वतंत्र हुआ था। आज भी यदि हम उन्हीं मूल मन्त्रों पर चलें तो राष्ट्र को समुन्नत कर विश्व में अपना आदर्श स्थापित कर सकते हैं।

आओ हम सभी अपने अहम-ईर्ष्या-द्वेष को छोड़ दें। संसार के सभी मानवों को मित्र मानें और एक-दूसरे के सुख-दुःख में सम्मिलित हों। इस प्रकार से हम वैर-विरोध को छोड़कर अधिक से अधिक मित्र बना सकेंगे और जब मित्रवत भावना अपने आप में आ जाएगी तो हम कभी भी किसी की हानि की बात नहीं सोचेंगे और फिर उसी वैदिक भावना का प्रचार-प्रसार हम कर सकेंगे जो हमारे संगठन सूक्त में अभिप्रमाणित है **"संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनासि जानताम्"** फिर सारा संसार ही इस ओर बंधा चला आएगा और महर्षि दयानन्द तथा महात्मा गांधी तथा अन्य ऋषियों-महर्षियों की भावना **"वसुधैव कुटुम्बकम्"** और **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम'** के नाद को गुंजा सकेंगे और कह सकेंगे "वैदिक धर्म की जय", "भारत माता की जय", महर्षि दयानन्द की जय।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Swami Dayanand Saraswati (12.2.1825—30.10.1883)

The great Indian Reformer and the founder of Arya Samaj was born in A. D. 1825 in the village Tankara of the Morvi State in Kathiawar in Gujarat in a Brahmin family.

On the day of Shivaratri, at an age of fourteen, it dawned on him to go for search of true Shiva since conventional orthodox ideas failed to convince him. It was a turning point in the life of Swamiji and so it is observed as Rishi-Bodh Utsav.

Deaths of sister and uncle made him realise the helplessness of man before death. Like Buddha, he also left his home to discover truth. His parents tried to arrange his marriage, but his firm resolve could'nt be overcome. He left home to make all India his abode. He forsook his kindred to succour humanity and the cause of truth.

From 1845 to 1860, he wandered almost of all over Indian and visited famous centres of learning. He travelled through the holiest of Indian rivers, the Ganga, the Yamuna and the Narmada and climbed the highest accessible peaks of the hills, which are sources of these rivers. He loved nature and drank deeply from her inexhaustible sources. During this period, he met number of Sadhus and Pandits, some good, some bad, some noble, some ignoble. Some attracted him, others repelled him. Born rebel as he was, he could not accept as his models the blind followers of authority or slaves of tradition.

On 14th November, 1860 he arrived at Mathura and discovered his Guru Virjananda. He served the blind monk for 2½ years and showed him the highest respect and love and learnt all that his Guru had to teach. After completion of the education, the Guru demanded of Dayanand the customary fee (Gurudakshna) A pledge to devote his life to disseminating truth, to waging unremitting warfare against the falsehood of the prevailing Hindu faith, and to establish the right method of education, as was in vogue in pre-Buddhist times. Dayanand gave this pledge willingly, and with a solemn joy and never was a pledge adhered to more loyally and faithfully!

In his wanderings all over the country, he came across immense opposition and received brickbats from the persons immersed in old rituals and traditions. He moved undaunted and preached on the strength of the Vedic knowledge to enlighten the masses.

There were several attempts to take his life and in one such attempt, at Anupshekar, a Brahmin presented him a betel-leaf containing poison. Swamiji neutrulized its effect by Yogic Kriyas but asked the Tehsildar to set the man free. He decleared "I have come to liberate the humanity from bondage and not to imprison them." The last merciful act of Swamiji was to forgive his own killer Jagannath. Truly he played the role of a great liberator.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

From 1877 to October, 1883 his time was spent in preaching, teaching and writing books including Ved Bhashya. In his life time thousands of Arya Samajs were set up in Bombay, Punjab, Uttar Pradesh, Rajasthan, Bihar and other places. The entire society underwent revolution in thoughts and ideology and a new awakening stirred the nation.

On 30th October, 1883 he achieved Nirvan. The very scene of his departure for heavenly abode, converted a staunch agnostic, Guru Datta.

Swamiji's entire life had been given to the spreading of truth at all cost and it is the most pressing need of the present times, when the falsehood seems to have invaded every walk of our life. Satyarth Prakash is a unique gift of Swamiji as it has expounded the truthful knowledge in accordance with the Vedic thought. His work and teachings inspire us to work for upliftment of the down-trodden, the Dalits, the widows, the women emancipation by their education, social reforms and casting off the dogmas and wrong beliefs. Swamiji was the first person to use the term 'Swaraj' and he expressed in Satyarth Prakash "Self-rule is the best form of governance...." Anne Besant remarked "Dayanand was first to proclaim India for Indians."

The greatest contribution of Swamiji was the revival of Vedas and awakening of the Hindu society. He interpreted the Vedas in an examplary manner by passing all his predecessors and the comments of Sri Aurobindo in this regard are noteworthy :

"In the matter of Vedic interpretation I am convinced that whatever may be the final Complete interpretation, Dayananda will be honoured as the first discoveror of the right clues. Amidst the chaos and obscurity of old ignorance and age long misunderstanding was the eye of direct vision that pierced to the truth and fastened on that which was essential. He has found the keys of the doors that time had closed and rent asunder the seals of the imprisoned fountains."

He revived the message of ancient rishis and now it is for us to pursue Vedic studies by encouraging the study of Sanskrit and Hindi languages. Our rich and glorious past holds key to our bright future. It may be pertinent to quote Madame Blaivatsky of Theosophy Sect. "It is perfectly certain that India never saw a more learned Sanskrit scholar, a deep metaphysician, a more powerful orator and a more fearless denunciator of any evil, than Dayanand, since the time of Shankaracharya."

At this juncture it is the duty of every Indian, particularly of every Arya Samajist to ponder over the path shown by Swamiji and inclulcate Vedic values in our life to achieve the goal of life and also to bring happiness and joy to the humanity.

In appreciation of Swamiji's peerless scholarship and his unimaginable dynamic knowledge of Vedic Lore, endowed with mystic insight, this short write up may be concluded with the following Sanskrit verse :

"दयानन्दसरस्वत्याः पारं वेति सरस्वती।
सरस्वत्याः परं पारं दयानन्द सरस्वती॥".

प्रस्तुति : श्री बी. डी॰ उक्खल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य समाज पंखारोड सी ब्लाक जनकपुरी, नई दिल्ली-११००५८

के पदाधिकारी एवं अन्तरंग सदस्य

क्र० सं०	नाम	पता	दूरभाष
प्रतिष्ठित सदस्य			
१.	डॉ० शिवकुमार शास्त्री	जे-१८९, विकासपुरी	५५९६२०७ ५५०८२०९
२.	डॉ० व्यासदेव मेहता	सी-४ सी/१३८, जनकपुरी	५५५१७३६
३.	श्री सत्यपाल आर्य	सी-३ए/१३ए, जनकपुरी	५५५६०७१
४.	वैद्य महेन्द्रपाल सिंह आर्य	सी-२सी/१२/११३, जनकपुरी	५५१५९९४
५.	श्री विद्यासागर मदान	सी-२/१७८, जनकपुरी	५५४३०२१
६.	श्री नरेशचन्द्र पुरी (संस्कृत प्रभारी)	सी-३ए/७९सी, जनकपुरी	५५९३७४८
७.	श्री प्रतापसिंह गुप्त	सी-५ए/२०९, जनकपुरी	५५०१०८२
८.	श्री राजतिक नैय्यर	बी-१/३७, जनकपुरी	५५०१०१० ५५०२०२०
९.	श्रीमती राज चौधरी	सी-२/२०८, जनकपुरी	५५५३५२३
१०.	श्रीमती विमला मेहरा	सी-२सी/२/२३५ए, जनकपुरी	५५०७०१९
११.	श्रीमती विमला चोपड़ा	सी-४सी/२/१३१, जनकपुरी	५५५२७३५
१२.	श्रीमती रामकली खुराना	सी-२सी/२/५४, जनकपुरी	५६१२०७९
१३.	डॉ० भारतभूषण पुरंग	सी-२ए/९०, जनकपुरी	५५२२७४२
१४.	श्री ज्ञानचन्द्र ओचानी	सी-२बी/२२ए, जनकपुरी	५५५१७७०
१५.	श्रीमती कौशल्या साहनी	सी-३/२७२, जनकपुरी	५५०१२२४
१६.	श्रीमती शशि ओबराय	सी४एफ/२३६, जनकपुरी	५५५९९५२
१	प्रधान-श्री शिवकुमार मदान	सी-२/१७२, जनकपुरी	५५५१८५२
२.	मन्त्री-श्री सत्यप्रकाश आर्य	सी-३ए/१३ए, जनकपुरी	५५५६०७१
३.	कोषाध्यक्ष-श्री परमानन्द मित्तल	सी-३ए/७९ए, जनकपुरी	५५२१३४३

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उपप्रधान

१.	श्री सोमदत्त महाजन	सी-२/२८८, जनकपुरी	५५५१५८७
२.	श्री वेदप्रकाश ओबराय	सी-४एफ/२३६, जनकपुरी	५५५२९९५
३.	श्री कृष्णकान्त बत्रा	सी-३/४११, जनकपुरी	५५२२१७१
४.	श्रीमती कुसुम रस्तोगी	सी-३ए/२७बी, जनकपुरी	५५०३३३०

उपमन्त्री

१.	श्री ब्रह्मदत्त उक्खल	सी-२ए/५८, जनकपुरी	५५२५१२८
२.	श्री जयपाल गर्ग	सी-४एच/१६५सी, जनकपुरी	५५३४७६४
३.	श्री सन्तकुमार तोमर	एफ-४, डाबड़ी एक्स०	५६१६७७४
४.	श्री चमनलाल महाजन	सी-४सी/३५४, जनकपुरी	५५०६५०४
५.	श्री घनश्याम शर्मा	डी-६७ए, दशरथपुरी	
६.	श्रीमती निधि आर्या	सी-३ए/१३ए, जनकपुरी	५५५६०७१
७.	श्रीमती उषा देवी	सी-५ए/२१६, जनकपुरी	५५२१८१४
८.	श्रीमती पुष्पा अरोड़ा	सी-२सी/२/५० जनकपुरी	५५१०३३५

पुस्तकालयाध्यक्ष

१.	श्री हरकिशन लाल गुलाटी	सी-४ए/३१सी, जनकपुरी	५५११६९६

सम्पदा अधिकारी

१.	श्री रमेशचन्द्र	बी-६२, जीवन पार्क, जनकपुरी	५५२७४८०

अन्तरंग सभासद

१.	श्री रामकृष्ण सतीजा	सी-३/१८८, जनकपुरी	५५५२७८८
२.	श्री विद्याविनोद पुष्प	सी-१ए/६४ए, जनकपुरी	५५२४५१०
३.	श्रीमती विमला भाटिया	सी-३/२७२, जनकपुरी	५५५१४५०
४.	श्रीमती कृष्णा आहूजा	सी-२सी/२/१२७, जनकपुरी	५५२०१५५
५.	श्री अजीत कुमार	सी-२डी/६७बी, जनकपुरी	५५१२७९५
६.	श्री प्यारेलाल भाटिया	सी-३/३००ए, जनकपुरी	५५९९८६६
७.	श्री कृष्णलाल सब्भरवाल	सी-३ए/५३बी, जनकपुरी	५५४५३३८
८.	श्रीमती विमला कथूरिया	सी-४ए/२७सी, जनकपुरी	५५४२५९३
९.	श्री महेन्द्रपताप साहनी	सी-४एफ/२३९, जनकपुरी	५५०५५३६
१०.	श्रीमती संतोष डंग	सी-५ए/१५, जनकपुरी	५५५४२५७
११.	श्री प्यारेलाल भंडारी	सी-५बी/१००बी, जनकपुरी	५५३२०९२
१२.	श्री दिनेशकान्त शर्मा	सी-२बी/७४ए, जनकपुरी	

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१३.	श्रीमती शारदा देवी	सी-४डी/८१ए, जनकपुरी	५५२७३८५
१४.	श्री हरिराम	१४ बी तमिल कालोनी, विजय एन्क्लेव	
१५.	श्री रामखिलाड़ी	७४बी/२७१, हंस पार्क, सागरपुर	५५१०५९५
१६.	श्रीमती ऊषा बंसल	सी-६२, सीतापुरी, फेज-१	५५५६४७६
१७.	श्री अनिल तनेजा	१/१०६, सुभाष नगर, नई दिल्ली	५१२५८२६
१८.	श्रीमती शकुन्तला गुलाटी	सी५डी/१०३ए, जनकपुरी	५५२६५४२
१९.	श्री चन्द्रभान मल्होत्रा	सी४ई/३१, जनकपुरी	५५०४५१९
२०.	श्री तिलकराज वर्मा	सी-४ई/३२, जनकपुरी	५५११४८९
२१.	श्री एल० डी० सचदेवा	सी-३/३०५बी (एस.एफ.एस.) जनकपुरी	५५११६१०
२२.	श्री जे० सी० भाटिया	उत्तम नगर	
२३.	श्री नवनीत	सी-४६/४२बी, जनकपुरी	५५४३१३१

विशेष आमंत्रित

१.	श्री संजय वसिष्ठ	सी-४डी/८बी, जनकपुरी	५५००९०५
२.	श्री जे० सी० चौधरी	सी-२/२०८, जनकपुरी	५५५२७३५
३.	श्री सतीश मेहरा	सी-२सी/२२३५ए, जनकपुरी	५५०७०१९
४.	श्री जवाहर अरोड़ा	सी-२सी/२/५०, जनकपुरी	५५१०३३५
५.	श्री जे० एन० सब्भरवाल	सी-२डी/४४ए, जनकपुरी	५५३५१०७
६.	श्री एम० पी० आहूजा	सी-२सी/२१२७, जनकपुरी	५५२०१५५
७.	श्री विजयकुमार गुलाटी	सी-२ए/११२, जनकपुरी	५५०२२७८
८.	श्री राजगोपाल आर्य	सी२/३२, जनकपुरी	५५९९६३५

लेखा निरीक्षक

श्री ओमप्रकाश गुलाटी — सी-५डी/१०३ए, जनकपुरी — ५५२६५४८

धर्माचार्य

डॉ० प्रणव शास्त्री एम. ए., पी.एच.डी

सहयोगी

श्री रामसुमेर यादव

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य समाज पंखारोड सी ब्लाक जनकपुरी के अद्यतन

	प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष
१.	श्री हरगोविन्द कपूर	श्री महेन्द्रपाल सिंह आर्य	श्री जगदीश मित्र
२.	श्री व्यासदेव मेहता	श्री रामकृष्ण सतीजा	श्री गुरमुखराय दुग्गल
३.	श्री रामप्रकाश धाम	श्री केशवदेव सूद	श्री लालचन्द आर्य
४.	श्री रामकृष्ण सतीजा	श्री सत्यप्रकाश आर्य	श्री नरेशचन्द्र पुरी
५.	श्री गुरमुखराय दुग्गल	श्री नरेशचन्द्र पुरी	श्री हरिकृष्णलाल गुलाटी
६.	श्री विद्यासागर मदान	श्री रमेशचन्द्र जी	श्री जमनलाल नासा
७.	श्री नरेशचन्द्र पुरी		श्री धर्मवीर सल्होत्रा
८.	डॉ० शिवकुमार शास्त्री		श्री परमानन्द मित्तल
९.	श्री प्रतापसिंह गुप्त		
१०.	श्री राजतिलक नैयर		
११.	श्री शिवकुमार मदान		

स्त्री आर्य समाज

१.	श्रीमती सत्यावती कपूर	श्रीमती लीलावती शर्मा	श्रीमती निर्मल भाटिया
२.	श्रीमती विमला चोपड़ा .	श्रीमती सुदर्शन साहनी	श्रीमती लीलावती भाटिया
३.	श्रीमती रामकली खुराना	श्रीमती पुष्पा अरोड़ा	श्रीमती शशिकान्ता ओबराय
४.	श्रीमती विमला मेहरा	श्रीमती निधि आर्य	श्रीमती कैलाश गुप्त
५.	श्रीमती राज चौधरी	श्रीमती शशिकान्ता ओबेराय	श्रीमती शकुन्तला गुलाटी
६.	श्रीमती सुदर्शन साहनी	श्रीमती विमल भाटिया	श्रीमती रामप्यारी भण्डारी
७.	श्रीमती शशिकान्ता ओबेराय		
८.	श्रीमती कुसुम रस्तोगी		

इस आर्य समाज की प्रमुख गतिविधियां

दैनिक सत्संग	प्रातः ६.१५ से ७ बजे तक	आचार्य प्रणव शास्त्री
रविवारीय सत्संग	प्रातः ७.३० से ९.३० तक	विभिन्न वैदिक विद्वान्
महिला समाज सत्संग	सायं ३.०० से ५.०० तक	विभिन्न विदुषियों द्वारा
आयुर्वेदिक औषधालय	प्रातः ८ से १०बजे	डॉ० ओमप्रकाश भाटिया
होम्योपैथिक औषधालय	सायं ४ से ६ बजे	डॉ० यश माथुर
वैवाहिक सेवा केन्द्र	प्रति रविवार सत्संग के उपरान्त १० से १२ बजे	श्री.प्यारे लाल भाटिया
वैदिक पुस्तकालय	सायं ५.३० से ७.३० बजे	श्री हरिकृष्णलाल गुलाटी
संस्कृत कक्षाएं	प्रति शनिवार सायं ५ बजे	डॉ० भारतभूषण पुरंग
वैदिक संस्कार		आचार्य प्रणव शास्त्री
योग काक्षाएं	प्रति शनिवार सायं ५ बजे	स्वामी सत्यपति जी महाराज

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यसमाज पंखारोड 'सी' ब्लाक जनकपुरी के सदस्यों की सूची

सी-1 जनकपुरी

क्र. सं.	नाम	पता
1.	श्री हेमराज	21
2.	श्रीमती जी. पी. नन्दा	55
3.	श्री सुभाष चन्द्र खुराना	110
4.	श्रीमती कुसुम पाल	142
5.	श्रीमती कान्ता भारद्वाज	160
6.	श्री वी. आर. मल्होत्रा	186
7.	श्रीमती उषा मल्होत्रा	186

सी-1 ए जनकपुरी

8.	श्री के. वी. मल्होत्रा	25सी
9.	श्री अशोक सूद	29 ए
10.	श्री सन्तोष खेड़ा	31 ए
11.	श्री जयन्ती कुमार मलिक	51 सी
12.	श्री कैलाश चन्द्र चोपड़ा	56 सी
13.	श्री कस्तूरी लाल भट्ट	57 सी
14.	श्री विद्या विनोद पुष्प	64 ए
15.	श्री के. पी. हाण्डा	92 सी
16.	श्री सुरेश गोयल	दुकान नं० 4
17.	श्री यशपाल	दुकान नं० 5
18.	श्रीमती कान्ता सेठी	91 सी

सी-2 जनकपुरी

19.	श्री वासुदेव गुप्ता	32
20.	श्रीमती कान्ता गुप्ता	32
21.	श्रीमती पुष्पा त्रेहन	44
22.	श्री श्याम सुन्दर त्रेहन	44
23.	श्री राजेश त्रेहन	44
24.	श्रीमती सन्तोष रानी गुलाटी	49
25.	श्री जे. सी. कुमार	50
26.	श्री आर. डी. छोकरा	144
27.	श्री हरीश मल्होत्रा	161
28.	श्री एन. एन. गोपाल	167
29.	श्रीमती लीला गोपाल	167
30.	श्री शिव कुमार मदान	172
31.	श्रीमती प्रेम मदान	172
32.	श्री जगत कुमार दत्ता	176
33.	श्री विद्या सागर मदान	178
34.	श्रीमती ऊषा साहनी	182
35.	श्री देवराज भाटिया	187
36.	श्री एस. के. महाजन	199
37.	श्री आर. सी. आर्य	201
38.	श्री ज़गदीश चन्द्र चौधरी	208
39.	श्रीमती राज चौधरी	208
40.	श्री के. के. चौधरी	208
41.	श्रीमती रंजना चौधरी	208
42.	श्री एन. के. चौधरी	208
43.	श्रीमती भावना चौधरी	208
44.	श्री हरिमिन्द्र वर्मा	208
45.	श्रीमती अनीता वर्मा	208
46.	श्रीमती राज वर्मा	229
47.	श्री कर्ण पुरी	236
48.	श्री सोमदत्त महाजन	288
49.	श्री हरिनारायण कपूर	302
50.	श्री पी. सी. धीर	333
51.	श्री बी. वी. एस. माथुर	336
52.	श्री रतन सिंह	341
53.	श्री जे. एम. कपूर	370
54.	श्रीमती निर्मल कपूर	370
55.	श्री तिलक राज गुप्ता	378
56.	श्रीमती प्रेम गुप्ता	378
57.	श्री सोमनाथ कत्याल	383
58.	श्री राजीव बत्रा	393
59.	श्री जे. सी. गिरधर	398
60.	श्रीमती प्रकाश देवी	196

सी-2 ए जनकपुरी

61.	श्रीमती चंचल शर्मा	38

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

62.	श्री बी. डी. उक्खल	58
63.	श्री सी. डी. उक्खल	58
64.	श्री अविनाश आनन्द	60
65.	श्री भारत भूषण पुरंग	90
66.	श्रीमती प्रेमलता	90
67.	श्री वी. के. गुलाटी	112
68.	श्री बी. डी. शर्मा	169
69.	श्रीमती ब्रजेश शर्मा	169
70.	श्रीमती कृष्णा अरोड़ा	174
71.	श्रीमती निर्मल बहल	214
72.	श्री ओ. पी. गुप्ता	221
73.	श्रीमती सुशीला गुप्ता	221
74.	श्रीमती शकुन्तला त्यागी	224
75.	श्री राज गोपाल आर्य	दुकान 1
76.	श्रीमती सुशीला आर्य	दुकान 1
77.	श्रीमती उर्मिला बगाई	138

सी-2 बी जनकपुरी

78.	श्री ज्ञानचन्द ओचानी	22 ए
79.	श्री एम. के. चावला	27 ए
80.	श्री कृष्णचन्द्र टंडन	42 ए
81.	श्री एस. के. बधवा	49 बी
82	श्री चेतन दास	57 बी
83.	श्री प्यारे लाल कोहली	64 बी
84.	श्री ओ. पी. वर्मा	70 बी
85.	श्री दिनेश कान्त शर्मा	74 ए
86.	डॉ. एस. एन. गुलाटी	78 बी
87.	श्रीमती शारदा वर्मा	90 बी
88.	श्री अभिमन्यु वर्मा	90 बी
89.	श्री एच. एल. आनन्द	92 बी
90.	श्रीमती उमा मोंगा	92 सी
91.	श्री सुशील आर्य	101 ए
92.	श्री एस. बाखला नरूला	5 बी

सी-2 सी पाकेट-2 जनकपुरी

93.	श्री लक्ष्मण दास हसीजा	4
94.	श्री जे. के. गुप्ता	18
95.	श्री जगदीश प्रसाद खण्डेलवाल	38
96.	श्रीमती गीता देवी खण्डेलवाल	38
97.	श्री आर. एस. तोमर	20
98.	श्री ए. एन. कपूर	22
99.	श्रीमती पुष्पा अरोड़ा	50
100.	श्रीमती सोनिया अरोड़ा	56
101.	श्री जवाहर लाल अरोड़ा	56
102.	श्रीमती रामकली खुराना	54
103.	श्री विनोद खुराना	54
104	श्री एच. पी. सक्सेना	67
105.	श्री एस. के. चतुर्वेदी	76
106.	श्री राजीव चतुर्वेदी	76
107.	श्री एस. जी. ओवराय	100
108.	श्रीमती कमला भण्डारी	104
109.	श्री एस. पी. आहूजा	127
110.	श्रीमती कृष्णा आहूजा	127
111.	श्रीमती चांद अरोड़ा	129
112.	श्रीमती विमला चोपड़ा	131
113.	श्रीमती सविता कुमार	132
114.	श्री अरुण सूद	133
115.	श्री अनिल कुमार वर्मा	140
116.	श्रीमती रतना वर्मा	140
117.	श्रीमती राज पुरी	152
118.	श्री एस. पी. मेहता	168
119.	श्री पी. सी. मेहरा	235 ए
120.	श्री सतीश मेहरा	235 ए
121.	श्रीमती विमला मेहरा	235 ए
122.	श्री अनीता मेहरा	235 ए
123.	निर्मला विशिष्ट	207
124.	श्री अनिल मेहरा	235 ए
125.	श्री संतोष मेहरा	235 ए

सी-2 सी पाकेट-12 जनकपुरी

126.	श्री राजीव	65
127.	श्रीमती अनुराधा मित्रा	83
128.	श्री पदम मित्र	83
129.	श्री तरुण मित्रा	83
130.	श्रीमती रामदुलारी शर्मा	85
131.	श्री सुरजीत सिंह चौधरी	87
132.	श्रीमती कृष्णा चौधरी	87
133.	डॉ. भरत कुमार सचदेव	106
134.	श्री वैद्य महेन्द्र पाल सिंह आर्य	113
135.	श्रीमती विमला आर्य	113

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

136. श्री प्यारा सिंह कम्बोज
137. श्री अमृत सुधीर 114

सी-2 डी जनकपुरी

138. श्रीमती शकुन्तला देवी 2 ए
139. डॉ. ओ. पी. भाटिया 2 सी
140. श्री सत्यदेव खरबन्दा 5 सी
141. श्रीमती मनोहर देवी 5 सी
142. श्री माहिल 5 सी
143. श्री कुन्दन लाल 12 सी
144. श्रीमती ऊषा देवी 15 सी
145. श्री एस. बी. माथुर 23 सी
146. श्री गिरधारी लाल मल्होत्रा 21 सी
147. श्रीमती सन्तोष शर्मा 27 सी
148. श्री डी. डी. मेहता 48 सी
149. श्री जे. एन. सब्भरवाल 44 ए
150. श्रीमती पुष्पा सब्भरवाल 44 ए
151. श्री सुरेश सूरी 49 ए
152. श्रीमती किरन सूरी 49 ए
153. श्री दिनेश सूरी 49 ए
154. श्रीमती मोहिनी सूरी 49 ए
155. श्री नरेन्द्रनाथ तुली 53 सी
156. श्री सी. पी. चोपड़ा 58 सी
157. श्री एस. पी. एस. भाटिया 59 बी
158. श्रीमती सावित्री बंसल 61बी
159. श्री अजीत कुमार 67 बी

सी-3 जनकपुरी

160. श्री एल. एन. मेहता 3
161. श्री एन. सी. नाकरा 5
162. श्रीमती दयावती बत्रा 29
163. श्री कंवर लाल गेरा 33
164. श्री प्रेम कुमार गर्ग 50
165. श्री नन्दलाल आहूजा 53
166. डॉ. प्रवीण कुमार वर्मा 57
167. श्री सत्यपाल 61
168. श्रीमती नीरा जेटली 74
169. श्रीमती कमलेश कालरा 80
170. श्री राममूर्ति गुप्ता 81
171. श्री एम. आर. अरोड़ा 82
172. श्री धर्मवीर सल्होत्रा 86
173. श्री रामलाल खत्री 88
174. श्री सत्यपाल थरेजा 155
175. श्री मदन मोहन खन्ना 166
176. श्री वासुदेव तनेजा 178
177. श्री बी. एल. आनन्द 177
178. श्री आर. के. सतीजा 188
179. श्रीमती कविता चोपड़ा 63
180. श्री के. एल. शर्मा 66
181. श्री सुशील मरवाह 67
182. श्रीमती अमृत सतीजा 188
183. श्री दिनेश सतीजा 188
184. श्रीमती शैली सतीजा 188
185. श्री रूपचन्द अरोड़ा 198
186. श्रीमती सन्तोष अरोड़ा 198
187. श्रीमती सावित्री महाजन 236
188. श्री सी. एल. मेहता 237
189. श्रीमती कौशल्या साहनी 241
190. श्री जे. डी. भारती 254
191. श्री सुरेन्द्रपाल भाटिया 272
192. श्रीमती शान्ति भाटिया 272
193. श्रीमती विमला भाटिया 272
194. श्री विक्रम देव 280
195. श्रीमती स्वर्णलता मदान 281
196. श्री राज चुग 282
197. श्री मदन लाल सरदाना 270
198. श्री हंसराज कालरा 324
199. श्री आशा नन्द सचदेव 335
200. श्री पी. आर. साहनी 337
201. श्री आर. के. मिड्ढा 348
202. श्री कृष्ण लाल चावला 351
203. श्री आर. के. शर्मा 379
204. श्री बनारसी दास 372
205. श्री भगीरथ प्रसाद वर्मा 380
206. श्रीमती कुमारी शारदा 380
207. श्री विनोद वर्मा 380
208. श्री एस. सिक्का 386
209. श्री ओ. पी. चान्दना 391
210. श्री विजय भाटिया 393
211. श्री एस. आर. भसीन 397
213. श्री आर. डी. मेहता 400
214. श्रीमती पुष्पा नासा 402

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

215.	श्री अनिल कुमार नासा	402
216.	श्री अतुल नासा	402
217.	श्री नवनीत नासा	402
218.	श्री राम कुमार नासा	402
219.	श्री कृष्णकान्त बत्रा	411
220.	श्री हरदेव वासुदेव	414
221.	श्री जगदीश चन्द्र	429
222.	श्री गौरव	60
223.	श्री कुणाल शर्मा	60
224.	श्रीमती कविता चोपड़ा	63
225.	श्री के. एस. शर्मा	66
226.	श्री सुशील मरवाह	67
227.	प्रतिभा	188
228.	कु. निश्चय नासा	402
229.	कु. संयम नासा	402
230.	श्री आर. के. खुराना	71

सी-3 फ्लैट्स एस.एफ.एस जनकपुरी

231.	श्री पी. एल. भाटिया	300 ए
232.	श्रीमती विद्यावती भाटिया	300 ए
233.	श्री लक्ष्मण दास सचदेवा	305 बी
234.	श्रीमती पद्मा	305
235.	श्रीमती सुदर्शन अरोड़ा	288 सी
236.	श्री कैलाश गुप्ता	434 ए

ब्लाक-C/C-3 जनकपुरी

237.	श्रीमती कृष्णा कुमारी	358
238.	श्री प्रकाश जी	358

सी-3 ए जनकपुरी

239.	श्री आर. सी. सूरी	8 ए
240.	श्रीमती सुदेश सूरी	8 ए
241.	श्री एल. आर. सलूजा	12 सी
242.	श्रीमती कुसुम रस्तोगी	27 बी
243.	श्री आर. एस. बजाज	27 सी
244.	श्री मोहन लाल	46 ए
245.	श्री कृष्ण लाल सब्भरवाल	53बी
246.	श्री डी. आर. चोपड़ा	55 ए
247.	श्रीमती सुधा चोपड़ा	54 सी
248.	श्रीमती कैलाशवती नैयर	56 बी
249.	श्री शिवदत्त महाजन	64 ए
250.	श्री विक्रम महाजन	64 ए
251.	श्री डी. आर. कोहली	65 ए
252.	श्री अश्वनी कुमार	67 सी
253.	श्री जे. एल. साहनी	67 सी
254.	श्री आनन्द कुमार शर्मा	73 ए
255.	श्री रमेश सच्चर	70 सी
256.	श्री रामरतन गोयल	75 ए
257.	श्री नरेशचन्द पुरी	79 सी
258.	श्रीमती सुदर्शना पुरी	79 सी
259.	श्री संजीव पुरी	79 सी
260.	श्रीमती अर्चना पुरी	79 सी
261.	श्री परमानन्द मित्तल	79 ए
262.	श्रीमती शकुन्तला मित्तल	79 ए
263.	श्री एस. एन. सेठी	92 ए
264.	श्री चरण सरीन	94 बी
265.	श्री प्रेमनाथ वर्मा	102 सी
266.	श्री अशोक मल्होत्रा	140 सी
267.	श्री गोपाल कृष्ण सेठी	142 ए
268.	श्री सत्य प्रकाश आर्य	13 ए
269.	श्रीमती निधि आर्य	13 ए
270.	कु. अंजू रानी	13 ए
271.	श्री सत्यपाल आर्य	13 ए
272.	श्री ध्रुव	71 सी
273.	श्रीमती रूपा ऋचा	71 सी
274.	श्री विक्रान्त	73 सी
275.	श्री गोपाल कृष्ण सचदेवा	86 ए
276.	श्री दीप्ति वोहरा	114 सी
277.	श्री प्रवीण भाटिया	11 ए
278.	श्रीमती सरिता	94 ए
279.	श्रीमती शकुन्तला बब्बर	24 सी
280.	श्री प्रेमनाथ वर्मा	102 सी

सी-4 ए जनकपुरी

281.	श्री रामदेव कवात्रा	3 सी
282.	श्री पी. एन. चोपड़ा	5 सी
283.	श्री हरदेव शर्मा	9 बी
284.	श्री एम. एल. चोपड़ा	13 ए
285.	श्री एम. एम. तलवाड़	18 बी
286.	श्री अमृत कृष्ण कुमार	23 बी
287.	श्री सतीश चन्द्र अस्थाना	24 बी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

288.	श्री सोहन लाल	25 बी
289.	श्री बी. के. सूद	27 ए
290.	श्रीमती आशा सूद	27 ए
291.	श्रीमती विमला कथूरिया	27 सी
292.	श्री मुकेश कुमार कथूरिया	27 सी
293.	श्री राकेश कथूरिया	27 सी
294.	श्री अजय कुमार	27 सी
295.	श्री एच. के. एल. गुलाटी	31 सी
296.	श्रीमती ज्ञान गुलाटी	31 सी
297.	श्रीमती कुसुम निझावन	36 सी
298.	श्रीमती सरोज भाटिया	37 ए
299.	श्री एस. के. पुंशी	37 सी
300.	श्री हुकमचन्द्र कामरा	46 सी
301.	श्री कमल बत्रा	51 बी
302.	श्री रामनाथ कथूरिया	28 बी

सी–4 बी जनकपुरी

303.	श्री देवराज	5
304.	श्री रजत खन्ना	17
305.	श्रीमती आशा चोपड़ा	18
306.	श्री सत्यमूर्ति पाराशर	32
307.	श्रीमती सरला रानी बत्रा	57
308.	श्रीमती फूल कुमारी	65
309.	श्री दीपांशु	74
310.	श्री दीनानाथ	73
311.	श्री पी. सी. भाटिया	107
312.	श्री अवतार कृष्ण	114
313.	श्री सन्तलाल रहेजा	147
314.	श्री विजय प्रकाश	148
315.	श्रीमती तारा देवी	150
316.	श्रीमती प्रेम मदान	162
317.	श्री एस. के. खुराना	205
318.	श्री अमरजीत सूद	210
319.	श्री जी. एस. हलवानी	215
320.	श्री स्वामी दास	216
321.	डॉ. आर. के. ठाकुर	218
322.	श्री एन. एन. ढींगरा	228
323.	श्री पवन दास बजाज	232
324.	माता रुक्मणी	277
325.	श्रीमती विधि सचदेव	33 बी
326.	श्री एम. सचदेव	33 बी

सी–4 सी जनकपुरी

327.	श्री राधेश्याम	4
328.	श्री जे. एन. सेठी	48
329.	श्री आर. पी. बुद्धिराजा	58
330.	श्री पी. एन. बहल	80
331.	श्रीमती सुधा बहल	80
332.	श्री एम. आर. साहनी	96
333.	श्रीमती सलोचना	97
334.	श्री सत्यभानु	101
335.	श्री इन्द्रजीत भारद्वाज	105
336.	श्री ललित नागपाल	117
337.	श्री जयकिशन नागपाल	117
338.	श्री व्यासदेव मेहता	138
339.	श्री योगेश मेहता	138
340.	श्रीमती स्वर्ण मेहता	138
341.	श्रीमती अनु मेहता	138
342.	श्री वेद प्रकाश	152
343.	श्री मनिन्द	153
344.	श्रीमती राजकुमारी	153
345.	श्रीमती ऊषा भाटिया	154
346.	श्री प्रकाश चन्द्र मनचन्दा	155
347.	श्री अशोक कुमार	156
348.	श्री भजन सिंह	171
349.	श्री मुकेश मलिक	178
350.	श्रीमती निर्मेश कान्ता	181
351.	श्रीमती माया देवी मलिक	178
352.	श्री मुकेश मलिक	178
353.	श्री पी. सी. मल्होत्रा	206
354.	श्री एम. सी. त्यागी	213
355.	श्री एस. एम. कपूर	223
356.	श्री एस. सी. मल्होत्रा	234
357.	श्री विनीत भाटिया	255
358.	श्री सत्यपाल जौहर	289
360.	श्री चमन लाल महाजन	354
361.	श्रीमती उमा सूद	370 सी
362.	श्री हकूमत राय	375
363.	श्रीमती सन्तोष महाजन	140
364.	श्री केवल कृष्ण महाजन	140
365.	श्री एच. एल. भसीन	175
366.	श्री अमरनाथ नरूला	347
367.	श्रीमती जानकी रमन	355

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

368. श्री जी. एन. पांडे 370 सी
369. श्री जे. पी. वार्षनी 9
370. श्रीमती सत्या मेहता 371

सी-4 डी जनकपुरी

371. श्रीमती नीलम खुराना 1 बी
372. श्री वी. एम. सेठी 3 ए
373. श्री घनश्याम दास 3 बी
374. श्री संजय वशिष्ठ 8 बी
375. श्रीमती सुदर्शना साहनी 24 ए
376. श्रीमती उर्मिला 24 बी
377. श्रीमती चन्द्रकान्ता सिसोदिया 24 सी
378. श्रीमती ए. सी. बग्गा 32ए
379. श्रीमती वी. एम. भारद्वाज 32 सी
380. श्रीमती पुष्पा भारद्वाज 32 सी
381. श्री बी. के. बंसल 33 सी
382. श्रीमती सन्तोष मेहतानी 36 ए
383. श्री डी. आर. हाण्डा 36 बी
384. श्रीमती कमला रानी 37 बी
385. श्री सी. एम. चड्ढा 48 बी
386. श्रीमती प्रेमलता 48 बी
387. श्री प्रमोद मनचन्दा 53 बी
388. श्री एस. सी. भाटिया 61 सी
389. श्री सत्यदेव हाण्डा 62 बी
390. श्री प्रभुदयाल माहेश्वरी 73 बी
391. श्रीमती विमल माहेश्वरी 73 बी
392. श्रीमती सूर्या कुमारी 75 ए
393. श्री रामलाल धरेजा 75 सी
394. श्री सी. एस. कौशिक 81 ए
395. श्री कैलाश गर्वा 36 सी
396. श्री पंकज 75
397. श्री मानस कौशिक 81 ए
398. श्री पृथ्वीराज महापात्र 81 बी
399. श्रीमती शारदा देवी 81 ए
400. श्रीमती ऊषा देवी 81 ए
401. श्री रजत कौशिक 81 ए

सी-4 ई जनकपुरी

402. श्री आर. एन. सेठी 64
403. श्री के. सी. साही 11
404. श्री जोगिन्द्र लाल 22
405. श्रीमती उर्मिला चौहान 24
406. श्री प्रेम प्रकाश 30
407. श्री चन्द्रभान मल्होत्रा 31
408. श्रीमती सन्तोष मल्होत्रा 31
409. श्री तिलकराज वर्मा 32
410. श्रीमती तृप्ति वर्मा 32
411. श्री धर्मवीर जौहर 39
412. श्री सी. पी. शर्मा 43
413. श्री के. एल. जौहर 48
414. श्री विजय हंस 54
415. श्री अनिल कुमार 57
416. श्री बलदेव राज 66
417. श्रीमती प्रेम कुमारी 81
418. श्री प्रेम प्रकाश भाटिया 94
419. श्री एस. पी. नारंग 97
420. श्री जी. सी. नागपाल 99
421. श्री सतीश मलिक 103
422. श्रीमती पुष्पा मेहता 280
423. राजकुमारी 76
424. नेशनल प्रोविजन स्टोर 76
425. रवि मैडिकल स्टोर 76
426. अनिल कपूर कपूर टैंट 76
427. श्री सूर्यवंशी चावला 76
428. श्री वी. एल. हरनेजा 76
429. डॉ. विद्या सागर भाटिया 76
430. मनोरमा 119
431. श्रीमती माहेश्वरी 81

सी-4 एफ जनकपुरी

432. श्री विद्यासागर भाटिया 30
433. श्री रमेश जी 32
434. सुनीता रानी चावला 53
435. श्री चन्द्र आनन्द 59
436. श्री प्रवीन आनन्द 59
437. श्री गौरव 81
438. श्री सत्यपाल 92
439. श्री जीवन दास वधवा 113
440. श्रीमती सन्तोष वधवा 113

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

441.	श्री आई. पी. खेरा	133
442.	श्री सन्तोष नागपाल	134
443.	श्री विष्णुदत्त शर्मा	168
444.	श्री ओ. पी. गिरधर	169
445.	श्री अनिल सहगल	174
446.	श्री आर. सी. दुग्गल	208
447.	श्री बनारसी दास	214
448.	वेद प्रकाश ओबराय	236
449.	श्रीमती शशिकान्ता	236
450.	श्री एम. पी. साहनी	239
451.	श्री महेन्द्र कुमार गुप्ता	242
452.	डॉ. सुभाष चन्द्र खन्ना	245
453.	डॉ. कमलेश खन्ना	245
454.	श्रीमती इन्द्र रहेजा	260
455.	डॉ. अनिल चोपड़ा	269
456.	श्री विद्यासागर भाटिया	मार्केट

सी-4 जी जनकपुरी

457.	श्रीमती जेतवानी	19 बी
458.	श्री मत्यदेव	43 बी
459.	श्रीमती आशा रानी	47 ए
460.	श्री देशराज भगत	77 बी
461.	श्री हरवंश लाल पुरी	89 बी
462.	श्रीमती शशि अरोड़ा	136 ए

सी-4 एच जनकपुरी

463.	श्री एन. एन. भाटिया	60
464.	श्री दिलबाग आहूजा	61
465.	श्री एम. एल. बुद्धिराजा	79
466.	श्री महेन्द्र कुमार	94
467.	श्रीमती सविता कोहली	158 सी
468.	श्री जयपाल गर्ग	165 सी

सी-5 ए जनकपुरी

469.	श्रीमती सन्तोष डंग	15
470.	श्री सत्यपाल डंग	15
471.	श्रीमती शोभा डंग	15
472.	श्री वी. पी. कत्याल	32
473.	श्री एम. पी. कत्याल	32
474.	श्री डी. के. वेद	36
475.	श्रीमती पुष्पा वेद	36
476.	श्री हुकुमचन्द ढींगरा	38
477.	श्री के. एस. गुप्ता	50
478.	श्री एम. एम. हसीजा	97
479.	श्री नारायण दास	117
480.	श्री ज्ञानचन्द ग्रोवर	125
481.	श्री कमलनै बत्रा	126
482.	श्री डी. डी. शर्मा	181
483.	श्री आदर्श सरीन	149
484.	श्री विपिन सरीन	149
485.	श्रीमती मोनिका सरीन	149
486.	श्री एस. के. शर्मा	183
487.	श्री प्रताप सिंह गुप्त	209
488.	श्री प्रवीन कुमार गुप्त	209
489.	श्रीमती शान्ति गुप्त	209
490.	आयुष्मति प्रज्ञा	209
491.	आयुष्मान प्रखर	209
492.	श्री एम. के. अग्रवाल	210
493.	श्री एस. पी. मेहता	212
494.	श्री रामचन्द्र अरोड़ा	216
495.	श्रीमती उषा रानी अरोड़ा	216
496.	श्री प्रकाश गुप्ता	209
497.	श्री धर्मपाल सूद	227
498.	श्रीमती शशि सूद	227
499.	श्री जे. एस. नैयर	229
500.	डॉ. एस. एस बत्रा	234
501.	श्री वी. डी. भारद्वाज	256
502.	श्री राममोहन सूरी	277
503.	श्री आई. डी. ओझा	286
504.	श्रीमती वीना भाटिया	298 सी
505.	श्री फतेह चन्द सेठी	305 सी
506.	श्रीमती सुनीता बाली	322 सी
507.	श्री डी. डी. शर्मा	181
508.	श्रीमती सावित्र घई	318 बी
509.	तुषार कपूर	40 सी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सी-5 डी जनकपुरी

510.	श्री मोहन लाल	20 बी
511.	श्री एस. पी. शर्मा	56 बी
512.	श्रीमती जानकी देवी	74 सी
513.	श्री पी. एल. भण्डारी	100 बी
514.	श्रीमती रामप्यारी भण्डारी	100 बी
515.	श्री राजवीर भाटिया	101 बी
516.	श्री मंजीव भाटिया	101 बी
517.	श्री ओ. पी. गुलाटी	103 ए
518.	श्रीमती रेणु आनन्द	105 ए
519.	श्री कुलदीप सूद	107 बी
520.	श्रीमती शकुन्तला गुलाटी	103 ए
521.	श्री तरुण कुमार	103 ए

सी-6 ए जनकपुरी

522.	श्री आर. के. खन्ना	181
523.	श्री वी. के. गुलाटी	183
524.	श्री रामप्रसाद महाजन	190
525.	श्रीमती रविकान्ता	195
526.	श्री कैलाश	196
527.	श्री राजन खुराना	198
528.	श्री के. मी. आनन्द	26
529.	श्री तुषार कपूर	151
530.	श्रीमती विद्या देवी	82

सी-6 बी जनकपुरी

531.	श्रीमती गीता गोयल	25
532.	श्री सुशील कुमार	25
533.	श्री जतवानी	28
534.	श्री पी. एन. गुप्ता	31
535.	श्री रामपाल सिंह	38
536.	श्री मी. पी. मेहता	40
537.	श्री जगदीश चन्द नागिया	48
538.	श्री वी. आर. कपूर	50
539.	श्री मनोहर लाल	53
540.	श्रीमती धनवन्ती	53
541.	श्रीमती मत्या मक्कड़	71
542.	श्रीमती संयोगिता देवी	79
543.	श्री आर. के. गौरी	125
544.	श्री सूरजभान	129
545.	श्री इन्द्रजीत दुग्गल	130
546.	श्री राजीव दुग्गल	130
547.	श्रीमती उमा दुग्गल	130
548.	श्री रामनारायण चड्ढा	131
549.	श्री जवाहर लाल टुटेजा	135
550.	श्री हरिनारायण बहल	138
551.	श्री ए. एन. बग्गा	141
552.	श्री अरुण सूद	172
553.	श्री श्याम अग्रवाल	177

विविध

554.	डॉ. शिवकुमार शास्त्री	189 जे, विकासपुरी
555.	श्री राज तिलक नैयर	बी-1/37 स्वागत वैकट
556.	श्री सन्त कुमार तोमर	आर.जेड.एफ-4 डाबड़ी एक्स.
557.	श्री राम खिलाड़ी	748/271 हंस पार्क
558.	श्रीमती दमयन्ती तनेजा	आर.जेड-62, वैशाली
559.	श्रीमती ऊषा वंसल	सी-62 सीतापुरी पी.आई.
560.	श्री हरी राम	तमिल कालोनी
561.	श्री रमेशचन्द्र	बी-62, जीवन पार्क
562.	श्री अनिल तनेजा	1/106, सुभाष नगर
563.	श्रीमती सुषमा तनेजा	"
564.	श्री घनश्याम शर्मा	डी-67ए, दशरथपुरी
565.	श्रीमती अंगूरी देवी शर्मा	"
566.	श्री जे. मी. भाटिया	के-31, उत्तम नगर
567.	श्री मतीश कालड़ा	17ए मिंडीकेट एन्क्लेव
568.	श्री श्याम लाल वर्मा	जे-12/214, वैस्ट सागरपुर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक सांस्कृतिक एवं सामाजिक आर्य संस्था 'संधान' : एक परिचय

सभी प्रबुद्ध भारतीय अनुभव करते हैं कि देश की वर्तमान शिक्षा बच्चों को भारतीय संस्कृति और वैदिक विचारधारा से वंचित रख रही है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पचास वर्षों में हमारी दो पीढ़ियां पूर्णतया संस्कारहीन शिक्षा पाकर बड़ी हुई हैं। इसका दुष्परिणाम राष्ट्र के सभी क्षेत्रों में दिखाई दे रहा है। 'संधान' द्वारा इस कमी को पूरा करने का प्रयास किया जा रहा है। इस संस्था का उद्देश्य भारतीय समाज को भारतीय संस्कृति और वैदिक साहित्य से परिचित कराना है।

संधान के कार्य

१. संस्कृत पत्राचार पाठ्यक्रम : संधान ने पत्राचार द्वारा संस्कृत सिखाने के लिए एक संस्कृत का प्रारम्भिक पाठ्यक्रम तैयार किया है। इससे बिना अध्यापक की सहायता से कोई भी बाल, युवा या प्रौढ़ व्यक्ति घर बैठे संस्कृत सीख सकता है। यह पाठ्यक्रम हिन्दी, अंग्रेजी और जापानी भाषाओं के माध्यमों में उपलब्ध हैं। पाठों के साथ उत्तर पत्र होते हैं जिन्हें छात्र संधान को भेजकर योग्य अध्यापकों का मार्गदर्शन प्राप्त कर सकता है। छात्र इसे अपने प्रयास और रुचि के अनुसार कम या अधिक समय में समाप्त कर सकता है। संस्कृत के छात्रों के मार्गदर्शन के लिए आर्य समाज जनकपुरी और आर्य समाज साकेत को केन्द्र के रूप में चुना गया है जहां इस प्रयोजन के लिए आवश्यकतानुसार साप्ताहिक कक्षाएं भी चलाई जाती रही हैं। अब तक इस पाठ्यक्रम के द्वारा ५०० से अधिक छात्र संस्कृत का ज्ञान प्राप्त कर चुके हैं।

२. संस्कृत-अंग्रेजी कोष : छात्रों की सुविधा के लिए संस्कृत-अंग्रेजी कोष तैयार हो चुका है। उसे शीघ्र प्रकाशित करने की योजना है। यह कोष लगभग ८००० शब्दों का है। इसके साथ ही संस्कृत-हिन्दी कोष तैयार किया जा रहा है। वह भी एक वर्ष में तैयार हो जाएगा।

३. गीतासार—भारतीय संस्कृति की प्रतिनिधिभूत गीता के सौ श्लोकों का एक संग्रह गीता-सार के नाम से प्रकाशित किया गया है। इन श्लोकों का चयन गीता के प्रमुख विषयों में से किया गया है ताकि गीता की मुख्य बातें पाठकों को स्पष्ट हो सकें। श्लोकों को समझने के लिए उनके साथ एक उपयोगी भूमिका, श्लोकों का सरल अर्थ, उन पर संक्षिप्त टिप्पणी और संस्कृत-हिन्दी शब्दार्थ भी दिया गया है। गीता-सार के प्रथम और द्वितीय संस्करण का अभूतपूर्व स्वागत हुआ। शीघ्र ही इसका तीसरा संस्करण भी प्रकाशित होने जा रहा है। इसके साथ ही गीता-सार का जापानी भाषा में भी अनुवाद हो चुका है और उसका भी तीसरा संस्करण प्रकाशनाधीन है। गीता-सार का अंग्रेजी अनुवाद भी प्रकाशन के लिए तैयार है। अनेक शिक्षा संस्थाओं ने अपने छात्रों को और कई कम्पनियों ने अपने कर्मचारियों को गीता-सार की प्रतियां वितरित की हैं।

४. वेदसार—गीता-सार की तरह ही वेदसार भी तैयार किया जा रहा है इसके लिए वेदों में से जनसामान्य की रुचि के तथा वेदों की मूल भावना को समझाने के लिए ५०० मन्त्रों का चयन किया गया है। इसे क्रमिक रूप से प्रकाशित करने की योजना है। ३२ पृष्ठों का एक खंड प्रकाशित हो चुका है। इनसे हमें सुधी पाठकों के जो सुझाव और प्रतिक्रियाएं प्राप्त होंगी उनको ध्यान में रखते हुए अन्तिम पूर्ण ग्रंथ में तदनुसार आवश्यक संशोधन भी किए जाएंगे।

५. इसके अतिरिक्त उपनिषद्-सार, दर्शन-सार आदि तैयार करने की भी योजना है।

हमें विश्वास है कि भारतीय संस्कृति और संस्कृत भाषा के प्रचार एवं प्रसार में सभी आर्यजनों एवं भारतीय संस्कृति के प्रेमियों की अवश्य रुचि होगी। इस विषय में अधिक जानकारी के लिए आप डॉ. भारत भूषण पुरंग (विद्यालंकार), संयुक्त निदेशक एवं डॉ. अनिल विद्यालंकार, निदेशक, संधान, जे-५६, साकेत, नई दिल्ली-११००१७, दूरभाष ६८६३१२६ पर सम्पर्क कर सकते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सुरेश गर्ग
सतीश गर्ग

भारत स्टील कम्पनी

विक्रेता :

कामधेनु सरिया ● पत्ती ● ऐंगल-चैनल इत्यादि

सी-४, संजय मार्केट, मंगोलपुर कलाँ
निकट मारुति सर्विस स्टेशन, रोहिणी, दिल्ली-११००८५

दुकान : ७१७१३४०, ७२७८५३२
निवास : ७१३९९१६, ७४६१५८०

दुर्गा स्टील कम्पनी

विक्रेता :

कामधेनु सरिया ✯ गार्डर ✯ टी आयरन ✯ चैनल
✯ ऐंगल ✯ पत्ती ✯ चद्दर इत्यादि

ए-४२, बुद्ध विहार, मेन कंझावला रोड, दिल्ली-११००४१

दुकान : ७२७५८४३, ७१६५८५५
निवास : ५४६९७१६, ७२३३५९६

सियाराम गुप्ता
संजय गर्ग

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

With Best
Compliments From

Malhotra Steel Tubes

Manufacturers of

BRIGHT BAR

STEEL TUBES, ROUND, SQUARE, RECTANGULAR
ENGINEER & FABRICATORS

C-145B, Maya Puri, Phase-II
Rewari Line, New Delhi-110064

© : 5403066, 5404905

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

With Best
Compliments From

KHANNA NURSING HOME

C4F/245, Janak Puri, New Delhi-110058
Phone : 5507947, 5551773

EMERGENCY SERVICES 24 HOURS

Nursing Home Authorised For :

AIR INDIA ✲ RESERVE BANK OF INDIA
✲ SHIELD CARD HOLDERS ✲ INDIAN BANK

Authorised Surgical Specialist :

BHEL ✲ STC ✲ NHPC ✲ AIR INDIA ✲ DDA ✲ MARUTI UDYOG
✲ NTPC ✲ HIL ✲ MMTC✲ INDIAN AIR LINES ✲BEL
✲ BRITISH COUNCIL

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

With Best

Compliments From

★★★

AKASHDEEP PAPERS PRIVATE LIMITED

AUTHORISED WHOLESALERS : STAR PAPER MILLS LTD.

Regd. Off. : 2518-A, Churiwalan, Chawri Bazar
Delhi-110006

Off. : 3262555, 3265255
Resi. : 5552540, 5596343
Fax : 011-3281855

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

With Best

Compliments

From

Dr. Praveen Verma

B. D. S., F. A. D. I.

Dr. (Mrs.) Pravina Verma

B. D. S. (Bom)

DENTAL CARE CLINIC

ONE STOP FOR COMPLETE DENTAL CARE

C-3/57, Janak Puri

New Delhi-110058

Tel. : 5553020, 5623130

Timings : 9 a. m. to 12 noon, 5.30 p.m. to 8 p.m.

(Saturday Evening and Sunday Closed)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

OM

With Best Compliments From

S. B. Mathur

B. Com. L.L.B., MBA, ACA, FCS

CORPORATE CONSULTANTS

Shop No 28 C Block Shopping Center
Near Janak Cinema Pankha Road
New Delhi-110058

By Appointment

© 5551974

"I Treat God Cures"

Dr. (Mrs.) Yash Mathur

B.M.S. Homoeopath

Women & Child Specialist

Opening Soon

YASH CLINIC

'C' Block Shopping Center
Shop No. 28 (Near Janak Cinema)
Pankha Road, Janakpuri
New Delhi-110058

By Appointment : 5551974

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

SILCON

Bi-Wheeler Spares

GROVER AUTO WORKS

Manufacturers & Dealers of Spare Parts

ENFIELD BULLET, SILVER PLUS, EXPLORER & ALL 100 CC BIKES SPARES

52/1807, Hari Singh Nalwa Street,
Karol Bagh, New Delhi-110005

Ph. : Shop : 5734466 Resi. : 5504466

With Best Compliments From

VINOD SHARMA

Managing Director

Avion Express

TRAVELS & TOURS PRIVAE LIMITED

F-46, Bhagat Singh Market, New Delhi-110001
Ph. : 3746539, 3746704, 3347814
Fax : (91) 11-3746704

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

With Best Compliments From

Oberoi Dental Clinic

C2A/15/31, Janak Puri
New Delhi-110058
Timings : 9 AM to 1 PM, 5.30 to 8.00 P.M.

Dr. Jatinder S. Oberoi
B. D. S. (M.A.M.C) Delhi
Regd. No. A-589
Formerly At :
LNJP (Irwin) Hospital

Dr. (Mrs.) Harpreet Oberoi
B. D. S. (M. A. M. C.) Delhi
Regd. No. A-1028
Formerly at :
LNJP (Irwin) Hospital

With Best Compliments From

Dr. Ashok Mahajan
B.D.S. (Pb.)
Oro-Dental Surgeon

Ashok Dental Hospital

33/3, Double Storey, Ashok Nagar, (Near Tilak Nagar Chowk)
New Delhi-110018 (Opp. R. No. 228 Bus Stand)
Resi. : C-2/147, Janak Puri, New Delhi-110058
✆ Clinic : 5408115, 5409957, 5406642
Res. : 5551995, 5514682

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

DONATE EYES

SM
(The Complete Medical Hall)

DONATE BLOOD

Standard Medico

(The Complete Medical Hall)

Shop No. 4, C4E Market, Janak Puri, New Delhi-110058
Tele : 5550404

On Panel : S. T. C., H.H.E.C. R. B. I
We honour all major Credit Cards

With Best Compliments From

RAHUL BATRA

BATRA PAINT

Rajeev Paint & Hardware Store

WZ-62F/13-14, Possangipur Market
Janakpuri, New Delhi-110058

(O) 5506325
(R) 5749612

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ॐ

For Best Incentive and Services in

- Fixed Deposits
- Odd lots of Shares
- Bond (Taxable & Non-Taxable)
- U.T.I, Mutual Funds
- Sale Purchase of Shares
- Prinary Issues
(Application Deposit facility available)
- RBI Bonds

GOEL INVESTMENTS

C-3-3/3, Janakpuri
New Delhi-110058
Tele : 5521862, 5529570

With Best Compliments From

★

SOM DUTT MAHAJAN

Prachi Stores

C4E Market, Janakpuri
New Delhi-110058

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत की शान नारी की शान

GUDIYA
BINDI

गुड़िया
बिन्दी

Shadi Khampur, Patel Nagar Ph. : 5707060, 5701362

With Best Compliments From

GET-WELL MEDICOS

(Retail & Wholesale)

Shop No 4, C4D Market
Janakpuri, New Delhi-110058
Tele Nos. : 5599717, 5599818 (O) 5504919 (R)

We Accept Diner/Master/Visa Cards.
On Panel : Indian Air Lines

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

With Best Compliments From

PNA AGENCIES

PAPER-BOARD MERCHANTS

36, Bhagwati Market, 3795 Gali Lohe Wali
Chawri Bazar, Delhi-110006
Ph. : 2914132 Fax : 011-2940053

I TREAT HE CURES

Regd. No. A-156
Delhi Dental Council

Tel. Clinic : 5552978
5536378

Dr. Capt. S. N. Gulati
BDS (Pb.) MDS (Bom) F.A.D.I. (U.S.A.) F.I.C.D.1 (USA)
ORO-DENTAL SURGEON
Ex-Dental Officer,
Army Dental Corps, C.A.S. Grade-I, MCD, Delhi
APPROVED DENTAL OFFICER :
IAAI, STC, MMTC, BHEL, FCI, INDIAN AIRLINES, ONGC, BTPS, STATE BANK OF INDIA, HHEC, HIL, CCIC, PEC, NHPC, HMT, MARUTI UDYOG, AIR INDIA, NFL

Dr. Sumit Gulati
B.D.S (MAMC) M.D.S. (AIIMS)
Consultant Orthodontist

Dr. (Mrs.) Neha Gulati
B.D.S. (Pune) M. D. S. (DVG)
CONSULTANT ENDODONTIST
SPECIALIST IN ROOT CANAL
TREATMENT & ESTHETIC DENTISTRY

CLINIC : C-2-B/78-B, Janak Puri, New Delhi-110058
TIMINGS : 9 A.M. to 12 Noon, 5 P.M. to 8 P.M.
CLOSED DAYS : Saturday-Evening Sunday-Full
RESIDENCE : C4F/244, Janak Puri, New Delhi-110058 5552978, 5596244, 5610244

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म्

With Best Compliments From

SPECIALITY FOODS
CATERING SERVICES

A1/362, Janakpuri, New Delhi-110058
Phones : 5612054, 5594215

THE PEOPLE WHO SUPPLY YOU THE FIVE STAR FOOD : AT YOUR HOME.

MAKE YOUR SPECIAL MOMENTS, LIKE MARRIAGE, BIRTHDAY, KITTY PARTIES, BOARD/CONFERENCE MEETINGS, MEMORABLE THROUGH OUR OUTDOOR SERVICES.

WE USE BONECHINA CROCKERY AND COPPER HANDIS FOR SERVICE.

आर्यसमाज पंखारोड, सी-ब्लॉक, जनकपुरी

की रजत जयन्ती पर हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ

श्री धन्वन्तरि आयुर्वेदिक फार्मेसी

२७७, ईस्ट मोहननगर, अमृतसर (पंजाब) १४३००६

वर्तमान वैज्ञानिक युग में आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति तथा आयुर्वेदिक औषधियों की उपयोगिता, श्रेष्ठता, गुणवत्ता एवं लोकप्रियता को स्थापित करना ही इस संस्था का परम लक्ष्य है। औषधियों की गुणवत्ता एवं प्रभावकारिता के कारण ही यह संस्था गत ४८ वर्षों से उत्तर भारत में अपना एक प्रमुख स्थान बना चुकी है। भारत सरकार एवं उत्तर भारत की सभी प्रान्तीय सरकारों ने इस फार्मेसी से आयुर्वेदिक औषधियों के खरीदने हेतु मान्यता प्रदान की है।

इस फार्मेसी की कतिपय प्रमुख पेटेंट औषधियाँ जो विभिन्न रोगों पर निरापद और प्रभावकारी सिद्ध हुई हैं :-

सन्धिवात्, कटिशूल (Arthritis, Back-ache)	रीमो टैबलैट 2×3	रीमो आइन्टमेंट External use
उदर विकार (अजीर्ण, अम्लपित्त, पेट गैस)	एसिडान टैबलेट 2×3	
श्वास/दमा	श्वासी कैपशूल/शर्बत	
सर्दी-जुकाम	कफनिल/कासहर शर्बत	

दिल्ली में प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें :-

वैद्य महेन्द्रपाल सिंह आर्य (पूर्व चिकित्सा अधीक्षक)
केन्द्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान चिकित्सालय, पंजाबी बाग, नई दिल्ली एवं भुवनेश्वर (उड़ीसा)
फ्लैट नं० २३३, सैक्टर ३, पॉकेट १,२ द्वारिका, नई दिल्ली-११००४५ (नजदीक पैट्रोल पम्प)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

With Best Compliments From

Suresh Kumar

Samrat Offset Works

A QUALITY OFFSET PRINTERS

B-62/5, Naraina Industrial Area
Phase-II, New Delhi-110028

Phone : 5700903

With Best Compliments From

NEW KWALITY FURNISHERS

Interior Decorator, Govt. Suppliers

All Type of Wooden & Steel Furniture

E-1/A, Gurunanak Pura, Jail Road,
New Delhi-110058
(O) 5594897
(R) 5535920

With Best Compliments From

RAJESH ARYA

Arya Vastra Bhandar

Authorised Dealers

J.C.T. FABRICS, RAYMOND, S. KUMARS

PAGRI, SUIT, DUPTTA, SAREES & DRESS MATERIAL

WZ-32, Uggar Sain Market, Ashok Nagar
New Delhi-110018
(S) 5407733
(R) 5146611

With Best Compliments From

Contract For :
Domestic/international Air Ticket

LAKSHMI TRAVELS

DELUXE BUSES, TATA SUMO, MATADOR & VANS
Sale & Purchase of Maruti Car, Van, Scoooter

C-5, Bhajanpura, Main Wazirabad Road. Delhi-110053

Ph. : 2186755, 2187755, 2170755
Fax : 011-2185755

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

With Best Compliments From

V. P. Solanki

SOLANKI MOTORS

A-1/2A Chanakya Palace
C-1, Pankha Road
Janakpuri, New Delhi-58
Phone : 5556264

MRF Tyres Exclusive Dealer

COMPUTERISED WHEEL BALANCING BY
CORGHI "ITALY"

With Best Compliments From

ANIL PUSTAK BHANDAR

C4E/31, Pocket-8, Janakpuri
New Delhi-110058

Deals in :
BOOKS, STATIONERY, SPORTS, GAMES,
GIFTS AND PHOTOSTAT

WE SUPPLY BOOKS AND STATIONERY
IN SCHOOLS AND OFFICES AT
REASONABLE RATES.

PH. : 5504519

शुभकामनाओं सहित

▼▼▼

रवीन्द्र कुमार

रामकृष्ण प्रेस

ए-२६, नारायणा विहार
नई दिल्ली

With Best Compliments From

Sunil Jindal

HYAT TRADERS

KD-17, Pitam Pura, Delhi-34
Phone : 7415292

Other Concern :
JMS Textile Pvt. Ltd.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

With Best Compliments From

Dr. Devender Gaba
M.D. (PAED.)

HOLY CHILD CLINIC
AND
IMMUNIZATION
CENTRE

C-2C-193, Pocket-12
Janak Puri, New Delhi-110058
Phones : 5509919, 5615646

शुभकामनाओं सहित

भारत स्टोर

सीर‌ए/सी२बी मार्केट

भारत स्टोर आपका जाना माना स्टोर है जो लगभग २६ साल से सी२ए/सी२बी मार्केट में शुद्ध मसाले, दालों व उत्तम घरेलू सामान के लिए जाना जाता है।

सेवा का अवसर दें।

राजगोपाल

॥ ओ३म् ॥

Ram Krishana Press
QUALITY OFFSET PRINTERS

A-26, Naraina Industrial Area
Phase-II, New Delhi-110028

✆ (O) 5701244
(R) 5491236

शुभकामनाओं सहित

आर्य ऑफसैट प्रैस

३०८/३, शहजादा बाग
दयाबस्ती, दिल्ली
दूरभाष : 5102488

Specialization
Magazines, New Papers, Books etc

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

NQA QSR
ISO 9000
CERTIFIED QUALITY
ACCREDITED BY
RvC

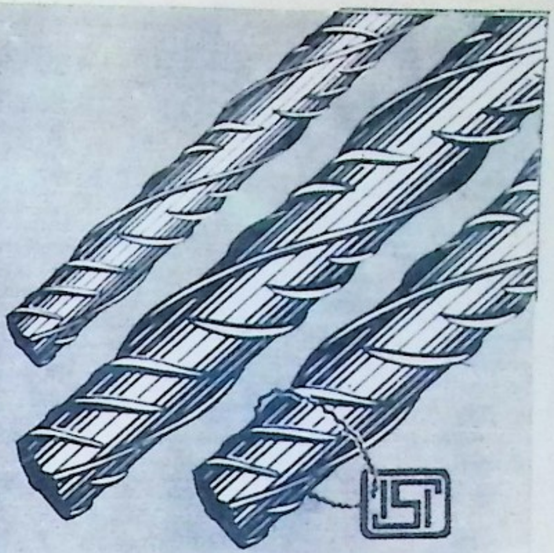

KAMDHENU
ISPAT

KAMDHENU ISPAT LIMITED

(Director : Pradeep Aggrawal)

Bhiwadi : A 1111 RICCO Indl Area, Phase-III, Bhiwadi (Raj.) Ph. :21205, 21394

Delhi : 633 Sector 8, Pocket C-8, Rohini, Delhi. Ph. :7278348, 7275984

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Steelbird
Bieffe

BR15

STEELBIRD HI-TECH (INDIA) LTD.

A-50, Phase-1, Mayapuri, New Delhi-110064, Ph. : 5134854, 5143971, 7536000, 7533391, 7523953 Fax : 5140523, 7775345, 3552598, E-mail Stilbird@nda.vsnl.net.in

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi